Document for Feedback

दो वर्षीय

डिप्लोमा इन एलिमेण्ट्री एजुकेशन (डी.एल.एड.)

फेस–टू–फेस

पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना, बिहार

डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजुकेशन (फेस–टू–फेस) कार्यक्रम
Diploma in Elementary Education (Face to Face) Programme

पाठ्यचर्या विकास

अध्यापक शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना, (बिहार)

© राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), बिहार

प्रकाशन वर्ष	
प्रतियाँ	

विषय सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
●	प्रारम्भिक विद्यालय के लिए शिक्षक शिक्षा का संदर्भ	01—10
●	पाठ्यचर्या की रूपरेखा व दिशा निर्देश	11—12
	प्रथम वर्ष	**13—65**
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	14—17
F-2	बचपन और बाल विकास	18—21
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	22—25
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	26—30
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	31—33
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	34—36
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र—1 (प्राथमिक स्तर)	37—40
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र—1 (प्राथमिक स्तर)	41—44
F-9	Proficiency in English	45—48
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	49—53
F-11	कला समेकित शिक्षा	54—57
F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	58—61
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम—1 (4 सप्ताह)	62—65
	द्वितीय वर्ष	**66—138**
S-1	समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा	67—70
S-2	संज्ञान, सीखना और बाल विकास	71—74
S-3	कार्य और शिक्षा	75—77
S-4	स्वयं की समझ	78—80
S-5	विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा	81—85
S-6	Pedagogy of English (Primary Level)	86—89
S-7	गणित का शिक्षणशास्त्र—2 (प्राथमिक स्तर)	90—93
S-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र—2 (प्राथमिक स्तर)	94—97
S-9	उच्च—प्राथमिक स्तर (कक्षा 6—8) के लिए इनमें से किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्रः A.गणित B.विज्ञान C.सामाजिक विज्ञान D. English E.हिन्दी F.संस्कृत G.मैथिली H.बांगला I.उर्दू	98—133
SEP-2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम—2 (इंटर्नशिप) 16 सप्ताह	134—138
●	विषयों के अध्ययन हेतु सन्दर्भ सूची	139—145
●	पाठ्यचर्या—पाठ्यक्रम विकास समूह	

प्रारंभिक विद्यालय के लिए अध्यापक शिक्षा का संदर्भ

बिहार महज़ एक राजनैतिक इकाई नहीं बल्कि सदियों से इसकी अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक और शिक्षायी पहचान भी रही है। तमाम उपेक्षाओं और शैक्षिक गतिरोधों के बावजूद अपने राज्य में पढ़ने–लिखने को लेकर एक अभूतपूर्व उत्साह मौजूद रहा है। इस राज्य के लिए पढ़ना–पढ़ाना कभी भी सिर्फ़ एक बाज़ारवादी जरूरत नहीं रही, बल्कि पढ़ना एक ऐसा सांस्कृतिक कर्म रहा है जिसके जरिये गाँव के 'दक्षिण टोले' के बच्चों से लेकर प्रांत के मुख्यमंत्री तक 'सामाजिक बदलाव' का सपना रचते हैं। बावजूद इसके, पिछले दो दशक इस राज्य के लिए एक विशेष संक्रमण के दौर रहे। एक के बाद एक शैक्षिक संस्थाएँ विभिन्न गतिरोधों और अकादमिक जड़त्व में फंसती गयीं, जिसका असर प्रारंभिक शिक्षा पर भी दिखा। प्रभावतः, 1994 के बाद से प्रारंभिक शिक्षकों के लिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण संचालित नहीं हो सका। इस बीच न सिर्फ़ सदी बदली बल्कि 'सीखने–सिखाने' के शिक्षणशास्त्र में भी ख़ासा बदलाव आया।

बिहार विशेष के संदर्भ में बात करें तो कुछ घटनाओं का शिक्षा की प्रक्रिया पर स्पष्ट असर देखने को मिलता है। 1990 के बाद प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए कई प्रयास किये गयें, जिनमें 'डी.पी. ई.पी.' और 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसे बड़े कार्यक्रम भी शामिल रहे। ज़ाहिर है इससे स्कूली शिक्षा के लिए जागरूकता में खासी बढ़ोतरी होनी थी और हुई भी। इसी बीच सीखने–सिखाने के तौर तरीकों को लेकर जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए, उनकी छवि हम मुख्यतः तीन दस्तावेज़ों के रूप में देखते हैं– पहला, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.), दिल्ली द्वारा तैयार *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005* (एन.सी.एफ.–2005); दूसरा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), पटना द्वारा तैयार *बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2008* (बी.सी.एफ.–2008); और तीसरा, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), दिल्ली द्वारा तैयार *अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2009* (एन.सी.एफ.टी.ई.–2009)। एक ओर एन.सी.एफ.–2005 ने बच्चों को केन्द्र में रखकर एक ऐसी शिक्षायी प्रक्रिया की बात की जिसमें बच्चे स्वयं ज्ञान का सृजन करें, वहीं दूसरी ओर बी.सी.एफ.–2008 ने बिहार के स्थानीय बोध व ज्ञान को स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया में शामिल करने पर बल दिया। एन.सी.एफ.टी.ई.–2009 ने बाल–केन्द्रित व संदर्भजन्य शिक्षा, दोनों पर विशेष बल देते हुए एक नये शिक्षक की रूपरेखा प्रस्तुत की।

जब शिक्षायी प्रक्रियायें अभूतपूर्व उथल–पुथल से गुज़र रही थीं तब बिहार सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए समान विद्यालय प्रणाली आयोग गठित किया। जून 2007 में आयोग ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए सभी बच्चों के लिए एक जैसी गुणवत्ता वाली समावेशी शिक्षा की बात की। उसके बाद राज्य सरकार ने सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा देने की अपनी प्रतिबद्धता कई बार दोहराई।

21वीं सदी की शुरुआत में 'शिक्षा की गुणवत्ता' का सवाल कई स्तर पर उभरा। गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए बड़ी तादाद में प्रशिक्षित व योग्य शिक्षकों की ज़रूरत महसूस की गई। बिहार में प्रारंभिक शिक्षा के लिए अध्यापक शिक्षा एवं शिक्षक–प्रशिक्षण की रूपरेखा का निर्माण उपरोक्त ज़रूरतों को पूरा करने का अनिवार्य कदम है। इस पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम को बनाते समय यह बात हमारे ध्यान में रही कि बिहार में इस समय जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (डायट) लम्बे समय से उपेक्षित रहने के कारण अति निष्क्रिय रूप में हैं। ऐसी स्थिति महज़ सुधार की नहीं बल्कि नये तरीक़े से सभी कामों को पूरा करने की मांग करती है।

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के साथ–साथ अध्यापक शिक्षा का मसला भी स्वयं में कई तरह से उपेक्षित रहा है। अक्सर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को महज एक कागजी खानापूर्ति की तरह देखा गया। इस प्रवृत्ति ने अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम को उस बड़ी प्रक्रिया से काट दिया, जहाँ शिक्षक सामाजिक बदलाव में एक सांस्कृतिक कार्यकर्ता होता है। इस जड़त्व के विरुद्ध प्रस्तुत पाठ्यचर्या की रूपरेखा कई

चुनौतियों को समेटती है, मुख्य तौर से शिक्षक की सामाजिक, सांस्कृतिक और अकादमिक भूमिका में किस तरह के बदलाव अपेक्षित हैं तथा नयी शिक्षायी ज़रूरतों और सामाजिक–आर्थिक बदलाव से मुकाबला करने के लिए कैसे शिक्षक कैडर की ज़रूरत है।

साथ ही, इस पाठ्यचर्या को तैयार करते समय संवैधानिक ज़रूरतों के परिप्रेक्ष्य में नये शिक्षायी बदलावों का विशेष तौर से ध्यान रखा गया है। इस संदर्भ में दो मुख्य बाते निम्नलिखित हैं–

- 86वें संविधान संशोधन के माध्यम से, 6–14 आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया जाना।
- जून 2007 के समान विद्यालय प्रणाली आयोग की रिपोर्ट का आना और बिहार सरकार की यह घोषणा कि सरकार समान विद्यालय प्रणाली को लागू करने के लिए कटिबद्ध है।

अगर उपरोक्त दोनों बातों को एक साथ देखा जाये तो हम इस नतीजे तक पहुँचते हैं कि बिहार विशेष के संदर्भ में, 6–14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा संवैधानिक अनिवार्यता तो है ही, साथ ही उनको समान गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराये जाने का दायित्व भी सरकार पर है। यहाँ हमें इस पहलू पर भी ध्यान देना होगा कि शिक्षा की गुणवत्ता कैसी हो?

1993 में सर्वोच्च न्यायालय ने बच्चों के शिक्षायी अधिकार को उनके जीने के अधिकार के साथ जोड़ कर देखा और के.पी. उन्नीकृष्णन बनाम आन्ध्र राज्य न्यायालय ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद–45 (14 वर्ष के बच्चों की शिक्षा) को अनुच्छेद–21 (जीवन का अधिकार) के साथ जोड़कर पढ़े जाने की ज़रूरत है। यानी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो सभी बच्चों की गरिमामय ज़िन्दगी का साधन बनें। अध्यापक शिक्षा बच्चों को ऐसी शिक्षा दिलाने में मददगार हो जिससे कि बच्चों का वर्तमान व भविष्य गरिमामय बन सके।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा बच्चों के मौलिक अधिकार की इस स्थिति को बिहार विशेष के संदर्भ में ख़ासतौर से समझने की ज़रूरत है। यहाँ की आबादी में ख़ासी तादाद ऐसे वंचित तबक़ों की है जिन्हें वर्तमान शिक्षा और स्कूली प्रक्रिया में कोई दिलचस्पी नहीं है। क्योंकि अतीत से इन्होंने यह सीखा है कि ये शिक्षा उनके बच्चों की ज़िन्दगी में कोई बड़ा फ़र्क नहीं पैदा कर पाती। बच्चों की ज़िन्दगी में एक साकारात्मक बदलाव ला पाने में सक्षम शिक्षा के लिए एक सक्षम शिक्षक की ज़रूरत होगी जो योग्य, कुशल, शिक्षित व प्रतिबद्ध हो। अतः, प्रारंभिक विद्यालयों की शिक्षायी प्रक्रिया को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए योग्य व प्रतिबद्ध शिक्षक पहली ज़रूरत हैं। इन संदर्भों को ध्यान में रखते हुए यह दिशा मिलती है कि भविष्य के शिक्षक कैसे हों।

बिहार में अध्यापक शिक्षा : एक परिदृश्य

बिहार में पिछले दो दशकों में शिक्षा को लेकर कई परियोजनायें चलाई गईं लेकिन अपेक्षित परिणाम नहीं मिला। इसका एक मुख्य कारण रहा उपयुक्त शिक्षकों की कमी। यह कमी कई स्तरों पर दिखी–

- पहले से पढ़ा रहे शिक्षकों की संख्या का कम होना तथा जो पढ़ा रहे हैं उनमें भी प्रगतिशील व नवाचारी शिक्षायी परिवर्तनों को जानने की रुचि का निरंतर कम होते जाना।
- नये अप्रशिक्षित शिक्षकों की बहाली और उनके (शिक्षकों के) लिए प्रशिक्षण का अपर्याप्त बंदोबस्त होना।
- नये पेशेवर शिक्षक तैयार करने वाली संस्थाओं के बंद (निष्क्रिय) होते जाने से प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव बढ़ता जाना।

बिहार के संदर्भ में देखें तो अध्यापक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम को आमतौर पर नियमों (शिक्षकों की वृत्ति, नियुक्ति और वेतनमान के संदर्भ में) का पूरा एक 'अनुष्ठान' मानने की प्रवृत्ति बढ़ी है। नतीजा यह रहा है कि शिक्षक समूह के पेशेवर ताक़त में कमी आयी है और शिक्षक कैडर की क्षमता और गुणवत्ता का

काफ़ी ह्रास हुआ है। शिक्षक की हैसियत को लेकर अनेक नीतिगत बहसें हुईं, साथ ही उसकी जवाबदेही तय करने पर भी सवाल उठाये गये। समान विद्यालय प्रणाली आयोग (बिहार सरकार, 2007) ने भी इस मसले को सामाजिक सांस्कृतिक ताने–बाने के बीच में समझने–समझाने की कोशिश की और कहा कि *शिक्षकों के ख़िलाफ की जाने वाली इन आलोचनाओं में से अनेक जायज़ हैं। लेकिन, ये आलोचनाएँ आम तौर पर उन परिस्थितियों के संदर्भ से कटी हुईं हैं जिनमें उन्हें काम करना पड़ता है।*

अब एक अगला मुद्दा यह है कि हम इन परिस्थितियों को ही संदर्भ बनाकर अपने अध्यापक शिक्षा एवं शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम की पुनर्रचना क्यों नहीं करते? इनमें कुछ संस्थागत और कुछ प्रक्रियागत दिक्कतें तो हैं ही साथ ही, 'शिक्षक' के प्रति बने सामाजिक बिम्ब भी इसको तय करते हैं। रही सही कसर प्रारंभिक शिक्षा में 'पैरा' शिक्षकों के प्रयोग करते जाने के प्रचलन ने पूरी कर दी। समान विद्यालय प्रणाली आयोग–2007 की रिपोर्ट तथा बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 को संदर्भ बनाया जाये तो शिक्षक के संदर्भ में एक ज़बरदस्त बदलाव की ज़रूरत महसूस होती है। इस बदलाव का उद्देश्य ''पूर्णकालिक, प्रशिक्षित, पेशेवर शिक्षक कैडर'' की स्थापना है। इस तरह के शिक्षक कैडर के लिए उपयुक्त संख्या में अच्छे व साधन सम्पन्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों की ज़रूरत होगी। आज जो संस्थायें हैं वे काफ़ी कम हैं, जो हैं उनमें भी संसाधनों (भौतिक संसाधनों व शिक्षक प्रशिक्षक) और नियमितता का घोर अभाव है। साथ ही सक्षम शिक्षकों के निर्माण हेतु योग्य प्रशिक्षुओं के चयन की उपयुक्त प्रक्रिया का भी अभाव है। इन सबके अलावा अध्यापक शिक्षा को एक ऐसी पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम की भी ज़रूरत महसूस होती है जो उपरोक्त ज़रूरतों को पूरा कर सके।

प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए अध्यापक शिक्षा : कुछ महत्त्वपूर्ण नीतिगत विमर्श

बिहार में बेहतर अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्र एवं राज्य के प्रमुख शिक्षायी दस्तावेजों, जो कि नीतिगत दख़ल रखते हैं, जैसे, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, समान विद्यालय प्रणाली आयोग–2007, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2009 (एन.सी.एफ.टी.ई–2009), शिक्षा का मौलिक अधिकार अधिनियम–2009 इत्यादि के ज़रिए अध्यापक शिक्षा के नज़रिये को समझना होगा। वर्तमान बिहार में कई तरह की शिक्षायी प्रक्रियायें चल रही हैं। उनके कई ढाँचे यहाँ मौजूद हैं। समान विद्यालय प्रणाली आयोग–2007 ने स्कूली शिक्षा के इन ढाँचों को मज़बूती देने की बात कही है। आयोग ने समान स्कूल प्रणाली को लागू करने की चुनौतियों का सामना करने हेतु बिहार में नीचे से ऊपर तक समग्र अध्यापन शिक्षण प्रणाली के ढाँचागत और प्रक्रिया के ज़रिए रूपांतरण का एक कार्यक्रम तैयार किया है।

वर्तमान संकुल संसाधन केन्द्रों को संकुल शिक्षक मंचों में रूपांतरित किया जाना चाहिए।

- संकुल शिक्षक मंच अपने निर्दिष्ट क्षेत्र में चलनेवाले तमाम विद्यालयों के शिक्षकों के स्वायत्त पेशेवर मंच के बतौर ही काम करेगा। इस केन्द्र में पूर्व प्रारंभिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक के तमाम विद्यालयों के शिक्षक और प्रधानाध्यापक शामिल रहेंगे। इसमें भागीदार शिक्षकों के बीच से मनोनीत एक पूर्णकालिक शिक्षक समन्वयक होगा।
- ये मंच व्यापक 'शैक्षिक पर्यवेक्षण' संचालित करने की ज़िम्मेवारी निभाएंगे। इससे परम्परागत 'निरीक्षण' का विचार अनावश्यक बन जाएगा। आयोग ने ऐसे पर्यवेक्षण संगठित करने और इससे प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर आगे की कारवाई चलाने हेतु, प्रक्रियाओं की रूपरेखा बनाई है।

(रिपोर्ट– समान विद्यालय प्रणाली आयोग, 2007)

संकुल संसाधन केन्द्र को अगर संकुल शिक्षक मंचों में बदला जाता है तो इसके लिए शिक्षकों की शिक्षा के समय ही संकुल संसाधन केन्द्रों से उनका सघन परिचय होना चाहिए। इसके अवसर प्रायोगिक कार्यों के समय तो निकलेंगे ही साथ ही सैद्धांतिक पर्चों में भी इस तरह के ढाँचों पर चर्चा की जा सकेगी।

यह उम्मीद की जा सकती है कि शिक्षकगण अपने प्रशिक्षण के बाद भी शिक्षायी शोधों से गहन रूप से जुड़े रहेंगे। डायट अपने उर्त्तीण हो चुके विद्यार्थियों से नियमित सम्पर्क में रहेगा तथा एस.सी.ई.आर.टी. के द्वारा उपलब्ध कराये गये फेलोशिप या अन्य संस्थायी व स्थानीय माध्यमों के ज़रिये अच्छे शोध कार्यों के लिए अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करेगा। इस तरह के शोध कार्यों से एक ओर अध्यापकों में शोध–कौशलों की तो बढ़ोतरी होगी ही साथ ही शिक्षा सम्बन्धी विमर्श के विस्तार का अवसर भी मिलेगा। इसके लिए विभिन्न संस्थायें जैसे एस.सी.ई.आर.टी., डायट, विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग, बिहार शिक्षा परियोजना व अन्य शैक्षिक संस्थायें समान विद्यालय प्रणाली आयोग के सुझाव के ज़रिये शिक्षकों के कार्य में मदद कर सकती हैं।

अध्यापक–शिक्षण एवं शैक्षिक शोध संवर्ग का निर्माण

यह राज्य में अध्यापक शिक्षण एवं शैक्षिक अनुसंधानों में शामिल तमाम संस्थानों एवं ढाँचों हेतु शिक्षक प्रशिक्षकों तथा शैक्षिक शोध–कर्मियों का संवर्ग होगा। इन संस्थानों में अन्य संस्थाओं के अलावा, एस.सी.ई. आर.टी., डायट, पी.टी.इ.सी. प्रखंड शिक्षा केन्द्र और सरकारी बी.एड. महाविद्यालय शामिल होंगे। प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा पाठ्यचर्या विकास केन्द्रों के नियुक्त होने वाले समन्वयक भी इस नये संवर्ग के अंग होंगे। इस संवर्ग के संकाय सदस्यों की नियुक्ति बिल्कुल खुली चयन पद्धति से होगी। विद्यालय शिक्षक और बिहार शिक्षा सेवा के अधिकारी इस संवर्ग में चयन हेतु आवेदन कर सकेंगे।

(रिपोर्ट – समान विद्यालय प्रणाली आयोग, 2007)

प्रखंण्ड संसाधन केन्द्रों को डायट के शैक्षिक विस्तार के रूप में रखने से प्रारंभिक स्कूली शिक्षा की मुख्य धारा और डायट की गतिविधियों में एक सीधा जुड़ाव बनेगा। डायट से यह अपेक्षा की जाती है कि वह संकुल–संसाधन केन्द्रों की गतिविधियों में अपने प्रशिक्षु शिक्षक/शिक्षिकाओं को सक्रिय तौर पर भाग लेने के लिये प्रेरित करें। यह प्रक्रिया आरंभिक शिक्षा के सार्वभौमिक अनुभवों से न सिर्फ़ नये शिक्षकों को जोड़ेगा बल्कि यह साझेपन का बोध व नये उत्साह के सृजन का आधार भी बनेगा।

प्रखंड संसाधन केन्द्रों को प्रखंड शिक्षा केन्द्रों में रूपांतरित करना

- प्रखंड संसाधन केन्द्र डायट के शैक्षिक विस्तार के रूप में काम करेंगे न कि उसके अधीन संस्थान के रूप में।
- वे अध्यापक–शिक्षण, सामग्री निर्माण एवं अनुसंधान कार्यों में शामिल होंगे।
- उनके निम्नलिखित कार्य होंगे : सेवारत अध्यापक शिक्षण, शैक्षिक सर्वेक्षण और शोध अध्ययन संचालित करना और प्रखंड के अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए सेवाकालीन अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- प्रखंड शिक्षा केन्द्र और डायट/एस.सी.ई.आर.टी. के बीच संकाय सदस्यों के आदान–प्रदान कार्यक्रम को संस्थाबद्ध रूप दिया जाएगा।
- हर प्रखंड शिक्षा केन्द्र में 6 संसाधन व्यक्ति होंगे जो प्रखंड के प्राथमिक, मध्य और उच्च माध्यमिक विद्यालयों से दो वर्ष की अवधि के लिए प्रतिनियुक्ति पर आयेंगे।

(रिपोर्ट – समान विद्यालय प्रणाली आयोग, 2007)

इस पूरे बदलाव में एस.सी.ई.आर.टी. की अहम् भूमिका होगी जिसका परिवर्तित ढाँचा समान विद्यालय प्रणाली की रिपोर्ट में दिया गया है। डायट व अन्य शैक्षिक संस्थाओं का विकास तभी सहज होगा जब एस.सी.ई.आर.टी. मज़बूत होगी। इससे शिक्षा में प्रबन्धन, पर्यवेक्षण और नियमितता तो बढ़ेगी ही, साथ ही डायट को नियमित अकादमिक सहयोग भी मिलेगा। एस.सी.ई.आर.टी. से यह अपेक्षा होगी कि वह डायट के पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम की नियमित अंतराल पर समीक्षा करे व इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए उपयुक्त पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराये। पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के क्रम में हिन्दी में नई पुस्तकों, शोध–पत्रों, शोध–ग्रन्थों व अन्य रिपोर्ट इत्यादि की आपूर्ति तो करे ही साथ ही अन्य भाषाओं में छपे उच्च स्तरीय लेखों, किताबों, शोध–पत्रों इत्यादि का अनुवाद कराने व उन्हें प्रशिक्षुओं तक पहुँचाने का प्रबन्ध भी करे। एस.सी.ई.आर.टी. डायट के संचालन पर सालाना रिपोर्ट तैयार करें, उसके विभिन्न अकादमिक पक्षों को लेकर शोध करें एवं करवायें व उस पर चर्चा करायें, ताकि डायट की प्रक्रियायें गतिशील बनी रहें। इसके साथ ही एस.सी.ई.आर.टी. डायट के शिक्षक–प्रशिक्षकों के लिए दिशा–निर्देश पुस्तिकाओं को तैयार करे और उनके लिए कार्यशाला व सेमिनार इत्यादि का भी आयोजन करायें।

आज़ादी के बाद से ही स्कुलों में गाँधीवादी शिक्षा को लागू करने की बात होती रही है। हाल ही में इसे समान विद्यालय प्रणाली आयोग–2007 ने भी स्वीकारा है। ज़ाहिर है कि ऐसी स्थिति में शिक्षकों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वे गाँधीवादी शिक्षा को समझ सकें। यानि वे शिक्षा की प्रक्रिया और हाथ से काम करने को एक दूसरे का पूरक मानें। आयोग ने भी माना कि अगले पाँच वर्षों के दौरान राज्य के तमाम प्राथमिक और मध्य विद्यालयों की पाठ्यचर्या को गाँधीवादी शिक्षा शास्त्रीय सिद्धांत के आधार पर रूपांतरित किया जाएगा। इस सिद्धांत का सार है– ज्ञान अर्जन, मूल्यों का निर्माण तथा काम के ज़रिए कौशलों का विकास। अगले दौर में, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तरों की पाठ्यचर्या को इस ढाँचे के अंतर्गत लाया जाएगा। इस संदर्भ में आयोग द्वारा दी गयी निम्नलिखित सिफ़ारिश महत्त्वपूर्ण है–

बुनियादी शिक्षा पाठ्यचर्या विकास केन्द्र :

राज्य भर के 391 बुनियादी विद्यालयों में से 150 विद्यालयों को चुनकर वहाँ बुनियादी शिक्षा पाठ्यचर्या विकास केन्द्र स्थापित किए जाएँगे। सभी 391 बुनियादी विद्यालयों को 'प्रयोगशाला विद्यालय' मानते हुए इन बुनियादी शिक्षा पाठ्यचर्या विकास केन्द्रों की ज़िम्मेदारी होगी –

(क) आरंभ में प्राथमिक स्तर के लिए तथा बाद की अवधि में क्रमशः उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों पर भी संदर्भ विशिष्ट कार्य–केन्द्रित पाठ्यचर्या विकसित करना।

(ख) धीरे–धीरे समूची स्कूल प्रणाली में सेवाकालीन अध्यापक शिक्षण संगठित करना।

(ग) सतत् व गतिशील सुधार के लिए प्रणालीबद्ध फीडबैक मुहैया कराने की दृष्टि से शिक्षकों द्वारा ऐक्शन रिसर्च को बढ़ावा देना।

(रिपोर्ट – समान विद्यालय प्रणाली आयोग, 2007)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, समान विद्यालय प्रणाली आयोग–2007 तथा बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 को एक साथ पढ़ें तो गाँधीवादी शिक्षाशास्त्र के साथ ही समालोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की ज़रूरत महसूस होती है। समालोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के साथ जुड़ा 'निर्माणवादी परिप्रेक्ष्य' ख़ासतौर से बहिष्कृत और हाशिये पर खड़े बच्चों के सशक्तीकरण का महत्त्वपूर्ण साधन है। निर्माणवादी दृष्टि में सीखनेवालों को यह आज़ादी होती है कि वे जिन चीज़ों व गतिविधियों से जुड़े हैं; उनके आधार पर विद्यमान विचारों में अपने नये–नये विचारों को जोड़कर सक्रिय रूप से अपने ज्ञान का निर्माण करें। समालोचनात्मक शिक्षणशास्त्र सामाजिक मुद्दों पर बहुविध विचारों की स्वीकृत और अंतःक्रिया के लोकतांत्रिक रूपों के प्रति प्रतिबद्धता को आवश्यक मानता है। ये दोनों शिक्षा शास्त्रीय दृष्टियाँ एक साथ मिलकर वर्तमान स्कूली शिक्षा को समान प्रणाली में रूपांतरित करने का आधार मुहैया कराती हैं।

एक ओर जहाँ पाठ्यचर्या ढाँचा पूरे देश के लिए आधारभूत रूपरेखा तय करता है वहीं राज्य एजेंसियों, जिला व प्रखंड स्तर के अकादमिक निकायों, विद्यालयों और शिक्षकों से यह अपेक्षा होती है कि वे पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में लचीलापन बरतें और विविध ढंग से शिक्षण में ज़्यादा आज़ादी महसूस करें क्योंकि उन्हें पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के आगे पाठ्यपुस्तक और अधिगम सामग्रियों की तरफ जाना पड़ता है। इस दृष्टि को समान स्कूल प्रणाली के अंतर्गत पाठ्यचर्या निर्माण, पाठ्यक्रम रचना, पाठ्यपुस्तकों के लेखन और शिक्षाशास्त्रीय निर्माण में मार्गदर्शक भूमिका अदा करनी चाहिए।

अलग–अलग सांस्कृतिक–सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को इस बात का अवसर मिलना चाहिए कि वे अपने अनुभवों के मध्य ज्ञान का स्वयं सृजन करें। इस प्रक्रिया में शिक्षक एक सहयोगी कार्यकर्ता के रूप में कक्षा में बच्चों के लिए वैसी स्थितियाँ मुहैया कराता है ताकि ज्ञान सृजन की प्रक्रिया सहज हो सके। इस स्थिति में शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे लोकतांत्रिक मूल्यों और बच्चों की क्षमता में मुकम्मल विश्वास होगा। इस विश्वास को हासिल करने के लिए जरूरी है कि शिक्षक बच्चों के बारे में एक बहुलतावादी समझ रखता हो। यहाँ अलग–अलग अनुभव जगत और अलग–अलग क्षमताओं से पूर्ण बच्चे एक साथ होते हैं अध्यापक इन अनुभवों को शिक्षायी विषय–वस्तु से जोड़ने का काम करता है।

> बच्चों के संज्ञान में अध्यापकों की भूमिका भी बढ़ सकती है यदि वे ज्ञान निर्माण की उस प्रक्रिया में ज़्यादा सक्रिय रूप से शामिल हो जायें जिसमें बच्चे व्यस्त हैं। सीखने की प्रक्रिया में व्यस्त एक बालक या बालिका अपने ज्ञान का सृजन खुद करता/ती है। बच्चों को ऐसे प्रश्न पूछने की अनुमति देना जिनसे वे स्कूल में सिखाई जाने वाली चीजों का संबंध बाहरी दुनिया से स्थापित कर सकें, उन्हें एक ही तरीके से उत्तर रटने और देने की बजाए अपने शब्दों में जवाब देने और अपने अनुभव बताने के लिए प्रोत्साहित करना– ये सभी बच्चों की समझ विकसित करने में छोटे किन्तु बेहद महत्त्वपूर्ण क़दम है। 'चतुर अनुमान' को एक कारगर शिक्षाशास्त्रीय साधन के रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्कूली शिक्षा में अधिगम का एक बड़ा हिस्सा अब भी व्यक्ति–आधारित है (हालांकि वैयक्तिक नहीं है)। अध्यापकों को 'ज्ञान' हस्तांतरित करने वालों के रूप में देखा जाता है यद्यपि ज्ञान को हम जानकारी मान बैठते हैं। अध्यापकों को उन अनुभवों का आयोजक समझा जाता है जो बच्चों के सीखने में सहायक होते हैं।
>
> (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005)

यह संभावना कि शिक्षक बच्चों के अनुभव के बीच काम करेगा, इसके लिए शिक्षक में कई तरह की क्षमताएँ होनी चाहिए – ख़ास तौर से उसे बच्चों से संवाद स्थापित करने के लिए उपयुक्त स्तर का भाषा ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि शिक्षकों के पास पर्याप्त–अनुभव और ज्ञान हो, साथ ही उन पर विश्वास भी किया जाये। यह ज़रूरत पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित शिक्षक के ज़रिए ही सही रूप से दी जा सकती हैं। साथ ही, बदलती हुई स्थिति में शिक्षक की भूमिका भी बदली है, जाहिर है कि अध्यापक शिक्षा की प्रकृति में भी बदलाव आयेगा। इन बदलती हुई स्थिति पर बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, शिक्षक पर न सिर्फ विश्वास करने की बात कहता है बल्कि उन्हें निर्णय की प्रक्रियाओं में भी शामिल करने की बात कहता है।

शिक्षक–प्रशिक्षकों व प्रशिक्षुओं और स्कुली शिक्षकों को स्कुली स्तर पर वो तमाम चीज़ें करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए जिसे कि वे नये अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को लागू करने के लिए ज़रूरी समझते हैं। अन्ततः यहाँ यह स्पष्टीकरण देना जरूरी है कि यह पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम एक मार्गदर्शिका मात्र है न कि कोई अकादमिक आदेश। शिक्षक–प्रशिक्षक, प्रशिक्षु तथा स्कूल में काम करने वाली अध्यापिकायें व अध्यापक इसे संदर्भ बनाकर स्वतंत्र रूप से शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम चलायें तो यह उपयुक्त और सार्थक

होगा।

यदि पाठ्यचर्या को विद्यालय में सीखने–सिखाने की पूरी व्यवस्था के व्यापक अर्थ में लिया जाए, तो जो व्यक्ति इससे सबसे अधिक जुड़ा हुआ है और जो इसे वास्तविक मूर्त आकार देने में सबसे बड़ी भूमिका अदा कर सकता है, वह खुद अध्यापक ही है। पाठ्यचर्या सुधार की कोई योजना उसकी सहमति और सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकती। शिक्षा संबंधी सिद्धांतों को शिक्षण के वास्तविक व्यवहार के साथ जोड़ना आवश्यक है। अध्यापक शिक्षण पाठ्यक्रम के निर्माण में कार्यस्थल–अनुभव के लिए पर्याप्त गुंजाइश रहनी चाहिए। इसे मौजूदा स्थिति की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए। उन्हें अपने अनुभवों का आदान–प्रदान करने, अपनी शंकाओं को व्यक्त करने और शिक्षण के उत्प्रेरक माहौल में समाधान ढूंढने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रशिक्षण में शिक्षकों की सहभागिता होनी चाहिए जिससे कि व्यावहारिक सत्रों को सैद्धांतिक मुद्दों पर बहसों के साथ जोड़ा जा सके।

(बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008)

अध्यापक शिक्षा की बुनियादी ज़रूरतें एवं पाठ्यक्रम का आधार

इस पाठ्यचर्या के निर्माण में कुछ बुनियादी जरूरतों का ध्यान रखा गया है जिनमें प्रमुख हैं– गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए बच्चे का संवैधानिक अधिकार, पिछले दो दशकों से बिहार में बनी नयी सामाजिक–सांस्कृतिक व शैक्षिक स्थिति, तथा संवैधानिक बाध्यता (समाजवाद व धर्म निरपेक्षता)। इस संदर्भ में ऐसे शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की ज़रूरत महसूस होती है जिनमें समाज व दुनिया के प्रति समीक्षात्मक समझ हो तथा जो मौजूदा शिक्षायी जड़ता से मुकाबला कर सकें और विकल्प को खोज सकें। इस तरह के शिक्षक की तैयारी की प्रक्रिया कुछ ख़ास तरह के ज्ञान और कौशलों में दक्षता की मांग करती है।

साथ ही, पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम को बनाने के दौरान दो महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। पहला यह कि इसके निर्माण में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई) द्वारा सुझाये गए डी.एल.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम–2015 को आधार के रूप में माना जाए। और दूसरा यह कि राज्य मे शिक्षा की अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम की संरचना एवं विषयपत्रों को निर्मित किया जाए। इस प्रकार, यह पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम राष्ट्रीय और स्थानीय, दोनो अपेक्षाओं को पूरा कर सके। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई) द्वारा सुझाये गए डी.एल.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम–2015 के अनुसार इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम में तीन व्यापक घटकों का समावेश है–1. विषयवस्तु (Content), 2. प्रक्रियाएँ (Processes) तथा 3. संदर्भ (Context)।

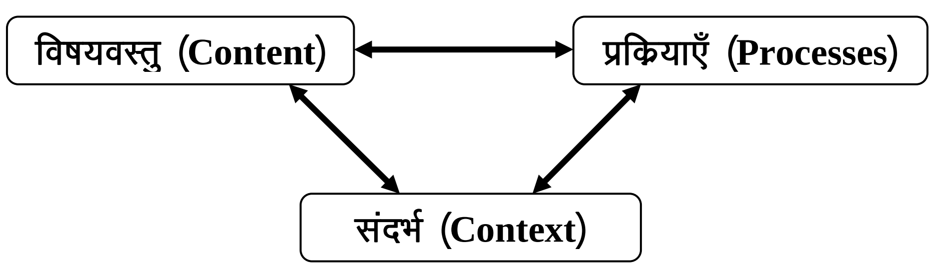

पहले घटक के अंतर्गत शिक्षक के बुनियादी समझ को विकसित करनेवाले विषयवस्तु को शामिल किया गया है। दूसरा घटक मुख्यतः सीखने–सिखने की प्रक्रियाओं को सम्बोधित करता है। तीसरे घटक के रूप में विद्यालय तथा समुदाय के संदर्भ को रखा गया है। इन तीनों घटकों के आपसी अंतःक्रिया को

समझना शिक्षक के लिए अति महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उनके शिक्षण कार्य के प्रमुख आधार यही हैं।

उपरोक्त तीनों घटकों को एक साथ रखकर हीं इस पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के सभी विषयपत्रों का विकास किया गया है। हालांकि, यह हो सकता है कि विषयपत्रों में इनमें से कोई एक घटक केन्द्रीय स्थिति में हो और बाकि दो सहायक के रूप में। अतः विषयपत्रों के अंदर विभिन्न इकाइयों में आपको इन तीनों घटकों की छवि मिलेगी।

शिक्षा के सम्बन्ध में बुनियादी विचारों एवं दुनिया भर में चल रहे शिक्षायी विमर्शों की जानकारी शिक्षक को उसकी अकादमिक परिस्थितियों को समझने में उसे मदद पहुँचाती हैं। इसीलिए एक शिक्षक की तैयारी के क्रम में उसे बुनियादी दार्शनिक, सामाजिक व शिक्षायी विचारों की जानकारी दी जानी चाहिए। साथ ही उसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चल रहे शिक्षायी नवाचारों की भी जानकारी होनी चाहिए।

शिक्षक शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है, बच्चों को उनके विकास व सीखने की प्रक्रिया के साथ समझना। बच्चों के विभिन्न पहलुओं जैसे मानसिक, सामाजिक, नैतिक व शारीरिक विकास को समझने के क्रम में एक शिक्षक को विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को भी समझना होगा।

तीसरा हिस्सा है विद्यालय एवं कक्षा में चलने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं की समझ। एक शिक्षक विद्यालयी ढाँचे के विभिन्न आयामों की तो जानकारी रखेगा ही, साथ ही उसे कक्षा की गतिविधियों की विस्तार से समझ भी होनी चाहिए, जैसे कक्षा प्रबन्धन, मूल्यांकन की प्रक्रिया इत्यादि।

शिक्षक शिक्षा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण आयाम है 'शिक्षा के साहित्य' से परिचय। इसके लिए यह जरूरी है कि एक शिक्षक उन साहित्यिक रचनाओं व अनुभवों को जाने जो शिक्षा के संदर्भ में समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। ताकि, शिक्षक सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को समझ सके।

कई बच्चों को अधिक सहारे और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जबकि अन्य बिना किसी सहारे के स्वयं सीख लेते हैं। अतः, समावेशी शिक्षा के आलोक में एक शिक्षक को यह जानकारी होनी चाहिए कि बच्चों में कई प्रकार की भिन्नताएँ होती हैं। समावेशी शिक्षा का तात्पर्य है सभी बच्चों में तरह–तरह की भिन्नताओं के बावजूद उन्हें पठन–पाठन का अवसर सामान्य कक्षाओं में ही विशेष प्रबंध करके कराना है।

शिक्षक को विभिन्न विषयों और उनके पढ़ाये जाने के तरीक़ों की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। मुख्य रूप से गणित, भाषा, पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान तथा समाज विज्ञान विषयों के शिक्षण के तरीके, उनके विषय वस्तु और उसके शिक्षणशास्त्र पर विशेष ध्यान देना होगा। साथ ही, प्रारम्भिक विद्यालयों के शिक्षक के लिए यह ज़रूरी है कि वह पढ़ाने में मददगार कुछ बुनियादी कौशलों व कलाओं जैसे नाट्यकला, संगीत, चित्रकला, कम्प्यूटर इत्यादि से परिचित हों। इसके साथ–साथ विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित करने की जरूरत है, जिसके लिए शिक्षकों को तैयार होना चाहिए।

यहाँ इस बात का उल्लेख किए जाने की ज़रूरत महसूस होती है कि 'ज्ञान' को उसके व्यापक स्वरूप के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए। इसलिए शिक्षक शिक्षा के कार्यक्रम में शिक्षण अभ्यास और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों (संगीत, नाटक, खेलकूद इत्यादि) का गहन अनुभव होना चाहिए।

शिक्षायी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये सूचना एवं ज्ञान के विविध संसाधनों के उपयोग को भी बढ़ावा देना लाभप्रद होगा। इस संदर्भ में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) के विभिन्न उपागमों की मदद ली जा सकती है। अतः, यह अपेक्षा की जाती है कि प्रशिक्षु व प्रशिक्षक इन तकनीकों के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पक्षों के विषय में जाने तथा अपने सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में इसका प्रयोग करें।

एक महत्त्वपूर्ण पहलू है–शिक्षक को स्वयं अपने व्यक्तित्व एवं कार्य की समझ। इसके बिना शायद शिक्षक अपने जीवन भर के शिक्षण कार्य में कोई प्रभावी बदलाव लाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं क्योंकि जबतक वे स्वयं का आलोचनात्मक एवं वास्तविक मूल्यांकन नहीं करेंगे तब तक उन्हें यह समझ नहीं हो सकता कि आगे उनके वृत्तिक विकास के लिए क्या करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त तत्वों की प्राप्ति के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण के अवयवों के आधार को विस्तृत किया गया है जिसमें विषयपत्रों का एक नया और उपयोगी स्वरूप निकलकर आया है।

अध्यापक शिक्षा का शिक्षणशास्त्र

इस कार्यक्रम में यह स्पष्ट धारणा है कि अध्यापक शिक्षा के क्रम में प्रशिक्षुओं को सिद्धान्त और व्यवहार दोनों की समझ होनी चाहिए। लेकिन, यह समझ पृथकता में न होकर एक दूसरे के सापेक्ष होनी चाहिए। जिन तीन घटकों की चर्चा ऊपर की गई है–विषयवस्तु, प्रक्रिया तथा संदर्भ, इन तीनों की अंतःक्रियात्मक समझ को विकसित करनेवाले अवसरों को सृजित करना, इस शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के शिक्षणशास्त्र से सबसे पहली अपेक्षा है।

यह ज़रूरी है कि प्रशिक्षु जिन सिद्धान्तों को पढ़ रहे हों उन पर खुले तौर से विचार करें और विद्यालयों में अभ्यास के दौरान यथा संभव उन सिद्धांतों को आज़मा कर देखें। जैसे वंचना और वर्ग–भेद का सामाजिक सिद्धान्त तो पढ़ा ही जाना चाहिए, साथ ही, जब प्रशिक्षु अपने विद्यालयों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान इसे समझने की भी कोशिश करें कि ज़मीनी स्तर पर वंचना और वर्गभेद का क्या स्वरूप है। शिक्षक–प्रशिक्षकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वे जिन सिद्धांतों को पढ़ा रहे हैं, उन पर काम करने और उन्हें महसूस करने के अवसर प्रशिक्षु को कैसे उपलब्ध कराये जाएँ।

एक और महत्त्वपूर्ण अपेक्षा यह है कि विभिन्न घटकों को समझने के लिए पाठ्य सामग्रियों का सचेत चुनाव किया जाए। इन सामग्रियों को चुनने में लेखन की मौलिकता, सहजता और विषयवस्तु के प्रति उसकी गहनता को सहज बनाया जाना चाहिए। शिक्षण अभ्यास व अन्य कार्य अभ्यासों की रचना इस प्रकार की जानी चाहिए ताकि प्रशिक्षुओं के पास उन पर सचेत ढंग से सोचने का अवसर हो तथा सोचने की इस प्रक्रिया में उपरोक्त पाठ्य सामग्रियों से मदद मिले। अन्ततः शिक्षक शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि प्रशिक्षु स्वयं के अनुभव के ज़रिए विभिन्न सिद्धांतों की उपयोगिता व सीमाओं को अपने भू–सांस्कृतिक संदर्भों में समझ सकें।

शिक्षकों के लिए आवश्यक तैयारी

शिक्षकों की ऐसी तैयारी ज़रूरी है कि वेः

- बच्चों का ख्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसंद करें।
- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।
- ग्रहणशील और निरंतर सीखने वाले हों।
- शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखें तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।
- समाज के प्रति अपना दायित्व समझें और बेहतर विश्व के लिए काम करें।
- उत्पादक कार्य के महत्त्व को समझें तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यावहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।
- पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत–निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण करें।

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005)

प्रस्तुत पाठ्यचर्या के माध्यम से अध्यापकों से अपेक्षा

देश की मौजूदा संवैधानिक ज़रूरतों और बिहार विशेष के भू–सांस्कृतिक व सामाजिक संदर्भों में ऐसी शिक्षिकाओं व शिक्षकों की ज़रूरत महसूस होती है जिसके लिए पढ़ाना सांस्कृतिक प्रतिबद्धता हो और जिनके लिये शिक्षण आनन्ददायी कार्य हो। अन्य कौशलों की तरह पढ़ाना तभी 'मज़ेदार' लगता है जब शिक्षकों व शिक्षिकाओं को पढ़ाये जाने वाले विषय व पढ़ाने के कौशल तो अच्छी तरह से आते ही हों, साथ ही वह उन बच्चों को भी बेहतर तरीक़े से जानते व समझते हों जिन्हें वह पढ़ा रहे हैं। सीखना–सिखाना एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। अतः एक शिक्षक में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति लगाव उसे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को रोचक व सहज बनाने में सहायी होता है। बिहार जैसे बहुलतावादी समाज में बेहतर शिक्षा तभी संभव हो सकती है जबकि हम 'समता' व 'बहुलता' की समझ को अपनी शिक्षा प्रक्रिया के केन्द्र में रखें। अतः, ऐसे में इस पाठ्यचर्या के माध्यम से प्रशिक्षित होने वाले शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे बच्चों के परिवेश की भू–सांस्कृतिक व सामाजिक स्थितियों को स्कूली शिक्षा के संदर्भ में समझ और समझा पाने की स्थिति में होंगे। यह 'समझ' स्कूल और बच्चे के परिवेश व सांस्कृतिक स्थितियों में एक जुड़ाव पैदा करेगी, जो आगे चलकर बच्चे के सामाजिक व सांस्कृतिक अनुभवों को स्कूली ज्ञान में शामिल करेगी।

बीसवीं सदी के आख़िरी दशक और इस सदी के शुरुआत में पाठ्यक्रम का बदलाव एक गहरा सामाजिक और राजनैतिक सवाल बनकर उभरा है। जब पाठ्यक्रम में बदलाव 'तेज़ी' से हो रहा हो तो 'शिक्षक' में इस संभावना को खोजा जाना लाज़मी है कि वह नयी अकादमिक स्थितियों से सामंजस्य कर सके और ज़रूरत हो तो उनसे मुक़ाबला भी कर सके। यह शिक्षायी मसला एक पूर्वमान्यता और कई बार एक राजनैतिक सवाल बनकर उभरा कि ''बच्चों को क्या पढ़ाया जाये'', यह वयस्कों का समाज कैसे तय कर सकता है? यह बहस एक पूर्वाग्रह से संचालित होती है कि शिक्षक पाठ्यक्रम की बातों को गन्तव्य (बच्चों) तक पहुँचाने वाला एक एजेन्ट मात्र है जो कि बच्चों को पाठ्य–पुस्तकों में लिखी बातों को रटवायेगा व बच्चे उसे परीक्षा में पुनरोत्पादित करेंगे। शिक्षक की उस भूमिका को तत्काल बदले जाने की ज़रूरत है। अतः, इस पाठ्यचर्या के माध्यम से यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षित शिक्षक अपनी नयी भूमिका में बच्चों को उन स्थितियों को आलोचनात्मक तरीके से समझने में मदद करेंगे जिनमें वे रहते हैं। बच्चें विभिन्न माध्यमों (पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक, परिवेश आदि) से दिये जाने वाले 'ज्ञान' को मात्र स्वीकार न करें बल्कि उनपर प्रश्नचिह्न भी लगा सकें। इस प्रकार की आदर्श शैक्षिक स्थिति एक सक्षम शिक्षक ही निर्मित कर सकता है, जिसकी आशा इस पाठ्यचर्या के द्वारा की गई है।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

दो वर्षीय डी०एल०एड० (फेस–टू–फेस) पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की रूपरेखा

विषय			मूल्यांकन		
प्रथम वर्ष		Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30	100
F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30	100
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30	100
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30	100
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15	50
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15	50
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-9	Proficiency in English	2	35	15	50
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15	50
F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60	100
F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60	100
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 (4 सप्ताह)	4	-	100	100
	कुल	40	570	430	1000
द्वितीय वर्ष		Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
S-1	समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा	4	70	30	100
S-2	संज्ञान, सीखना और बाल विकास	4	70	30	100
S-3	कार्य और शिक्षा	2	-	50	50
S-4	स्वयं की समझ	2	35	15	50
S-5	विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा	4	40	60	100
S-6	Pedagogy of English (Primary Level)	2	35	15	50
S-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
S-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
S-9	उच्च–प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के लिए इनमें से किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्रः A.गणित | B.विज्ञान | C.सामाजिक विज्ञान D. English | E.हिन्दी | F.संस्कृत G.मैथिली | H.बांगला | I.उर्दू	2	35	15	50
SEP-2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2 (इंटर्नशिप) 16 सप्ताह	16	100	300	400
	कुल	40	455	545	1000
	समग्र कुल	**80**	**1025**	**975**	**2000**

1 Credit = 30 Hours of Study (for Face-to-Face mode)

द्रष्टव्य

पाठ्यचर्या के अंतर्गत दिये गए पाठ्यक्रम की संरचना को समझना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में कई विषय–पत्र हैं जिनका प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अध्ययन–अध्यापन अनिवार्य है। इस पाठ्यक्रम में इन विषय–पत्रों की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई है ताकि प्रशिक्षुओं एवं प्रशिक्षकों को इन्हें समझने में आसानी हो।

प्रत्येक विषय–पत्र की शुरूआत इसके 'संदर्भ' से की गई है, जिसमें उस विषय की प्रकृति, पृष्ठभूमि, अंतर्निहित अवधारणाओं एवं शिक्षा में उसकी भूमिका की चर्चा की गई है। साथ ही, पूरे विषय–पत्र के अध्ययन के द्वारा प्रशिक्षुओं से किस प्रकार की समझ की अपेक्षा है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ के बाद, प्रत्येक विषय–पत्र के उद्देश्यों का उल्लेख है, जिनके आधार पर पत्र के विषय–वस्तु का निर्धारण किया गया है। उद्देश्यों को सरल एवं स्पष्ट रखने का प्रयास किया गया है ताकि व्यवहारिक तौर पर उन उद्देश्यों की पूर्ति एवं मूल्यांकन संभव हो सके।

इसके पश्चात, प्रत्येक विषय–पत्र में इकाइयों की व्याख्या दी गयी है। यह प्रयास किया गया है कि इकाईओं में दी जाने वाली विषयवस्तुओं को यथा संभव विस्तार से दिया जाये ताकि उनके शिक्षण व अधिगम में सुविधा हो।

प्रत्येक इकाई के बाद उसकी आवश्यकता को रेखांकित करने के लिए उसके औचित्य को भी दिया गया है। प्रायः पाठ्यक्रमों में इकाई के अंतर्गत विषयवस्तु तो दे दी जाती है, परन्तु उस विषयवस्तु को किस प्रकार समझा जाये, इसकी दिशा क्या हो, इसका उल्लेख नहीं किया जाता है। इसके कारण शिक्षण में समस्या के साथ ही विषय से भटकाव की भी प्रबल संभावना रहती है। अतः इस पाठ्यक्रम में प्रत्येक इकाई के बाद दी जाने वाली व्याख्या, यह दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है कि उस पूरी इकाई को किस प्रकार से समझा जाये । प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षुओं से अपेक्षा है कि वे इकाई में दी गई विषयवस्तु की सार्थक एवं समग्र समझ बनाने हेतु इकाई की व्याख्या को अवश्य ध्यान में रखें।

इसके उपरान्त विषय–पत्र में प्रस्तावित कार्यों की एक सूची दी गयी है, जिनका सम्बंध उस पत्र के विभिन्न इकाइयों की विषयवस्तु से है। अतः इन प्रस्तावित कार्यों को पृथकता में न कराया जाये, बल्कि इकाइयों में दिये गये विषयवस्तुओं के अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ ही किया जाये। तभी इनकी सार्थकता हो पायेगी तथा अवधारणाओं की व्यावहारिक समझ में उनका सक्रिय प्रयोग हो सकेगा। विभिन्न पत्रों के अंत में जो प्रस्तावित कार्य दिये गये हैं वे अंतिम नहीं हैं बल्कि प्रशिक्षकों की सहायता मात्र के लिए हैं। प्रशिक्षक स्थानीय जरूरत के मुताबिक इस संदर्भ में नये सृजनात्मक कार्यों की रचना स्वयं करे तथा इसे प्रशिक्षुओं को करने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रत्येक विषयपत्र के में पठन–पाठन के लिये उपयोगी संदर्भ पुस्तकें, अभिलेख, पत्रिकाओं आदि के साथ–साथ अन्य स्रोत जैसे वेबसाइटों को भी पाठ्यक्रम कें अंत में दिया गया है। जिससे प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षुओं के लिए सीखने के स्रोतों में विविधता के साथ–साथ सूचनाओं को अद्यतन रखने की भी संभावना बनी रहे। लेकिन यह सूची अंतिम नहीं है। संस्थानों को यह प्रयास करते रहना चाहिए कि वे इस सूची को लगातार अद्यतन करते रहें।

प्रथम वर्ष
(First Year)

कोड	विषय	Credit	बाह्य परीक्षा	आन्तरिक
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30
F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15
F-9	Proficiency in English	2	35	15
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15
F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60
F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 (4 सप्ताह)	4	-	100
प्रथम वर्ष कुल अंक (1000)		**40**	**570**	**430**

सत्र के विभिन्न विषयपत्रों के अध्ययन में निम्नलिखित ई–संसाधनों का उपयोग अपेक्षित है :

- विषयपत्रों की विषयवस्तु पर आधारित आई.सी.टी. / ऑडियो–विजुअल / एनिमेशन सामग्री।
- प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित डिजिटल सामग्री।
- विषयवस्तुओं से सम्बंधित फिल्म, डॉक्युमेंटरी, प्रेजेन्टेशन, वेब–रिसोर्स, ओपेन रिसोर्स, आदि।

F-1

संदर्भ

समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ

शिक्षा अपने बुनियादी रूप में समाजीकरण की प्रक्रिया है। साथ ही, शिक्षा अपने क्रियात्मक रूप में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया है। आधुनिक समाज में इस प्रक्रिया का व्यवस्थापन या संचालन अनेक स्तर यथा माता–पिता, परिवार, पड़ोस, समुदाय, मीडिया तथा विद्यालय स्तर पर किया जाता है। इन संस्थाओं में विद्यालय का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, जो न केवल बच्चों और बचपन को अपनी समाजीकरण की संस्थायी प्रक्रिया के द्वारा गढ़ता है बल्कि यह प्रारम्भिक स्तर के समाजीकरण की संस्थाओं की भूमिकाओं को भी सतत् रूप से प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप, यह समाज के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक संदर्भों को भी पुनर्निर्मित करता है। सामाजिक दृष्टिकोण से विद्यालय प्रारम्भिक स्तर के संस्थाओं का विस्तार है जो न केवल एक समाज विशेष में बच्चे एवं बचपन को गढ़ने में सक्रिय भूमिका निभाता है बल्कि यह स्वयं भी सामाजिक विमर्शों एवं संदर्भों से नियंत्रित होता है। अनुभव के स्तर पर विद्यालय सामाजिक–सांस्कृतिक तथा ज्ञानात्मक संदर्भ में अंतःक्रियात्मक स्थान है जिसमें समस्त गतिविधियाँ बच्चे एवं बचपन के इर्द–गिर्द केन्द्रित होती हैं। बच्चे और बचपन से सम्बंधित ये अंतःक्रियायें समय व स्थान के सापेक्ष बहुल अर्थों को प्रतिबिम्बित करती हैं। साथ ही, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के रूप में विद्यालयी शिक्षा निरन्तर ज्ञानमीमांसीय प्रश्नों से भी मुखातिब होती रहती है। इस संदर्भ में अलग–अलग पृष्ठभूमियों से आने वाले बच्चों की विविधताओं को जानना तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उन विविधताओं को स्थान देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय तथा उसकी गतिविधियाँ विद्यालय के बाह्य स्थापित कारकों से भी प्रभावित व संचालित होती हैं। इस संदर्भ में विद्यालय, अभिभावक, समुदाय तथा समाज के मध्य अंतर्सम्बंधों की समझ व समीक्षा एक शिक्षक को अपनी कक्षा में बाल–केन्द्रित व लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाने में समर्थ बनाती है। विद्यालयी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आकार देनेवाली पाठ्यचर्या तथा बच्चों के आस–पास के संदर्भ को समेटे स्थानीय पाठ्यचर्या की समझ को इस विषयपत्र में शामिल किया गया है। साथ ही, शिक्षकों में अध्ययनशीलता तथा समीक्षात्मक चिंतन निर्मित करने के लिये कुछ चिंतकों की शिक्षा से सम्बंधित मूल रचनाओ को भी यहाँ लिया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- बच्चे और बचपन से सम्बंधित विभिन्न परिप्रेक्ष्यों की समझ को विकसित करना।
- बचपन को आकार देनेवाले ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कारकों की भूमिकाओं को समझना।
- विद्यालय की भूमिका को समाजीकरण के संदर्भ में विश्लेषित करने की समझ बनाना।
- शिक्षा और ज्ञान के अवधारणा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना।
- भारतीय चिंतकों की शैक्षिक रचनाओं के आधार पर उनकी शैक्षिक विचारों से अवगत होना तथा समकालीन परिदृश्य में उन विचारों की सार्थकता की समीक्षा करना।
- पाठ्यचर्या की समझ और स्थानीय पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व की समझ बनाना।

समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ

पूर्णांक : 100 (70+30) **F-1** **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई–1 : बच्चे, बचपन और समाज

- बच्चे तथा बचपन : सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक समझ
- समाजीकरण की समझ : अवधारणा, कारक तथा विविध संदर्भ
- बच्चों का समाजीकरण : माता–पिता, परिवार, पड़ोस, जेण्डर एवं समुदाय की भूमिका
- बाल अधिकारों का संदर्भ : उपेक्षित वर्गों से आनेवाले बच्चों पर विशेष चर्चा के साथ

बच्चे तथा बचपन की संकल्पना काल व स्थान के अनुसार सदैव बदलती रही है जिसके संदर्भ में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा शैक्षिक विमर्शों की बहुलता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक परिवार, समुदाय तथा समाज अपने बच्चों एवं उनके बचपन को भिन्न–भिन्न नजरिये से देखता है तथा विभिन्न तरीकों से उनके विकास की व्यवस्था करता है। अतः हर बच्चे का बचपन एक जैसा नहीं होता है। अपने अलग–अलग संदर्भ में बच्चों की आकांक्षाओं, खुशी, चुनौती, संघर्ष आदि में भी कई अंतर होते हैं। इस संदर्भ में, प्राथमिक समाजीकरण की प्रक्रिया तथा बाल अधिकारों की समीक्षात्मक समझ हर शिक्षक या शिक्षिका को होनी चाहिए, जिससे वे यह समझ पाएंगे कि विद्यालय में आने से पहले के समय में बच्चों के समाजीकरण पर किन–किन कारकों का कैसा प्रभाव पड़ता है। इस इकाई में प्राथमिक समाजीकरण के अंतर्गत जेण्डर की केवल परिचयात्मक चर्चा होगी जिसकी विस्तृत चर्चा दूसरे सत्र में की जाएगी। इसके अलावा, प्राथमिक समाजीकरण के अन्य कारकों की व्यापक चर्चा इस इकाई में होनी है।

इकाई–2 : विद्यालय और समाजीकरण

- शिक्षा, विद्यालय और समाज : अंतर्सम्बंधों की समझ
- विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया : विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ
- शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालय : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक आधार

विद्यालय स्वयं में परवर्ती समाजीकरण (सेकेण्डरी सोशियलाइजेशन) की एक संस्था है जहां समाज तथा विद्यालय एक दूसरे से परस्पर अंतःक्रिया करते हुये बच्चे तथा बचपन दोनो को पुनर्निर्मित करते है। विद्यालय में शिक्षा–दीक्षा के साथ–साथ हमउम्र समूह, मित्र मण्डली, प्रतिस्पर्धा, आपसी संघर्ष, उग्रता, उपलब्धि आदि के माध्यम से बच्चों का समाजीकरण अनवरत चलता रहता है। साथ ही, विद्यालय में बच्चों की जेण्डर आधारित अंतःक्रिया भी निरन्तर चलती रहती है। विद्यालय के बाहर का सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश इस अंतःक्रिया को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत इकाई में उक्त गतिशीलताओं के संदर्भ में व्याप्त विमर्शों की समझ प्राप्त की जायेगी। सामाजिक–सांस्कृतिक के साथ–साथ, विद्यालय में आर्थिक एवं राजनैतिक कारकों का भी बच्चों के समाजीकरण में विशेष भूमिका होती है, जिनकी समझ इस इकाई में बनाई जाएगी।

इकाई–3 : शिक्षा और ज्ञान : विविध परिप्रेक्ष्यों की समझ

- शिक्षा : सामान्य अवधारणा, उद्देश्य एवं विद्यालयी शिक्षा की प्रकृति
- शिक्षा को समझने के विभिन्न आधार/दृष्टिकोण : दर्शनशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षा का साहित्य, शिक्षा का इतिहास, आदि
- ज्ञान की अवधारणा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
- ज्ञान के विविध स्वरूप एवं अर्जन के तरीकें

शिक्षा क्या है? यह किस मूल्य विमर्श का प्रतिनिधित्व करती है? ज्ञान क्या है? इसकी प्रकृति क्या है? इसकी प्राप्ति तथा प्रमाणिकता के स्रोत क्या हैं? इत्यादि आधारभूत प्रश्न शिक्षायी विमर्श के महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं। प्रस्तुत इकाई में शिक्षा की विभिन्न अवधारणाओं पर समीक्षायी चर्चा बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में की जाएगी। साथ में ज्ञान की विविध अवधारणाओं, उनको पोषित करनेवाली विभिन्न व्यवस्थाओं तथा उनके अर्जन के विभिन्न तरीकों की चर्चा की जाएगी, ताकि प्रशिक्षु में यह क्षमता विकसित हो सके कि वे शिक्षा और ज्ञान के विभिन्न स्वरूपों में अंतर तथा उनका विश्लेषण करना सीख सकें। यह विद्यालय में शिक्षा की प्रक्रिया को समझने के लिए जरूरी है।

इकाई–4 : प्रमुख चिंतकों के मौलिक लेखन की शिक्षाशास्त्रीय समझ

- महात्मा गाँधी–हिन्द स्वराज : सामाजिक दर्शन और शिक्षा के संबंध को रेखांकित करते हुए
- गिजुभाई बधेका–दिवास्वप्न : शिक्षा में प्रयोग के विचार को रेखांकित करते हुए
- रवीन्द्रनाथ टैगोर–शिक्षा : सीखने में स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- मारिया मांटेसरी–ग्रहणशील मन पुस्तक से 'विकास के क्रम' शीर्षक अध्याय : बच्चों के सीखने के सम्बंध में विशेष पद्धति को रेखांकित करते हुए
- ज्योतिबा फुले–हंटर आयोग (1882) को दिया गया बयान : शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानता को रेखांकित करते हुए
- डॉ. जाकिर हुसैन–शैक्षिक लेख : बालकेन्द्रित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए
- जे.कृष्णमूर्ति–'शिक्षा क्या है' : सीखने–सिखाने में संवाद की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- जॉन डीवी–शिक्षा और लोकतंत्र से 'जीवन की आवश्यकता के रूप में शिक्षा' शीर्षक लेख : शिक्षा और समाज की अंतक्रिया को रेखांकित करते हुए

शिक्षाशास्त्र को एक सार्वभौम तथा चिंतनशील गतिविधि के रूप में स्थापित करने तथा शिक्षकों में अध्ययनशीलता तथा सकारात्मक चिंतन विकसित करने के लिये कुछ प्रमुख चिंतकों की मूल रचनाओं की समीक्षायी अध्ययन करना आवश्यक है। इससे शिक्षा के विविध परिप्रेक्ष्यों की समझ बनती है। प्रस्तुत इकाई में उपरोक्त उल्लेखित व्यक्तियों की मौलिक रचनाओं के माध्यम से उनके शैक्षिक चिंतन की समीक्षा प्रशिक्षु कर पाएंगे।

इकाई–5 : पाठ्यचर्या की समझ : बच्चों तथा समाज के संदर्भ में

- पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा विविध आधार
- बच्चों की पाठ्यपुस्तकें : शिक्षा, ज्ञान एवं समाजीकरण के माध्यम के तौर पर
- स्थानीय पाठ्यचर्या की समझ

पाठ्यचर्या को वर्त्तमान समय में शिक्षा की धुरी के रूप में स्वीकार किया जाता है। विद्यालय के संस्थायी चरित्र को पुनर्बलित तथा निर्मित करने की प्रक्रिया में पाठ्यचर्या तथा शिक्षकों के शिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। साथ ही, पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से भी शिक्षा, ज्ञान और समाजीकरण की कई अप्रत्यक्ष प्रक्रियाएं भी चलती रहती हैं, जो शिक्षक द्वारा निर्देशित नहीं होते हैं बल्कि शिक्षक अवचेतन तौर पर उनसे निर्देश प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही, स्थानीय पाठ्यचर्या और संदर्भ–आधारित शिक्षण पर भी गौर करने की जरूरत है क्योंकि शिक्षक को इस आधार पर कठघरे में खड़ा किया जाता है कि वे बच्चों को उनके अनुसार नहीं पढ़ाते हैं। यह मामला शिक्षक के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ एवं अभिकर्ता के तौर पर उसकी क्षमता से भी सम्बंधित है, जिसकी चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

प्रस्तावित कार्य

- विद्यालय और समुदाय के अन्तर्सम्बंध के विषय में शिक्षकों तथा समुदाय के सदस्यों से साक्षात्कार कर प्रतिवेदन तैयार करें। साक्षात्कार के लिए संरचित अनुसूची बनाएं।
- विद्यालय न जानेवाले बच्चों तथा विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों का व्यक्तिवृत्त अध्ययन (केस स्टडी) करें।
- आस–पास के क्षेत्रों में होने वाले मेले एवं त्योहारों के सांस्कृतिक व शैक्षिक महत्त्व की समीक्षा करें।
- आपके विद्यालय व समुदाय का सम्बंध तथा दोनों स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में एक दूसरे की भागीदारी के उपलब्ध अवसरों को चिन्हित करें।
- बाल अधिकार पर केन्द्रित सेमिनार या संगोष्ठी का आयोजन प्रशिक्षण केन्द्र पर करें।
- किसी भी विषय से सम्बंधित एक स्थानीय पाठ्यचर्या का निर्माण करें।
- शिक्षा से सम्बंधित कुछ लेखों का संकलन करके उनकी समीक्षा करें।
- अपने मुहल्ले/टोले/गाँव/शहर के विभिन्न समुदाय और आयुवर्ग के बच्चों तथा माता–पिता की अंतःक्रिया का अध्ययन। (अवलोकन, बातचीत, विश्लेषण)
- बच्चों तथा बचपन के सम्बंध में पड़ोस, मुहल्ला/गाँव/शहर तथा विद्यालय की मान्यताओं तथा दृष्टिकोण का अध्ययन।
- प्रारम्भिक कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी का अवलोकन/अध्ययन।
- प्रारम्भिक कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के विद्यालय के बाहर की गतिविधियों का अध्ययन।
- अलग–अलग कक्षाओं के विद्यार्थियों के मध्य होनेवाले बातचीत के विषयों का विश्लेषण करना।
- एक ऐसी पुस्तक जो इस पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है, का चयन कर उसका समीक्षात्मक अध्ययन करें। पुस्तक के चयन के आधारों को सूचीबद्ध करें।

F-2

बचपन और बाल विकास

संदर्भ

हर बच्चे के विकास की अपनी अलग प्रक्रिया होती है, अतः सभी बच्चों का बचपन एक जैसा नहीं हो सकता। साथ ही, उनके वृद्धि एवं विकास के विभिन्न आयामों में भी कई भिन्नताएं होती हैं। इसी संदर्भ में मनोगत्यात्मक विकास की समझ प्रशिक्षुओं में होनी चाहिए ताकि वे बच्चों द्वारा की जाने वाली सामान्य क्रियाओं के विषय में सूक्ष्म व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। वर्तमान में सृजनात्मकता को विद्यालयी शिक्षा में विशेष स्थान देने पर जोर दिया जा रहा है। बच्चों को सृजनात्मक तौर पर सीखने–सिखाने के माहौल से जोड़ने के लिए अभिप्रेरणात्मक माहौल को बनाने की अपेक्षा होगी और सीखने की प्रक्रिया को रूढ़ीवादी दृष्टिकोण से आगे ले जाना होगा। जैसे कि खेल एक सशक्त माध्यम है सीखने–सिखाने का, लेकिन अधिकतर यह मानते हैं कि यह मनोरंजन मात्र का साधन है। एक शिक्षक या शिक्षिका को इन बिन्दुओं पर गहराई से सोचने–समझने की जरूरत है तभी वे अपने शिक्षण को प्रभावी बना पाएंगे। उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बंधित कुल पांच इकाइयों को इस विषयपत्र के पहले भाग में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह अपेक्षा है कि सभी प्रशिक्षु व प्रशिक्षक बाल विकास के इन विभिन्न आयामों को अपने शिक्षायी चिंतन एवं सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में शामिल करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- बचपन के बारे में मनो–सामाजिक अवधारणाओं की समझ को विकसित करना।
- बाल विकास की अवधारणा तथा इसका सीखने से अंतर्सम्बधों का विश्लेषण करना।
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना।
- सीखने में सृजनात्मकता की भूमिका को समझना।
- बच्चों के सीखने–सिखाने में खेल की भूमिका का विश्लेषण करना।
- बच्चों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना।
- संवेगात्मक एवं नैतिक विकास की अवधारणा को समझना।

बचपन और बाल विकास

पूर्णांक : 100 (70+30) | **F-2** | **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई–1 : बचपन व बाल विकास की समझ

- बच्चे तथा बचपन : मनो–सामाजिक अवधारणा
- बचपन को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारक
- बाल विकास : अवधारणा, विकास के विविध आयाम, प्रभावित करनेवाले कारक
- वृद्धि एवं विकास : अंतर्सम्बंधों की समझ, अध्ययन के तरीके

बच्चे तथा बचपन की संकल्पना काल व स्थान के अनुसार सदैव बदलती रही है जिसके संदर्भ में मनो–सामाजिक तथा शैक्षिक विमर्शों की बहुलता है। इस इकाई में बच्चे तथा बचपन की मनो–सामाजिक अवधारणा को स्पष्ट किया जाएगा । इस अवधारणा को जानने के उपरांत शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मनो–सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समझ सकेंगे तथा उम्र के सापेक्ष अधिगम कार्य संपन्न करवाने में उन्हें आसानी होगी। बचपन की विशेषताओं के आधार पर शिक्षक तथा माता–पिता उनके विकास की व्यवस्था करता है। इस हेतु उन्हें बाल विकास की अवधारणा, विकास के विभिन्न आयाम, वृद्धि एवं विकास में अंतर्सम्बंध तथा प्रभावित करनेवाले कारक की व्यापक चर्चा इस इकाई में की जायेगी तथा साथ ही वृद्धि एवं विकास के अध्ययन के तरीके का भी विश्लेषण किया जाएगा।

इकाई–2 : बच्चों का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास

- शारीरिक विकास की समझ
- मनोगत्यात्मक विकास की समझ
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास की समझ

एक स्वस्थ बच्चे में ही स्वस्थ मस्तिष्क व चिंतन का विकास संभव है। अतः मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से बच्चे के शारीरिक विकास को अति महत्त्वपूर्ण माना गया है। इसी संदर्भ में मनोगत्यात्मक विकास की समझ प्रशिक्षुओं में होनी चाहिए ताकि वे बच्चों द्वारा की जाने वाली सामान्य क्रियाओं के विषय में सूक्ष्म व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। शारीरिक व मनोगत्यात्मक विकास सिर्फ शरीर से सम्बद्ध नहीं है बल्कि उनका प्रभाव बच्चे से जुड़ी सीखने की अन्य प्रक्रियाओं पर भी पड़ता है। अतएव, शिक्षक, माता–पिता व समुदाय बच्चों के शारीरिक व मनोगत्यात्मक विकास में क्या भूमिका निभा सकते हैं इसे भी समझना आवश्यक है। इन सभी विषयों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की जायेगी।

इकाई–3 : बच्चों में सृजनात्मकता

- सृजनात्मकता : अवधारणा, बच्चों के संदर्भ में विशेष महत्त्व
- बच्चों में सृजनात्मक विकास हेतु विविध तरीकें
- सृजनात्मकता : प्रभावित करने वाले कारक

आज हम सब सीखने में सृजनात्मकता के महत्त्व को समझ रहे हैं। नवाचारी शैक्षिक विमर्शों में यह जोर देकर कहा जा रहा है कि बच्चे अपनी सृजनात्मकता के कारण बेहतर सीख सकते हैं। अतः शिक्षक या शिक्षिका के लिए यह जरूरी है कि वह बच्चों में निरन्तर सृजनात्मकता के पोषण के लिए रास्ते तैयार करें। इसके लिए क्या तरीके होने चाहिए तथा शिक्षक की उसमें क्या भूमिका हो, इसपर चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

इकाई–4 : खेल और बाल विकास

- खेल से आशय : अवधारणा, विशेषता, बच्चों के विकास के संदर्भ में महत्त्व
- बच्चों के खेल : विविध प्रकार एवं संदर्भ
- बच्चों के विविध खेल : सीखने–सिखाने के माध्यम के रूप में

बच्चों के सीखने में उनके खेल की भी अहम भूमिका होती है। बच्चे दिन भर खेल में लगे रहना चाहते हैं। यह खेल सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं है जैसा कि आम धारणा है, बल्कि बच्चों के विकास के सबसे प्रभावी कारकों में से एक है। खेल के माध्यम से बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं नैतिक विकास को सम्बोधित किया जा सकता है। सीखने–सिखाने के दृष्टिकोण से खेलों के विविध स्वरूपों को अपनाने से बच्चे खेल–खेल में ही वैसी अवधारणाओं से आसानी से समझ जाते हैं जो वे कक्षाकक्ष में प्रत्य़क्ष शिक्षण से नहीं समझ पाते हैं। अतः सीखने के संदर्भ में खेलों को समझना और अपने शिक्षण में उनका इस्तेमाल करना हर शिक्षक या शिक्षिका के लिए जरूरी है। इन सब बिन्दुओं पर इस इकाई में चर्चा की गई है।

इकाई–5 : बच्चे और व्यक्तित्व विकास

- व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एरिक्सन के सिद्धांत का विशेष संदर्भ
- बच्चों में भावनात्मक/संवेगात्मक विकास का पहलू : जॉन बाल्बी का सिद्धांत एवं अन्य विचार
- नैतिक विकास और बच्चे : सही–गलत की अवधारणा, ज्यां पियाजे तथा कोह्लबर्ग का सिद्धांत

सीखने–सिखाने का बच्चों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साथ ही, बच्चों के परिवेश का भी उनके व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका है। अतः, बच्चों के विकास को सकारात्मक दिशा देने के लिए हर शिक्षक या शिक्षिका के लिए व्यक्तित्व विकास के वैसे पहलुओं को समझना जरूरी है जिनसे हर व्यक्ति को गुजरना होता है। भावनात्मक एवं नैतिक पहलुओं का व्यक्तित्व विकास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिनसे सम्बंधित सैद्धांतिक बिन्दुओं की समझ शिक्षकों को इस इकाई में दी जाएगी। इनकी स्पष्ट समझ से शिक्षकों को वह बल मिलता है जिससे वे अपने विद्यार्थियों के सीखने को प्रभावी तौर पर बाल केन्द्रित व सार्थक बना सकते हैं।

प्रस्तावित कार्य

- विद्यालय के किसी कक्षा के बच्चों के वृद्धि एवं विकास का अध्ययन करने के लिए एक योजना बनाएं तथा उसके आधार पर आंकड़ों को एकत्र करके उनका विश्लेषण करें।
- बच्चा जब जन्म लेता है तो उसके शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास के लिए, हमारे समाज के किस–किस प्रकार की व्यवस्था की जाती है, उसका एक केस–स्टडी करें।
- विद्यालय में बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास के लिए क्या–क्या व्यवस्थाएं हो सकती हैं, इसका अध्ययन करें।
- मिड–डे मील का बच्चों के शारीरिक विकास पर कैसा असर पड़ता है, इस संदर्भ में समुदाय के लोगों से बातचीत करें तथा उनके जवाबों का विश्लेषण करें।
- अध्ययन केन्द्र/प्रशिक्षण संस्थान पर ब्लैक, सलाम बॉम्बे, स्लम डॉग मिलिनीयर, तारे जमीन पर, आई एम कलाम, स्टेनले का डब्बा, आदि में से कुछ फिल्मों को समूह में देखने के पश्चात विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों की आवश्यकताओं के संदर्भ में समूह चर्चा करना।
- बच्चों के सृजनात्मकता के कुछ उदाहरणों को प्रस्तुत करें जो आप अपने विद्यालय में पाते हैं। आप उसे सृजनात्मक क्यों मानते हैं, यह भी बताएं।
- कुछ ऐसे स्थानीय खेलों का चयन करें जो बच्चों द्वारा मजे से खेला जाता है। उन खेलों के माध्यम से बच्चे कौन–कौन सी अवधारणाओं को सीखने हैं, इसका भी विश्लेषण करें।
- विद्यालय बच्चों के व्यक्तित्व विकास को किस प्रकार आकार देता है, इसका अध्ययन करें। क्या आपको लगता है कि विद्यालय में बच्चों के व्यक्तित्व विकास को नकारात्मक तौर से सम्बोधित किया जाता है, अध्ययन के आधार पर विश्लेषण करें।

F-3

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

संदर्भ

यह वैज्ञानिक स्तर पर सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति के मस्तिष्क का 85—90 प्रतिशत तक विकास 5 वर्ष की आयु तक हो चुका होता है। मस्तिष्क का यह विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बुनियाद तैयार करता है। इसलिए प्रारंभिक वर्षों में बच्चे को मिलने वाली देखभाल और शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। बच्चों के विकास तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा अर्थात् ईसीसीई के संबंध में यह समझना आवश्यक है कि जिन बच्चों को उचित पोषण के साथ—साथ भरपूर स्नेह, सुरक्षा, बातचीत व खेल के अवसर, अभिव्यक्ति के अवसर, प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता है, उसका विकास बेहतर होता है। यही सब तो गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों के आयोजन का आधार है। इनसे बच्चे के विकास के प्रमुख आयामों, जैसे कि शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, भाषा संबंधी, सामाजिक, सृजनात्मक तथा सौन्दर्यबोध के विकास को दिशा प्राप्त होती है। जब बच्चों को यह सब प्राप्त होता है तो वे आगे चलकर न केवल विद्यालय में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी जीवन में कहीं अधिक सफल सिद्ध होते हैं। उपरोक्त चर्चा इस बात को रेखांकित करती है कि यदि हमें बच्चों को शिक्षा प्रदान करनी है तो इसकी शुरूआत प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से ही करनी होगी। बिहार राज्य में भी प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में अभी बहुत कार्य किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 तथा राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति, 2013 के आलोक में यह आवश्यक है कि प्रत्येक शिक्षक इस तथ्य को समझें एवं इसके प्रति संवेदनशील हों कि हर बच्चे के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हमें इस दिशा में अभी बहुत प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे कि सभी बच्चों को विद्यालय में प्रवेश से पहले इसके लिए तैयार होने के भरपूर अवसर प्राप्त हों। यह विषय इस दिशा में शिक्षकों को सूचना, समझ, कौशल तथा संवेदनशीलता प्रदान करने का प्रयास है।

उद्देश्य

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल से जुड़ी प्रमुख अवधारणाओं की समझ बनाना।
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम के माध्यम से बाल विकास के विभिन्न आयामों एवं इसके महत्त्व को समझना।
- बिहार के संदर्भ में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति और प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका पर समझ बनाना।
- शिक्षकों को कक्षा—कक्ष में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित अवधारणाओं के अनुरूप गतिविधियों के आयोजन के कौशलों को विकसित करना।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

पूर्णांक : 100 (70+30) **F-3** **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई– 1 : 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' की समझ

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएं
- ईसीसीई की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव
- बच्चे कैसे सीखते हैं : बाल विकास की अवस्थाएं (0–3, 3–6, 6–8 वर्ष), उप–अवस्थाएं एवं सीखना

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा इस अर्थ में विशिष्ट है कि इसमें बाल विकास के विभिन्न आयाम तथा अधिगम साथ–साथ चलते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा अर्थात् ईसीसीई पाठ्यचर्या उन सभी विषयों तथा आवधारणाओं पर चर्चा करता है जिससे बच्चों के विकास के विभिन्न आयाम तथा उनके अधिगम पर प्रभाव पडता हो। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे यह समझें कि हर बच्चे के लिए बाल विकास की अवस्थाओं व उप–अवस्थाओं के अनुरूप सीखने का भरपूर अवसर मिलना, उनके सीखने की प्रक्रियाओं के लिए महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक बच्चों के अधिगम में सहायक होने की अपनी भूमिका बेहतर ढ़ंग सें निभाने से पहले प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की विभिन्न अवधारणाओं को समझें तथा इनके अनुरूप कार्य करने के लिए आवश्यक कौशलों का विकास करते हुए तैयारी करें।

इकाई– 2 : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ

- एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या की समझ
- ईसीसीई पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन
- गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों/प्रक्रियाओं का चयन (उदाहरण– विषयवस्तु आधारित प्रक्रिया, प्रोजेक्ट विधि आदि)
- कक्षा में विकासोनुकुल, बाल केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण

प्रेरक, उद्दीपक तथा सुरक्षात्मक वातावरण में बच्चों सही विकास होता है तथा अधिगम की बेहतर संभावनाएं बनती है। बच्चों में अपने आस–पास के वातावरण तथा घटित हो रही प्रत्येक घटना के प्रति जिज्ञासा होती है। इससे लगातार उनके ज्ञान तथा समझ में बढोतरी होती रहती है। साथ ही वे परस्पर अन्तःक्रिया से भी सीखते हैं। इस प्रकार बच्चे एक–दूसरे से, अपने से बड़ों से, अपने पर्यावरण/आसपास के विभिन्न तत्त्वों से अन्तःक्रिया करके सामाजिक और ज्ञानात्मक दृष्टि से अधिक लाभान्वित होते हैं। इस स्वाभाविक स्थिति को सीमित करने का वातावरण मिलने पर या भावनात्मक असुरक्षा और अनुचित व्यवहार मिलने पर स्वाभाविक प्रेरणा और जिज्ञासा कुंठित हो सकती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यचर्या कक्षा कक्ष में प्रक्रियाओं को बच्चों की आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के अनुरूप आयोजन की आवश्यकता पर जोर देते हुए इसकी विभिन्न प्रक्रियाओं व प्रविधियों के चयन व आयोजन के तरीकों पर भी चर्चा करता है। इस पाठ्यचर्या को लागू करने के संदर्भ में एक संस्था के रूप में विद्यालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक पूरी प्रक्रिया में सबसे अधिक प्रभावित करने वाले स्थान पर विराजमान हैं अतः उन्हें अपनी भूमिका से जुडी चुनौतियों को जानना व समझना होगा, तभी वे बेहतर परिणाम का लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति कर पायेंगे।

इकाई– 3 : प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी

- प्राथमिक विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ एवं आधार
- प्रारंभिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्त्व
- विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल

शिक्षकों की बच्चों के बारे में, उनके सीखने के बारे में व उनकी योग्यताओं के बारे में समझ, उनकी कक्षा–कक्षीय गतिविधियों और कार्य को प्रभावित करती हैं। उनकी समझ इस बात को भी प्रभावित करती है कि वे किस प्रकार बच्चों को सीखने में मदद करते हैं व इस बारे में क्या व कैसे निर्णय लेते हैं ? एक शिक्षक द्वारा बच्चों की क्षमताओं, कौशलों और अभिरूचियों को ध्यान में रखते हुए ही खेल व सीखने से जुडी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। यह तब और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है जब एक शिक्षक न प्रक्रियाओं को जानते है जो बच्चे के विद्यालय आने से पहले उनकी भाषा तथा गणितीय कौशल के लिए अपनायी जाती है। इनका ज्ञान शिक्षकों को तब भी काम आता है जब वे विद्यालय में छात्रों के लिए इन्हीं कौशलों से जुडी गतिविधियों के आयोजन करते हैं। पूर्वज्ञान का यह उपयोग इस बात को भी प्रभावित करते हैं कि वे बच्चों को सीखने में मदद हेतु किस तरह के वातावारण एवं क्रियाकलापों का प्रयोग करते हैं।

इकाई– 4 : बच्चे की प्रगति का आकलन

- प्रारंभिक वर्षों मे विकास के विभिन्न आयाम एवं अधिगम
- बच्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक
- बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आंकलन
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति से संबंधित अभिलेखों का संधारण
- बच्चे की प्रगति में घर एवं विद्यालय की भूमिकाओं का अन्तर्संबंध
- विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चे तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति को जानने से पहले बच्चे की क्षमताओं का सही आकलन करना शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण है। जब शिक्षक प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का सही अनुमान लगाने का प्रयास करते है तभी वे प्रत्येक बच्चे के सीखने के लिए कक्षा कक्ष में सर्वोपयुक्त गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन कर सकते हैं। इन गतिविधियों का आयोजन एवं उपयोग बच्चों के विकास में सहयोग एवं इसके लिए उन्हें बेहतर वातावरण एवं अवसर उपलब्ध कराने की अवधारणा के अनुरूप किया जाता है। गतिविधियों के आयोजन के बाद इस बात का पता लगाना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि इन गतिविधियों का आयोजन अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में कितना सफल हुआ है तथा इससे बच्चे के विकास के आयामों को कितनी दृढता प्राप्त हुई है। मजबूत नींव सुनिश्चित करने के लिए करें। बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आंकलन कर ही शिक्षक, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का आंकलन कर सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में आकलन तब एक बडी चुनौती के रूप में सामने आता जब शिक्षक को यह आकलन एक विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चे के लिए करना होता है। ऐसे में आकलन में समावेशन की समझ में स्पष्टता प्रत्येक शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

इकाई– 5 : बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

- बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने का अर्थ
- राज्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियां एवं नवाचार
- राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक व सामाजिक) से अपेक्षा

बिहार ने शिक्षा के क्षेत्र में पूरे देश के सामने कई उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये हैं परंतु प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में कई प्रयासों के बावजूद अभी राज्य को ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने से पहले अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। राज्य में अभी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा तक पहुँच अभी सीमित है। जिन बच्चों के पास ऐसे अवसर हैं उनमें से 3–6 वर्ष के बच्चे अधिकांशतः आँगनबाडी अथवा प्ले स्कूल से जुडे होते हैं वहीं 6–8 वर्ष के बच्चे विभिन्न विद्यालयों में नामांकित होते हैं। कई बार तो देखा जाता है कि बच्चों को 6 वर्ष से पहले भी विद्यालयों में नामांकित करा दिया जाता है। ऐसे में शिक्षकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की विभिन्न अवधारणाओं को समझें तथा इसके लिए कार्य करने के लिए स्वयं को तैयार करें। जहाँ प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों को विशिष्ट तैयारी की आवश्यकता होती है वहीं ऐसे शिक्षकों को विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक कौशल तथा संवेदनशीलता भी अवश्य होनी चाहिए। बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में उन्हें मिला वातावारण, स्नेह, सुरक्षा तथा प्रेरण ही उनके भविष्य की बुनियाद का निर्माण करता है। अतः इस दौरान शिक्षकों पर केवल बच्चों की शिक्षा का ही नहीं अपितु उनके भविष्य को आधार और दिशा प्रदान करने का भी दायित्त्व होता है।

प्रस्तावित कार्य

- उन अवसरों को सूचीबद्ध करें जब आप ऐसे उनके परिवारों तक पहुँच सकते हैं, जिनमें ऐसे बच्चे हैं जो विद्यालय में नामांकन की आयु तक पहुँचने वाले हैं।
- अपने विद्यालय में (जहाँ आप सेवारत हैं), वहाँ पहली कक्षा में नमांकित बच्चों के संबंध में यह जानकारी एकत्र करें कि क्या उन्हें किसी प्रकार की प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (आंगनबाडी अथवा प्ले स्कूल आदि के माध्यम से) प्राप्त हुई है? अवलोकन तथा वर्ग शिक्षक से चर्चा के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्राप्त तथा इससे वंचित बच्चों के प्रदर्शन में भिन्ताओं को विकास के विभिन्न आयामों के आलोक में समझने का प्रयास कर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- अपने विद्यालय के (जहाँ आप सेवारत हैं) आसपास मौजूद किसी आंगनबाडी केन्द्र जाकर वहाँ चलने वाली प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा संबंधित प्रक्रियाओं का पता लगाकर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- किसी आंगनबाडी केन्द्र अथवा प्ले स्कूल एवं विद्यालय की पहली कक्षा के पाठ्क्रम का तुलनात्मक अध्ययन कर पता लगाएं कि क्या इन दोनों के बीच कोई सार्थक संबंध है। अपने तर्क को प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करें।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्राप्त तथा इससे वंचित बच्चों के माता–पिता से बात कर यह समझने का प्रयास करें बच्चे की प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की क्या भूमिका होती है।
- ऐसे बच्चे जिन्हें विद्यालय में नामांकन से पहले किसी प्रकार की संस्थागत प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्राप्त नहीं हुई हो, उनके लिए विद्यालय तत्परता/विद्यालय की तैयारी के लिए एक माह का प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम तैयार करें।
- कक्षा 1 तथा कक्षा 4 तथा 5 के आंकलन प्रपत्रों/प्रश्न पत्रों का अध्ययन कर यह पता लगाएं कि आयु अनुरूप आंकलन का क्या महत्त्व है तथा यह भी समझने का प्रयास करें कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में आंकलन की प्रक्रिया किन अर्थों में विशिष्ट है।

F-4

विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास

संदर्भ

विद्यालय में शिक्षक के ऊपर शिक्षण के साथ–साथ अच्छे प्रबन्धन एवं कुशल नेतृत्व प्रदान करने की जिम्मेवारी भी होती है। इसके लिये शिक्षक को बदलते समय एवं परिवेश के अनुसार स्वयं के कार्य–संस्कृति में बदलाव लाना अपेक्षित है ताकि वह विद्यालय प्रबंधन के नवाचारी परिवर्तनों को अपने विद्यालय में प्रयोग कर सके। विद्यालय की कार्य–संस्कृति समुदाय से प्रभावित होती है इसलिए प्रशिक्षुओं को विद्यालय के संचालन में समुदाय की सहभागिता की भी स्पष्ट समझ होनी चाहिए। वर्तमान समय की अपेक्षाओं एवं परिस्थितियों के आलोक में विद्यालय के विभिन्न आयामों में परिवर्तन पर भी जोर दिया जा रहा है। कक्षावार प्रबन्धन में बालिकाओं एवं विभिन्न योग्यता व चुनौतियों वाले बच्चों का किस प्रकार कक्षा में समायोजन हो जिससे कि सभी बच्चों को समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके, इसे विद्यालय संगठन व कक्षा प्रबंधन के संदर्भ में समझना अति आवश्यक है। साथ ही, शिक्षक के लिए मूल्यांकन व आकलन की समझ जरूरी है ताकि वे विद्यालय के विभिन्न आयामों में होनेवाले विकास व परिवर्तन को समझ सके और उसे सही दिशा में ले जाने में सक्षम हो पायें। सरकारी व संस्थागत स्तर पर भी शिक्षकों के उन्मुखीकरण हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन उन्हें नई चीजे सीखने एवं कक्षाकक्ष में उनके प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करता है जो न केवल उनमें आत्मविश्वास भरता हैं बल्कि उनके वृतिक विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय प्रबन्धन हेतु शिक्षक को विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं समझ भी जरूरी है। शिक्षक के कार्यो का विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के साथ समन्वय भी एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। अतः विद्यालय के भिन्न–भिन्न कार्यों के अन्तर्गत विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी योजनाओं की भूमिका किस प्रकार से है, इसकी जानकारी एवं समझ शिक्षकों में होनी चाहिए। अतः प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस दृष्टि से विकसित किया गया है कि यह शिक्षक को विद्यालय में अच्छा वातावरण व उचित कक्षा प्रबन्धन हेतु तैयार करे।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- विद्यालय संस्कृति एवं प्रबंधन के विभिन्न आयामों की समझ बनाना।
- विद्यालय में नवाचारी परिवर्तन के विभिन्न संसाधनों एवं तरीकों को समझना।
- कक्षा प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के संदर्भ में उनका विश्लेषण करना।
- विद्यालय में विद्यार्थियों के आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था को समझना तथा विश्लेषण करना।
- शिक्षकों के वृत्तिक विकास के विभिन्न आयामों को समझना।
- विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी योजनाओं की समीक्षा एवं संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करने की योग्यता विकसित करना।

विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास

पूर्णांक : 100 (70+30) **F-4** **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई–1 : विद्यालय संस्कृति और प्रबंधन

- विद्यालय संस्कृति के संगठनात्मक पहलू : अवधारणा, संरचना एवं घटकों की आलोचनात्मक समझ
- विद्यालय प्रबंधन की व्यवस्था और अंतर्निहित मान्यताएं : विभिन्न घटक, कार्य संस्कृति, अनुशासन, समय प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, बाल संसद व मीना मंच की भूमिका
- विद्यालय के प्रबंधन से सम्बंधित दस्तावेजों की समझ : विभिन्न रिकार्ड, संकलन एवं उपयोगिता
- विद्यालय में दिन की शुरूआत : चेतना सत्र की समझ

विद्यालय को केवल एक भवन के रूप में नहीं देखा जा सकता। विद्यालय संस्कृति के बहुआयाम हैं जो एक ओर तो पठन–पाठन की प्रक्रिया में संलग्न होती है और वहीं दूसरी ओर समुदाय के साथ दृढ़ संबंधों का पोषण करती है। विद्यालय प्रबंधन, शिक्षायी विकास श्रृंखला की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण इकाई है जो कि विद्यालय एवं स्थान–विशेष की प्रत्येक गतिविधि से सम्बद्ध होता है। बेहतर प्रबंधन विद्यार्थियों को विद्यालय आने एवं विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करता है। दिन की शुरूआत रूचिकर एवं योजनाबद्ध तरीके से करने का प्रभाव विद्यालय एवं कक्षायी गतिविधियों पर साकारात्मक रूप से पड़ता है। विद्यालय के बेहतर प्रबंधन के लिए समय–सारणी, वार्षिक कार्य योजना, आदि की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही, बच्चों को विभिन्न आपदाओं, उनके प्रभावों व उनसे सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। विद्यालय के संचालन में विभिन्न प्रकार के अभिलेख तैयार करने, उनके उपयोग एवं संधारण की भूमिका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है।

इकाई–2 : विद्यालय में परिवर्तन

- विद्यालय भवन का सृजनात्मक प्रयोग : सीखने सिखाने के माध्यम के रूप में
- शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत विद्यालयी व्यवस्था में परिवर्तन
- समावेशी शिक्षा के अनुरूप विद्यालय संगठन व प्रबंधन
- कला समेकित शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी परिवेश एवं कक्षायी शिक्षण में बदलाव
- सूचना व संचार तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग

बदलते समय के साथ विद्यालयों में भी कई परिवर्तनों की अपेक्षा हैं। शिक्षा का अधिकार कानून–2009 में सभी विद्यालयों को साधन सम्पन्न बनाने वाले प्रावधानों पर विशेष बल दिया गया है। यह कानून विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण व समावेशी शिक्षा के लिए अपेक्षित परिवर्तनों की मांग करता है। इसके साथ ही विद्यालयों में विद्यार्थियों की जरूरतों तथा सूचना एवं तकनीकी में हुए बदलाव के अनुरूप कई परिवर्तनों को लाया जाना स्वाभाविक है, जिनको शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में शामिल करना आज की जरूरत है। आज न केवल विद्यालयों में नई सामग्रियों एवं उपकरणों का प्रयोग अपेक्षित है बल्कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में विद्यालय भवन के सृजनात्मक प्रयोग की संभावना को जानकर शिक्षक व शिक्षिका द्वारा इसका उपयोग किए जाने पर भी जोर दिया जा रहा है ताकि विद्यालय के भौतिक संसाधनों के माध्यम से सीखने–सिखाने का एक प्रभावी वातावरण बनाया जा सके। विद्यालय में कैसे परिवर्तन होने चाहिए तथा उन्हे कैसे किया जा सकता है, इनकी समझ शिक्षक व शिक्षिकाओं के लिए अति उपयोगी है।

इकाई–3 : विद्यालयी शिक्षण की व्यवस्थाएं

- कक्षाकक्ष शिक्षण की प्रकृति : परम्परागत, बालकेन्द्रित, लोकतांत्रिक, सृजनात्मक, आदि
- कक्षाकक्ष संचालन : कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में सम्प्रेषण एवं सीखने–सिखाने के विविध स्तर
- सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) : अवधारणा, योजना निर्माण, क्रियान्वयन तथा स्वमूल्यांकन
- पाठ्य–सहगामी व सह–शैक्षिक क्रियायें : महत्त्व, योजना एवं क्रियान्वयन (गतिविधियाँ, कला, खेल इत्यादि)
- सीखने–सिखाने के दौरान आनेवाली प्रमुख चुनौतियाँ तथा अनुपूरक शिक्षण की व्यवस्था
- विद्यालय में आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था : सतत् एवं व्यापक आकलन, प्रगति पत्रक

विद्यालय हर दिन शिक्षक के नवीन प्रयोगों एवं आयामों को आधार देता है। शिक्षको का न केवल कक्षा के शैक्षिक प्रक्रियाओं के लिए तैयार होना चाहिए बल्कि विद्यार्थियों को पाठ्य सहगामी व सह–शैक्षिक क्रियाओं में शामिल करने एवं बेहतर वातावरण निर्माण के लिए भी तत्पर होना आवश्यक है। इस इकाई में कक्षाकक्ष, कक्षा संचालन एवं सह–शैक्षिक क्रियाओं के विभिन्न पहलुओं पर सविस्तार चर्चा की जायेगी। साथ ही साथ यह इकाई उपचारात्मक शिक्षण एवं उन प्रमुख चुनौतियों के विषय में भी समझ बनाने का प्रयास करती है जो शिक्षकों को वर्तमान परिदृश्य में कक्षा में बेहतर शिक्षण–अधिगम के अवसरों के सृजन के लिए तैयार करे। शिक्षक को मूल्यांकन को विभिन्न विधियों को जानने के साथ ही उनके प्रभावी प्रयोग के तरीको को भी जानना चाहिए। मूल्यांकन का सतत् एवं व्यापक होना विद्यार्थियों की क्षमताओं एवं प्रदर्शन की जानकारी शिक्षकों को देता है। यह शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित एवं तैयार करने के लिए योजना बनाने एवं क्रियांवित करने का दृढ़ आधार भी प्रदान करता है।ए प्रोत्साहित एवं तैयार करने के लिए योजना बनाने एवं क्रियांवित करने का दृढ़ आधार भी प्रदान करता है।

इकाई–4 : शिक्षक वृत्तिक विकास (प्रोफेशनल डेवेलपमेन्ट) के आयाम

- शिक्षक वृत्तिक विकास : अवधारणा, आवश्यकता, नीतिगत विमर्श व सीमायें
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम : आवश्यकता, महत्त्व, प्रकार व स्वरूप
- विद्यालय में नेतृत्व व्यवस्था और शिक्षक : प्रशासनिक, सामूहिक, शिक्षणशास्त्रीय, परिवर्तनकारी
- शिक्षक तनाव प्रबंधन : अवधारणा, तनाव के कारण एवं निदान
- शिक्षक के वृत्तिक विकास में स्वाध्याय, लेखन व सहकर्मियों की भूमिका

शिक्षण की सबसे बड़ी आवश्यकता है शिक्षक का सीखने के लिए तैयार एवं तत्पर रहना। यह सीखना विषयवस्तु अथवा संबंधित सूचनाओं तक सीमित नहीं है। शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वे अपने आस–पास हो रहे परिवर्त्तनों, शिक्षा संबंधी सरकारी नीतियों, तकनीकी विकास आदि को जानने के प्रति सजग रहें। सरकारी/संस्थागत स्तर पर भी शिक्षकों के उन्मुखीकरण हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन उन्हें नई चीजे सीखने एवं कक्षाकक्ष में उनके प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करता है। इनके अतिरिक्त शिक्षक स्वाध्याय तथा लेखन द्वारा स्वयं व सहकर्मियों की जानकारी अद्यतन करने हेतु प्रयत्नशील रहें। नया सीखने का प्रयास तथा नई सूचनाओं एवं विधियों का शिक्षण हेतु उपयोग, शिक्षकों को न केवल आत्मविश्वास प्रदान करते हैं बल्कि उनके वृतिक विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

इकाई–5 : महत्त्वपूर्ण शैक्षिक संस्थाएँ, प्रशिक्षण केन्द्र व सरकारी योजनाओं की समीक्षात्मक समझ

- *विभिन्न संस्थाओं के कार्यों की समझ तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :*
  - निकटवर्ती जिला स्तरीय संस्थाएं : संकुल संसाधन केन्द्र (CRC), प्रखण्ड संसाधन केन्द्र (BRC), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), प्रारम्भिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (PTEC)
  - राज्य स्तरीय संस्थाएं : राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (BEPC), बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड (BSEB), बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड (BSSB), बिहार राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड (BSMEB), बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड (BBOSE)
  - राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE)
  - अन्तर्राष्ट्रीय एवं गैर सरकारी संस्थाएं : यूनिसेफ (UNICEF), वर्ल्ड बैंक (World Bank) व अन्य गैर सरकारी संस्थाएँ
- *शैक्षिक योजनायों से प्रमुख पहलुओं से परिचय तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :*
  - सर्व शिक्षा अभियान (SSA)
  - राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)
  - समेकित बाल विकास योजना (ICDS)
  - बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करनेवाली विशेष योजनाएं
  - उपेक्षित वर्ग के बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करनेवाली विशेष योजनाएं

देश भर में कई ऐसी केन्द्रीय संस्थाएँ हैं जो विद्यालयी शिक्षा को प्रभावित करने वाली नीतियां एवं मार्गदर्शक दस्तावेज तैयार करती है। इनके अतिरिक्त राज्यों में भी शिक्षा संबंधी नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्वयन हेतु कई संस्थाएँ कार्यरत हैं। उपरोक्त संस्थाओं की नीतियाँ एवं दिशा निर्देश विद्यालयों के संचालन एवं प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय की समस्त प्रक्रियाओं के माध्यम से नीतियों के समावेश में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। इन प्रक्रियाओं के लिए शिक्षक समन्वयक एवं अनुपालक की भूमिका निभाते है। अतः उनके लिए इन संस्थाओं के विषय में जानकारी होना आवश्यक है। विद्यालय के विकास हेतु बच्चों को केन्द्र में रखकर सरकारी योजनाएँ बनाई जाती है, जिनका कार्यान्वयन शिक्षक के माध्यम से एवं शिक्षक के द्वारा होता है, इसलिए शिक्षक को इन योजनाओं के संबंध में समझ एवं कार्यान्वयन में तत्परता रखनी चाहिए।

प्रस्तावित कार्य

- अपने आस–पास के किन्हीं दो विद्यालयों को चुनें तथा दोनों के आंतरिक संगठनात्मक स्थिति का विश्लेषण करें।
- विद्यालय में मध्याह्न भोजन के प्रबन्धन व वितरण का अध्ययन तथा विश्लेषण करें।
- विभिन्न प्रकार के अभिलेखों के संधारण हेतु प्रबंधन की योजना तैयार करें।

- विद्यालय शिक्षा समिति के बैठकों में किन–किन बिन्दुओं पर चर्चा होती है, इसका विश्लेषण करें।
- लोकतांत्रिक व समावेशी शिक्षा के लिए आपके अपने विद्यालय की कक्षाओं में क्या–क्या बदलाव लाने की जरूरत है, इसका अध्ययन करें।
- सीखने की योजना के प्रारूप पर अपने विद्यालय के उन साथियों से चर्चा करें जो इससे अवगत नहीं हैं तथा उनको इसे प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- किसी कक्षा का अवलोकन करें तथा उसके संचालन सम्बंधी बिन्दुओं का विश्लेषण करें।
- विभिन्न विद्यालयी विषयों के अवधारणाओं पर सीखने की योजना बनाएं तथा अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर उनके क्रियान्वयन का अभ्यास करें।
- अपने विद्यालय में आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था का आलोचनात्मक समीक्षा करें।
- प्रबन्धन में शैक्षिक संसाधनों की उपयोगिता का अध्ययन करें।
- विद्यालय के समय सारणी की आलोचनात्मक समीक्षा करना तथा वैकल्पिक समय सारणी का निर्माण करें।
- प्रधानाध्यापक, शिक्षा अधिकारी, आदि से विद्यालय प्रबन्धन पर साक्षात्कार लेकर उनका विश्लेषण करें।
- आपके विद्यालय भवन को किस प्रकार से सीखने के साधन के रूप में प्रयोग कर सकते है, इसका अध्ययन करें।
- विद्यालय में क्या क्या परिवर्तन अपेक्षित हैं, इसपर अभिभावकों व समुदाय के लोगों के मतों का विश्लेषण करें।
- शिक्षकों के वृत्तिक विकास से संबंधित किसी कार्यशाला का अध्ययन करें।
- कुछ शैक्षिक संस्थाओं का भ्रमण करें तथा उनके कार्यों का अध्ययन करें।
- विद्यालय में चलनेवाली कुछ शैक्षिक योजनाओं के क्रियान्वयन का केस स्टडी करें।

F-5

भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास

संदर्भ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 के 'मार्गदर्शक सिद्धांत' में से एक है 'ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।' इस सिद्धांत का अर्थ है कि बच्चे के दैनिक जीवन तथा स्कूली–ज्ञान के बीच सीमाओं को लचीला बनाने कि आवश्यकता है। बच्चा जो कुछ सीखता है उसमें भाषा की भूमिका केन्द्रीय है। इसलिए आवश्यक है कि सीखने के संदर्भ में भाषा की भूमिका के बारे में समझ बनाई जाए ताकि किसी भी विषय को समझने के तरीके विकसित किए जा सकें। भाषा अर्जित करने की क्षमता मनुष्य में जन्मजात होती है, लेकिन भाषा का सृजन मानसिक प्रक्रियाओं के द्वारा किया जाता है। भाषा को सम्प्रेषण के रूप में समझने से महत्त्वपूर्ण, भाषा–सृजन की प्रक्रियाओं को समझना है। क्योंकि इसी समझ के सहारे भाषा की भूमिका तथा भाषा सीखने के तरीकों को विकसित किया जा सकता है। भाषा के कारण ही मनुष्य अपने मन की बात को दूसरे को बता पाता है। भाषा के कारण ही मनुष्य दूसरे को छूए बिना भी उससे मदद मांग सकता है तथा दूसरे की मदद कर सकता है। भाषा के कारण ही मनुष्य उस स्थिति को हासिल कर पाता है, जिसमें वह वस्तुओं और प्राणियों की अनुपस्थिति में भी उनके बारे में विचार कर सकता है। बच्चे, भाषा से अनेक काम लेते हैं। वे सवाल पूछते हैं, आदेश देते हैं, विश्लेषण करते हैं, कल्पना करते हैं, वस्तुओं और प्राणियों से जुड़ते हैं, विचार करते हैं, आदि इन सभी कामों के लिये बच्चे, भाषा का प्रयोग करते हैं। स्कूल में इन कार्यों के लिए अवसर उपलब्ध कराएँ जाने चाहिए। इस विषय के माध्यम से प्रशिक्षुओं में दो क्षमताओं का विकास होगा। पहली, वे यह समझ पाएँगे की बच्चे भाषा से कौन–कौन से काम लेते हैं, तथा दूसरी, वे बच्चों की भाषायी क्षमता को बढ़ाने के तरीकों का उपयोग करना सीख पाएँगें। बहुभाषिकता प्रत्येक भाषा की विशेषता है। प्रत्येक भाषा अनेक भाषाओं से मिलकर समृद्ध होती हैं, भाषाओं में हो रहें सहज मेल–जोल के प्रति स्वीकृति का नज़रिया रखना, भाषा को बोझिल होने से बचाता है। बच्चों की भाषा में निहित बहुभाषिकता के गुण को कक्षा में शिक्षणशास्त्रीय स्रोत के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है। यहाँ न केवल अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं बल्कि अनेक भाषायी परिवार भी मिलते हैं। इस बात को समस्या न मानकर, ताकत मानना चाहिए। हर विषय के शिक्षक को यह समझ होनी चाहिए कि उसके द्वारा पढ़े गए विषय का महत्त्वपूर्ण स्रोत भाषा है। इसकी मदद से वह अपने विषय में ज्ञान का सृजन, भण्डारण, सम्प्रेषण, मूल्यांकन एवं संशोधन करता है। इसी कारण भाषा का स्थान स्कूली शिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए जरूरी है कि वह इस तथ्य को समझे और शिक्षक के रूप में इसका उपयोग करे।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- भाषा की प्रकृति के बारे में समझ बनाना।
- प्रत्येक भाषा में निहित बहुभाषिकता को समझना।
- बच्चे भाषा का अर्जन और उपयोग कैसे करते हैं, इस प्रक्रिया को समझना।
- विषय के रूप में भाषा और विभिन्न विषयों के माध्यम के रूप में भाषा की समझ विकसित करना।
- विद्यालय का बच्चों की भाषा पर पड़नेवाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- भाषा और समाज के मध्य रिश्तों के बारे में विवेचनात्मक समझ विकसित करना।
- भाषा के सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक संदर्भों को समझना।

भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास

पूर्णांक : 50 (35+15) **F-5** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

इकाई–1 : भाषा की प्रकृति

- भाषा का अर्थ
- भाषा : – प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में,
  – समझ के माध्यम के रूप में,
  – संप्रेषण के माध्यम के रूप में
- मानव भाषा और पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों की भाषा में अंतर
- भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था : ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, प्रोक्ति (संवाद) संरचना
- भाषा की विशेषताएँ

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को ''भाषा क्या है'' यह समझने में मदद करना है। भाषा की सबसे प्रचलित परिभाषा यह है कि भाषा संप्रेषण का माध्यम है। परन्तु यह भाषा की बहुत ही सीमित परिकल्पना है। इस इकाई में हम भाषा के विभिन्न पहलूओं के बारे में बातचीत करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि भाषा को किन–किन रूपों में समझा जा सकता है? साथ ही साथ व्याकरण के दृष्टिकोण से ध्वनि, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर भाषा की संरचना को समझने का भी प्रयास करेंगे। इकाई के अन्त में हम भाषा की विशेषताओं के बारे में समझ बनाएंगे।

इकाई–2 : भाषायी विविधता व बहुभाषिकता

- भारत का बहुभाषिक परिदृश्य : भारत में भाषाएँ एवं भाषा–परिवार
- बिहार का बहुभाषिक परिदृश्य
- भाषा और बोली
- बहुभाषिकता के आयाम : बौद्धिक आयाम, शिक्षणशास्त्रीय आयाम
- भाषाओं के संदर्भ में संवैधानिक प्रावधान : अनुच्छेद 343–351, आठवीं अनुसूची
- बहुभाषिक कक्ष और केस स्टडी

हमारे देश में कई प्रकार की विविधताएँ हैं। भाषायी विविधता भी उनमें से एक है। पूरे विश्व में लगभग 5000 भाषाएँ हैं उनमें से करीब 1600 से अधिक भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि यहाँ अधिकांश व्यक्ति कम–से–कम दो भाषाएँ जानते हैं। यह जानते हुए भी कि भारत एक बहुभाषिक देश है स्कूलों में भाषा शिक्षण में ज़ोर किन्हीं एक या दो विशेष भाषाओं (अमूमन हिन्दी व अंग्रेजी) पर ही होता है। बच्चों की भाषाओं, जो कि इतनी विविधता लिये हुए होती है, उनको भाषा व बोली, शुद्ध भाषा, मानकीकृत भाषा जैसे मुद्दों के बीच दबा दिया जाता है। यह इकाई, भाषायी विविधता व बहुभाषिकता को समझने में मदद करेगी। इकाई में बिहार के बहुभाषिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए विस्तार से यह चर्चा की जाएगी कि हम इस भाषायी विविधता को स्वयं व बच्चों के भाषा के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग कैसे कर सकते हैं।

इकाई–3 : बच्चों का आरम्भिक भाषा विकास और विद्यालय में भाषा

- बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना
  –विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषायी पूंजी
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? (स्किनर, चॉमस्की, वायगोत्स्की और पियाजे के विशेष संदर्भ में)
- भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अंतर
- विद्यालय में भाषा : – विषय के रूप में
  – माध्यम भाषा के रूप में
- भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों की समझ : कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता
- भाषा के आधारभूत कौशलों – सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने का विकास
  – शुरुआती पढ़ना–लिखना
- लिपि और भाषा

बच्चे अपने परिवेश के साथ सहज अन्तःक्रिया करते हुए भाषा सीख जाते है। यदि हम भाषा सीखने की इस प्रक्रिया पर ध्यान दें तो हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि कक्षा में भाषा सीखने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए? इस इकाई में बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता, भाषा सीखने की प्रक्रिया व उसमें विभिन्न कारकों के योगदान पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। भाषा सीखने की प्रक्रिया के बारे में शिक्षाविदों मुख्यतः पियाजे, वायगोत्सकी, चॉमस्की के दृष्टिकोण से भी आप इस इकाई में परिचित होंगे। आप यह भी समझ पाएँगे कि भाषा कैसे समझ के निर्माण में सहयोग करती है। बच्चा जब विद्यालय आता है तब तक वह अपनी भाषा में परिपक्व हो जाता है। वह अपनी भाषा में व्यक्तियों के साथ संवाद करने की क्षमता रखता है। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा के आधारभूत कौशलों–सूनना, बोलना के विकास और पढ़ना–लिखना की शुरूआत हो जाती है। यह जरूरी है कि प्राथमिक कक्षाओं में इन संदर्भों पर समझ बनाई जाय। पढ़ने–लिखने की दुनिया में लिपि की केन्द्रीय भूमिका है। भाषा और लिपि के सम्बंधों का विवेचन भी इकाई का उद्देश्य है। यह महत्त्वपूर्ण है कि भाषायी रूप से परिपक्व बच्चों के भाषायी उपयोग एवं स्तर के विकास में शिक्षक अपनी भूमिका के बारे में समझ बनाए एवं उसका उपयोग करें। प्रशिक्षु भाषा तथा लिपि के बीच अन्तःसंबंध को बच्चों को भाषा सीखने के अवसर उपलब्ध करवाने के संदर्भ में समझेंगे।

प्रस्तावित कार्य

- अपने आस–पास बोली जाने वाली भाषाओं का सर्वेक्षण करके, भाषायी विविधता पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
- अपनी मातृभाषा के किन्हीं 20 शब्दों की सूची तैयार करते हुए यह अध्ययन कीजिए कि आपके क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, मैथिली, मगही, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका आदि) में उनके क्या प्रयोग हैं?
- 3 से 10 साल के एक बच्चे के साथ बातचीत को रिकार्ड करके उसकी भाषा की विशेषताओं का अध्ययन कीजिए।
- किन्ही तीन स्थानीय अखबारों की एक–एक प्रति का अध्ययन करके भाषा की बहुभाषिक विशेषताओं पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
- गणित तथा विज्ञान की एक–एक अवधारणा का चुनाव करके बच्चे में उनके बनने की प्रक्रिया पर अभ्यास शिक्षण के अनुभवों के आधार पर एक लेख लिखिए।

F-6

शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य

संदर्भ

किसी भी समाज के मानवीय होने की कसौटियों में से एक महत्वपूर्ण कसौटी यह है कि उसका दृष्टिकोण कितना समतामूलक हैं। समाज को समतामूलक बनाना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस संदर्भ में, जेण्डर समानता तथा विशेष आवश्यकतावाले बच्चों को विद्यालय में सीखने के समान अवसर उपलब्ध कराने का विमर्श उभर कर आया है। यह गौर करनेवाली बात है कि स्त्री और पुरुष के बीच लिंगजनित भिन्नता प्राकृतिक है लेकिन सामाजिक–सांस्कृतिक असमानता समाज द्वारा सृजित है। हमारे समाज में स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को रचने के प्रयास बहुत पुराने और जटिल हैं, जिनकी शुरुआत बच्चे और उनके बचपन के विभिन्न संदर्भों में ही हो जाती है। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के लिए जेण्डर आधारित असमानता की जड़ों और उससे उपजे दृष्टिकोण को समझना अति आवश्यक है। खासकर बिहार में लड़कियों की सामाजिक स्थिति तथा उनकी शिक्षा के अनेक संदर्भ इस लिहाज से देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही, हमारे समाज में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दिव्यांगजन) की शिक्षा के प्रति भी उपेक्षा और उदासीनता देखने को मिलती है। वर्तमान शैक्षिक मान्यताओं के अनुसार यह जरूरी है कि इन बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति हमारा विद्यालय और शिक्षक तैयार हों तथा संवेदनशील बनें। इस विषयपत्र में समावेशी अवधारणा एवं जेण्डर को विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के आलोक में समझने की कोशिश की जाएगी। साथ ही, इसकी समझ भी बनाएंगे कि समावेशी सामाजिक दृष्टिकोण एवं जेण्डर समानता के लिए शिक्षा किस प्रकार एक सशक्त माध्यम के तौर पर काम कर सकती है।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- समाज के समावेशी परिप्रेक्ष्य की अवधारणा तथा आवश्यकता को समझना।
- समाज में जेण्डर समानता की अवधारणा तथा औचित्य को समझना।
- विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दिव्यांगजन) की आवश्यकतानुरूप शिक्षा के स्वरूप को समझना।
- विद्यालय के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को समावेशी परिप्रेक्ष्य एवं जेण्डर समानता के आलोक में विश्लेषित करना।
- विद्यालयी माहौल को समावेशी एवं जेण्डर समानता के अनुरूप निर्मित करने के तरीकों को समझना।

शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य

पूर्णांक : 50 (35+15) **F-6** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

इकाई–1 : समावेशी शिक्षा की समझ

- भारतीय समाज में समावेशन और अपवर्जन के विभिन्न रूप (हाशिए का समाज, जेण्डर, विशेष आवश्यकतावाले बच्चे–दिव्यांगजन)
- कक्षाओं में विविधता और असमानता की समझ : पाठ्यचर्यात्मक और शिक्षणशास्त्रीय संदर्भ
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया

भारतीय संविधान ऐसे समाज की कल्पना करता है जिसकी नीव समता पर रखी गई हो। इसे आदर्श मानते हुए व्यक्तिगत विविधताओं को महत्त्व देती ऐसी शिक्षा की संकल्पना की जा रही है जिसमें सबके लिये स्थान एवं अवसर उपलब्ध हों। ऐसी शिक्षा जो सभी की विविधताओं का समावेश करे तथा उन विविधताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या व शिक्षण में परिवर्तन अथवा संशोधन लाये। विविधतायें कई स्तर पर हो सकती हैं जैसे सांस्कृतिक, शारीरिक, आर्थिक, बौद्धिक इत्यादि। एक शिक्षक को इन विविधताओं के प्रति संवेदनशील तो होना ही चाहिए साथ ही अपने शिक्षणशास्त्र को इस प्रकार से व्यवस्थित करना चाहिए जिससे वह उन विविधताओं का सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में समावेश कर सके और अपने शिक्षण को जीवन्त व अर्थपूर्ण बना सके। भिन्न क्षमताओं वाले बच्चों के सीखने को लेकर शिक्षक को विशेष योजना बनानी पड़ती है। इस इकाई में समावेशी शिक्षा की संकल्पना व इससे सम्बंधित घटकों की चर्चा की गई है जो अधिगम को और प्रभावी बनाने में सहायक होंगे।

इकाई–2 : विशेष आवश्यकतावाले बच्चे (दिव्यांगजन) और समावेशी शिक्षा

- समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों का संदर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियां, बिहार का संदर्भ
- विशेष आवश्यकतावाले बच्चे : विविध प्रकार, पहचान के तरीकें व सीमाएं
- समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों के सीखने के लिए शिक्षा का स्वरूप

इस बात को परिभाषित करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है कि हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चे किन्हें माने। कुछ विशेष आवश्यकतावाले बच्चों को पहचान पाना शिक्षक के लिए आसान होता है, लेकिन कई बच्चों को जान पाना स्वतः आसान नहीं होता। अतः जरूरत है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में हर शिक्षक में वह बुनियादी समझ जरूर हो जिससे वे अपने विद्यालय में आनेवाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान कर पाने में सक्षम हो सकें। दूसरा प्रश्न यह है कि विशेष आवश्यकतावाले बच्चों के लिए विद्यालय का परिवेश कैसा हो, जिसके संदर्भ में समावेशी शिक्षा की अवधारणा महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन, समावेशी शिक्षा की अवधारणा के ऐतिहासिक विकास तथा वर्तमान विद्यालयों मे उसकी स्थिति को समझना भी जरूरी है। इन सब बिन्दुओं की चर्चा इस इकाई में की जा रही है।

इकाई–3 : जेण्डर विमर्श और शिक्षा

- जेण्डर : अवधारणा और संदर्भ, पितृसत्ता व नारीवादी विमर्श के संदर्भ में जेण्डर विभेद
- बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका : बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया
- शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जेण्डर विभेद : पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षायी प्रक्रियाओं, विद्यार्थी–शिक्षक (स्टूडेंट–टीचर इन्टेरैक्शन) संवाद के विशेष संदर्भ में
- जेण्डर संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की भूमिका

किसी भी समाज के मानवीय होने की कसौटियों में से एक महत्त्वपूर्ण कसौटी यह है कि उसमें स्त्री और पुरुष के बीच सम्बन्ध कितने समतामूलक हैं। स्त्री और पुरुष के बीच भिन्नता प्राकृतिक है लेकिन असमानता समाज द्वारा सृजित है। हमारे समाज में स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को रचने के प्रयास बहुत पुराने और जटिल हैं, जिनकी शुरूआत बच्चे और उनके बचपन के विभिन्न संदर्भों में ही हो जाती है। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के लिए जेण्डर आधारित असामनता की जड़ों को समझना अति आवश्यक है, खासकर बिहार में लड़कियों की सामाजिक स्थिति तथा उनकी शिक्षा को लेकर मानसिकता के दृष्टिकोण से। इस इकाई में प्रशिक्षु यह समझ बनाएँगे कि समाज में जेण्डर आधारित विभेद को विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रियाओं द्वारा कैसे प्रसारित किया जाता है और इसका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही, इसकी समझ भी बनाएंगे कि जेण्डर संवेदनशीलता लाने में शिक्षा किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रही है।

प्रस्तावित कार्य

- अपने विद्यालय की गतिविधियों का अवलोकन करें और जेण्डर संवेदनशीलता लाने के विभिन्न अवसरों की पहचान करें। उनकी चर्चा अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर करें।
- प्रारम्भिक स्तर के पाठ्यपुस्तकों से वैसे प्रसंगों की पहचान करें जो जेण्डर की अवधारणा से सम्बंधित हैं। यह हो सकता है कि उनके माध्यम से जेण्डर की रूढ़ीवादी विचार ही प्रोत्साहित हो रही हो या ऐसा भी हो सकता है कि उनके माध्यम से रूढ़ीवादी धारणाएं टूट रही हों।
- बिहार राज्य में जेण्डर समातना को प्रोत्साहित करनेवाली कुछ शैक्षिक योजनाओं के बारे में पता लगाएं और उनके प्रभावों का विश्लेषण करें।
- समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों में से किन्ही दस विज्ञापनों का चयन करें जिसमें महिलाओं की सहभागिता हो और विश्लेषण करे कि वह महिलाओं की किन भूमिका को स्पष्ट करता है?क्या वह समाज के नए सोच को दर्शाता है?
- मुख्यमंत्री बालिका साईकिल योजना का प्रभाव ग्रामीण विद्यालयी शिक्षा पर किस प्रकार पड़ा है, इसके बारे में कुछ लोगों की प्रतिक्रिया को दर्ज करें और प्रशिक्षण केन्द्र पर चर्चा करें।
- परिवार में किसके द्वारा क्या काम किया जाता है उसके चित्र इकट्ठा कर एक एल्बम बनाये। सभी चित्रों के आधार पर अपना विश्लेषण प्रस्तुत करें।
- हमारे समाज में लड़के और लड़कियों को लेकर कई लोकोक्तियां हैं जो जेण्डर विभेद की अंतर्निहित मान्यताओं को दर्शाते हैं। उनका संग्रह करें और प्रशिक्षण केन्द्र पर विश्लेषण करें।
- अपने विद्यालय के दिव्यांगजनों की पहचान करें और उनके शिक्षण हेतु शिक्षण प्रक्रिया में आपके द्वारा लाए गए परिवर्तनों पर प्रशिक्षण केन्द्र में चर्चा करें।
- क्या आपका विद्यालय एक समावेशी विद्यालय है? इसका अध्ययन करें।

F-7

गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

संदर्भ

गणित विद्यालयी स्तर पर एक अनिवार्य विषय है, परन्तु यह अधिकतर बच्चों के लिए मनपसंद विषय नहीं होता। गणित का नाम सुनते ही बच्चे व वयस्क दोनों घबराने लगते हैं। उन्हें बड़ी–बड़ी गणनाएं, जटिल चित्रों का समावेश व अमूर्त्त और संदर्भहीन तर्क याद आने लगते हैं। यह डर एवं व्याख्या दोनों ही अनुपयुक्त हैं। गणित विषय की समझ के विकास के साथ–साथ यह स्पष्ट हो गया है कि गणित सीखने का अर्थ संख्याओं के साथ फटाफट और सटीक गणना करना भर नहीं है। इसमें न केवल गणित के अन्य हिस्से शामिल हैं वरन् सोच के ऐसे तरीके विकसित करना शामिल है, जिसमें सीखने वाला तार्किक आधार पर विश्लेषण करना सीख पाए। उसमें संख्यात्मक समझ, मापने की समझ एवं आकड़ों का प्रस्तुतिकरण, तर्क व सिद्ध करने का अर्थ आदि शामिल हैं।

यदि गणित शिक्षण के उद्देश्य में इन सबको और हमारे रोजमर्रा के अनुभवों के साथ संबंध जोड़ने को रखा जाए तो गणित की कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में बहुत बदलाव आएगा। इस पाठ्यक्रम में इन सब पर विमर्श करने का प्रयास है। यह पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में कक्षा शिक्षण के लिए विषयगत तैयारी, विषय की प्रकृति की समझ व बच्चों एवं उनके गणित सीखने की प्रक्रिया की समझ विकसित करेगा। अच्छे शिक्षण के लिए गणित की अवधारणाओं की समझ होनी चाहिए। यह भी पता होना चाहिए कि गणित की प्रकृति क्या है, उसमें ज्ञान को मानने के आधार क्या हैं और बच्चे इसे कैसे सीखते हैं।

हाल में हुए शोधों के आधार पर, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में यह पूरजोर वकालत की गई है कि बच्चे जिज्ञासु होते हैं, लगातार सीखते हैं एवं स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। वे स्कूल आने से पहले बहुत कुछ जानते हैं और उन्हें किसी भी हालत में कोरी स्लेट नहीं माना जाना चाहिए। हर बच्चा अपने सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के कारण कुछ समान गुणों के होते हुए भी अलग है। शिक्षक को बच्चों की बात को समझना व उनकी पृष्ठभूमि को समझकर उनके ज्ञान का कक्षा में उपयोग करना सीखने में कई तरह से मदद करेगा।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- दैनिक जीवन में गणित की अवधारणाओं का उपयोग कर पाने के कौशल विकसित करना एवं उससे कक्षा में बच्चों के सीखने में मदद लेने के तरीके सोचना।
- बच्चे क्या जानते हैं, इसके बारे में समझना।
- गणित की बुनियादी अवधारणाएं और इनकी सीखे जाने की प्रक्रिया समझना, यथा–संख्या व उससे जुड़ी अवधारणाएं, मापन की समझ एवं आकड़ों का प्रस्तुतिकरण आदि।
- गणित सीखने की प्रक्रिया के मुख्य पहलुओं को समझना व विभिन्न प्रत्ययों को सिखाने के लिए संभव तरीके सोच पाना।

गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35+15) | **F-7** | **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

इकाई–1 : गणित की समझ

- गणित के बारे में भय, भ्रम और मिथकः गणित सबके लिए
- दैनिक जीवन में गणित : आवश्यकता एवं महत्त्व
- गणित की प्रकृति
- गणितीयकरण

इस इकाई में हम यह समझेंगे कि जीवन में गणित कहाँ–कहाँ उपयोग होता है और वह हमारे जीवन को किस–किस प्रकार से प्रभावित करता है। हम अहसास करेंगे कि जीवन के हर पहलू में हर कोई अलग–अलग तरह की गणित का उपयोग करता है। यह अहसास कि सभी बच्चे बहुत से गणित की शुरूआती समझ स्वतः हासिल कर लेते हैं। यह इंगित करता है कि गणित सीखना सबके लिए संभव है। हम गणित सीखने के बारे में जो भ्रम हैं, मिथक है उन पर ध्यान देंगे और यह भी चर्चा करेंगे कि यह क्यों हमें डराने लगता है। हम यह भी देखेंगे कि सकूल से पूर्व ही बच्चा किस प्रकार गणित सीखता रहता है और किस स्तर तक। इसके कक्षा के लिए निहितार्थों पर भी हम विचार करेंगे।

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर पर गणित : आधार, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम

- गणित सीखने–सिखाने के विविध आधार :
  - बच्चों की गणितीय समझ एवं अनुभव
  - बच्चों की सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य की समझ
  - गणित एवं संज्ञानात्मक विकास
- प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के उद्देश्य : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एन.सी.एफ.टी.ई.–2009, गणित आधार पत्र–2006 (एन.सी.ई.आर.टी.) के विशेष संदर्भ में
- बिहार के प्राथमिक स्तर के गणित का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

यह इकाई गणित सीखने–सिखाने के तरीकों पर है। इसमें उन प्रमुख पहलुओं पर नज़र डालेंगे जो गणितीय शिक्षण को प्रभावित करते हैं। गणित शिक्षा, क्यों और कैसे से आगे यह इकाई पहली इकाई की कुछ बातों का विस्तार करती है। अक्सर गणित को किताबों, कक्षाओं और अन्य तरीकों में बांध कर देखा जाता है और यह समझ जाता है कि परिस्थिति कोई भी हो गणित तो एक ही रहता है, यह समझ अधूरी हो सकती है। हालांकि गणित में अमूर्तता है लेकिन उसके सीखने के लिए ठोस अनुभवों से मदद मिलती है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि चूंकि बच्चे पहले से कुछ सीख कर आते हैं और वे अपनी पृष्ठभूमि को अच्छे से समझते हैं। अतः गणित सीखने में अगर उन अनुभवों का समावेश होगा तो बेहतर सीख पाएंगे और दूसरों का अपने संदर्भ व समझ के आधार पर समझाने का प्रयास कर पाएंगे। साथ प्राथमिक स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एन.सी.एफ.टी.ई.–2009, गणित आधार पत्र–2006 के द्वारा बताएँ गए गणित शिक्षण के उद्देश्य को समक्ष सकेंगें एवं प्राथमिक स्तर के गणित के पाठ्यक्रम की समक्ष विकसित कर पाएंगे।

इकाई–3 : संख्या एवं संख्या संक्रियाएं

- संख्यापूर्व अवधारणाओं का विकास
- संख्या की अवधारणा की समझ
- गिनती से परिचय
- संख्या प्रत्यय की समझ का विकास एवं विभिन्न संकेतों के माध्यम से संख्याओं की प्रस्तुति
- स्थानीय मान
- गणितीय संक्रियाएँ एवं उनमें अन्तर्संबंध

इस इकाई में हम जानेंगे कि बच्चे गिनती कैसे करते हैं, संख्या की अवधारणा कैसे विकसित होती है तथा संख्यात्मक समझ बनाते समय बच्चों को किस प्रकार की परेशानियां आती हैं। चर्चा करेंगे कि कक्षा में पढ़ाते समय बच्चों को किस प्रकार के उचित मौके दिए जाए जिससे उनकी संख्यात्मक अवधारणा के मुख्य पहलू जैसे सांकेतिक निरूपण, स्थानीय मान की समझ, अंक, संख्या, संख्यांक आदि का विकास किया जा सके।

इकाई–4 : मापन एवं आंकड़े

- मापन का अर्थ
- मापन और अनुमान
- अमानक एवं मानक इकाईयाँ
- मापन के दौरान होने वाली गलतियाँ
- लम्बाई, क्षेत्रफल, धारिता, आयतन तथा समय का मापन
- आँकड़ों का प्रत्यय तथा प्रस्तुतीकरण

इस इकाई में हम समझेंगे कि बच्चे मापन के कई पहलूओं की समझ रखते हैं, जैसे किस प्रकार से इकाइयों (अमानक) को साथ रखकर चीज़ों को मापा जाए आदि। यह भी जानेंगे कि किस प्रकार बच्चे मापन की अमानक व मानक इकाइयों की जरूरत महसूस करते हैं व उसकी समझ बनाते हैं। विभिन्न विमाओं में मापन की विभिन्न इकाइयों की आवश्यकता व इस्तेमाल पर भी विचार करेंगे। साथ ही, हम कक्षा में बच्चों को किस प्रकार से इन अवधारणाओं को समझाने में मदद करेंगे, इस पर भी विचार करेंगे। अलग–अलग चीज़ों को मापने के अलग–अलग तरीके व इकाइयों के बारे में भी जानेंगे, जैसे लम्बाई, भार, धारिता, समय आदि। और यह भी चर्चा करेंगे कि किस प्रकार कक्षा में बच्चों के लिए ऐसे मौके तैयार किए जाए जिससे वे अलग–अलग मापन की अवधारणाओं की समझ को विकसित कर पाएं। इकाई के अंत में आँकड़ों की अवधारणा तथा प्रस्तुतीकरण पर चर्चा करेंगे।

प्रस्तावित कार्य

- अपने विद्यालय में मध्याहन भोजन संचालन हेतु सामान संग्रह से लेकर भोजन वितरण तक कौन–कौन सी गणितीय क्रियाएँ होती है, उनका विवरण प्रस्तुत करें।
- प्रशिक्षुओं को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें। तीन या चार अंकोंवाली कुछ संख्याएँ प्रत्येक समूह को देकर योग की क्रिया एकाधिक तरीकों से करने के लिए कहें। इन क्रियाओं में गणितीयकरण की स्थितियाँ कहाँ–कहाँ बनी, उनका विवरण भी लिखने के लिए कहें।
- अपने वर्ग शिक्षण के दौरान बच्चों से प्राप्त मापन से संबंधित संकलित समस्याओं पर अपने साथियों से चर्चा कीजिए तथा इन समस्याओं के निराकरण के उपायों को ढूंढ़िए।
- समय मापन शिक्षण हेतु अपने साथी शिक्षकों से चर्चा कर एक या दो शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण कर उसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया से साथियों को अवगत कराइए तथा इसका अभिलेखन कीजिए।
- प्राचीन सभ्यता में संख्या विकास एवं संख्या निरूपण के तरीकों को अध्ययन कर रिपोर्ट तैयार करना।
- गणित से संबंधित दो–दो लेखों व शोध पत्रों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- ऐसे कार्यक्रमों की योजना बनाना जिससे गणित संबंधी भ्रम व भय को दूर किया जा सके।
- गणित के विभिन्न प्रत्ययों के अधिगम से संबंधित क्रियात्मक अनुसंधान करना।
- गणित की किसी अवधारणा के विकास के लिए प्रत्यय मैपिंग करना।
- कक्षा 1 से 5 की पाठ्य पुस्तक के किसी अध्याय से संबंधित विषय–वस्तु का विश्लेषण करना ।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

F-8

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

संदर्भ

प्रारम्भिक शिक्षक की तैयारी को स्कूली पाठ्यक्रम के साथ समन्वय करना समय की माँग है। किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रारम्भिक विद्यालयों में हिन्दी का शिक्षण किया जाना है उनको केन्द्र में रखकर इस पर्चे की इकाईयों तथा उनकी उप–इकाईयाँ तैयार की गई है। हिन्दी की उन संरचनागत विशेषताओं के बारे मे समझ बनाएँगे जो प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाने में मददगार होगी। यह विषयपत्र प्रशिक्षुओं की क्षमताओं को इस दिशा में विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। प्रशिक्षु सुनने, बोलने, पढ़ने की कुशलताओं और क्षमताओं के बारे में समझ बनाएँगे। वे इन संकल्पनाओं का अर्थ, विकसित होने की प्रक्रिया तथा कक्षा में उपयोग करने के तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। शिक्षक होने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है कि वे जिन कुशलताओं और क्षमताओं का विकास विद्यार्थियों में करना चाहते/चाहतीं हैं, वे कुशलताएँ और क्षमताएँ स्वयं उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हों। इस संदर्भ में यह विषयपत्र प्रशिक्षुओं में संबन्धित कुशलताओं और क्षमताओं के विकास को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। प्रशिक्षुओं को ऐसे अवसर उपलब्ध करवाये जायेंगे जिनकी मदद से वे सुनने, बोलने और पढ़ने की संकल्पनाओं के बारे में बनी समझ को प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण प्रक्रियाओं का सृजन करने में कर सकेंगे। प्रशिक्षु बच्चों का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन करने की प्रक्रिया एवं तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मूल्यांकन के इस उपागम तथा एक–दो बार ली जाने वाली परीक्षा के आधार पर किए जाने वाले मूल्यांकन के बीच शिक्षणशास्त्रीय अंतर के बारे में समझ बनाएँगे। वे समझ पाएँगे कि मूल्यांकन बच्चों कि गलतियाँ पकड़ने के लिए न करके वैयक्तिक रूप से उनकी मदद करने के लिए किया जाता है। प्रशिक्षु शिक्षण हेतु 'सीखने की योजना' (लर्निंग प्लान) की जरूरत के बारे में समझ बनाएँगे। वे इस बारे में भी समझ बनाएँगे कि यदि कक्षाओं को गतिविधि आधारित बनाना है तो कक्षा की प्रक्रियाओं के कौन–से रूप तथा उनकी क्या चुनौतियाँ हो सकती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी–शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में समझ बनाना।
- प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक भाषायी कौशलों के उन पक्षों को समझना जो प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक हैं।
- प्राथमिक कक्षाओं में सुनने के कौशल की सामर्थ्य में बढ़ोतरी और बोलने की प्रकिया में विविध विशिष्टताओं को अर्जित करना।
- बच्चों के भाषायी कौशलों को विकसित करने के सैद्धांतिक पक्षों के बारे में समझ बनाना।
- हिन्दी–भाषा के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के तरीकों से अवगत होना।
- उद्देश्यपरक सीखने की योजना, उपयुक्त कक्षा प्रक्रियाओं के नियोजन तथा संचालन के बारे में समझ विकसित करना।

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35+15) **F-8** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

इकाई–1: प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

- बच्चों की दुनिया में हिन्दी
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2008 के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना

बिहार एक ऐसा हिन्दी प्रदेश है, जिसमें अनेक क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती हैं। क्षेत्रीय भाषाओं (मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका) के कारण हिन्दी शिक्षण का परिदृश्य समृद्ध भी होता है, और उप भाषाओं से अनेक चुनौतियां भी पैदा होती हैं। प्रायः शिक्षार्थी इन क्षेत्रीय भाषाओं के परिवेश में ही जन्म लेते हैं और उनका आरम्भिक पालन–पोषण होता है। वे इन्हें ही मातृभाषा के रूप में अर्जित करते हैं। मातृभाषा से यह यात्रा हिन्दी की ओर आगे बढ़ती है। बच्चों की दुनिया में हिन्दी की यह यात्रा जब और आगे बढ़ती है त बवह अभिव्यक्ति के अनेक कौशलों से रू–ब–रू होता है। इस इकाई में बच्चों की दुनिया में हिन्दी के व्यापक फलक पर एक नज़र डालने का प्रयास किया गया है। हिन्दी भाषा की प्रकृति, सहभाषाओं यानी मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि से उनका रिश्ता ऐसे संदर्भ हैं, जिन्हें समझना अन्य उद्देश्य है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 में हिन्दी शिक्षण के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है, उनका विश्लेषण भी इस इकाई का उद्देश्य है।

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर की हिन्दी : पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ

- बिहार के प्राथमिक स्तर की हिन्दी के पाठ्यचर्या– पाठ्यक्रम के उद्देश्य
- प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की संरचना
- प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्पुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति की समझ

बिहार के विद्यालयों में प्रथमभाषा के रूप में स्वभाविक पसन्द हिन्दी है। राज्य में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएं एक ही परिवार की हैं और हिन्दी के साथ उनका स्वभाविक सम्बंध है। इसलिए अपनी घरेलू भाषाओं द्वारा अर्जित भाषायी संवेदनशीलता तथा क्षमता के बूते हिन्दी सीखना सभी बच्चों के लिए आसान है। हिन्दी शिक्षण के प्रारम्भिक वर्षों में भाषायी कौशलों के विकास पर बल देना चाहिए। विद्यार्थियों का परिचय भाषायी संरचना तथा परिपाटी से कराना चाहिए न कि व्याकरण शिक्षा के जटिल नियमों द्वारा उसे बोझिल बना देना चाहिए। अन्ततः यह प्रश्न उठता है कि यह कौन तय करता है कि प्राथमिक स्तर पर हिन्दी का स्वरूप कैसा हो? इसमें बच्चों को क्या पढ़ाएं और कैसे पढ़ाएं? इसके आकलन का स्वरूप क्या हो? इन्हीं सब मूद्दों पर इस इकाई में चर्चा की जाएगी। प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के स्वरूप तथा उद्देश्य एवं संरचना को जानने का प्रयास किया जाएगा। इस इकाई में प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति पर भी समझ बनायी जाएगी।

इकाई–3 : भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना

- भाषायी क्षमताओं की संकल्पना : विभिन्न भाषायी क्षमताएं और उनके बीच आपसी संबंध
- सुनने व बोलने का अर्थ
- सुनने व बोलने को प्रभावित करने वाले कारक
- प्राथमिक स्तर के बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास :
  बच्चों को कक्षा में सुनने व बोलने के मौके उपलब्ध करवाना, जैसे – आज की बात, बातचीत, अपने बारे में बात करना, स्कूल अनुभवों पर बात करना, आंखों देखी या सुनी हुई घटनाओं के बारे में अभिव्यक्ति करना, बालगीत/कविता सुनना–सुनाना, कहानी सुनना –सुनाना, चित्र–वर्णन, दिए गए शब्दों से कहानी सुनाना, रोल प्ले करवाना, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तारित कर पाना, परिचित सम–सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना, बच्चों को कहानी, कविता, नाटक आदि रचने, उसे बढ़ाने तथा प्रस्तुत करने के अवसर देना (कविताओं, कहानियों व बालगीतों आदि के उदाहरण प्रारम्भिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों से भी लिए जाएँ)
- भाषा सीखने के संकेतक : सुनने और बोलने के संदर्भ में

बच्चों में भाषा सीखने की सहज व जन्मजात क्षमता होती है और स्कूल आने से पहले वे अच्छा खासा भाषाई ज्ञान अर्जित कर चुके होते हैं। बच्चे जब स्कूल आते हैं तो स्कूल की भूमिका होती है उनके भाषाई ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए उनमें पढ़ने, लिखने, अभिव्यक्त करने के कौशलों का विकास किया जाए। इसलिए इस इकाई की शुरूआत में हम भाषाई कौशलों की संकल्पना व उनके आपसी संबंध के बारे में चर्चा करेंगे। सहज तौर पर शायद हम सब यह मानते है कि सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने में कुछ संबंध है। लेकिन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान इनको अलग–अलग ही देखा जाता है और कक्षा–कक्ष प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से यह उजागर भी नहीं होता। यह इकाई शुरूआत में यह समझने का प्रयास करेगी कि क्यों इन कौशलों का स्वाभाविक अंतर्संबंध अनुभव कर पाना अति आवश्यक है। ये कौशल कैसे एक दूसरे को विकसित करने में मदद करते हैं। इसके बाद हम विस्तारपूर्वक सुनने व बोलने के अर्थ व बच्चों में सुनने की क्षमता व बोलने की क्षमता का कौशल विकसित करना क्यों जरूरी है तथा इन कौशलों को विकसित करने हेतु क्या–क्या गतिविधियाँ की जा सकती है इस पर समझ बनाएँगे। बच्चों में अभिव्यक्ति की समझ व कौशल विकसित हो इसके लिए जरूरी है कि प्रशिक्षु की अपनी अभिव्यक्ति क्षमता भी बेहतर हो। अतः इस इकाई का एक हिस्सा प्रशिक्षुओं की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ाने के तरीकों पर केन्द्रित है।

इकाई–4: पढ़ने की क्षमता का विकास

- पढ़ने का अर्थ : शुरुआती पढ़ना क्या है, शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना
- पढ़ने की प्रक्रिया और विभिन्न सोपानों में अनुमान लगाने, अर्थ समझने, लिपि पहचानने, पढ़कर प्रतिक्रिया देने, पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्त्व
- पढ़ने के प्रकार : सस्वर, मौन पठन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, 'स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग' आदि
- पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी समीक्षात्मक समझ : वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि, अर्थपूर्ण संदर्भ आधारित उपागम
- पढ़ना सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका
- भाषा सीखने के संकेतक : पढ़ने के संदर्भ में

इस इकाई में प्रशिक्षुओं की पढ़ने की क्षमता को बढ़ाया जाएगा। पढ़ना सीखने की समझ विकसित की जाएगी तथा पढ़ना सिखाने के तरीकों का क्रियान्वयन करने की तत्परता पर ध्यान दिया गया है। यह आवश्यक है कि वे पढ़ने की क्षमता का विकास करते हुए पढ़ना सीखने में मदद करने की बारीकियाँ समझें। यह इकाई पढ़ने के बारे में समझ बनाने पर केन्द्रित है। अधिकांश अध्यापकों/अभिभावकों की अपने बच्चों के बारे में यह शिकायत रहती है कि इतना सिखाते हैं फिर भी बच्चे पढ़ नहीं पाते। यह इकाई इसी बुनियादी सवाल कि ''बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते?'' के विभिन्न पहलूओं को समझने में मदद करती है। पढ़ने का अर्थ, पढ़ने की प्रक्रिया, पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों, पढ़ने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों व शिक्षकों को आने वाली चुनौतियाँ इत्यादि के बारे में बात करते हुए यह समझाने का प्रयास करती है कि बच्चों को पढ़ना सिखाने हेतु कौन सी उपयुक्त गतिविधियाँ की जा सकती हैं।

प्रस्तावित कार्य

- स्कूल की प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे/बच्चियों की हिन्दी और हिन्दी से अलग विषयों की कक्षाओं में प्रयुक्त होने वाले वाक्यों/शब्दावलियों का अध्ययन कीजिए और बताइए कि हिंदी शिक्षण के विभिन्न रूपों के स्वरूप क्या हैं ?
- किसी एक विद्यार्थी को लगभग 200 शब्दों का एक अपठित गद्यांश देकर उससे पढ़ने को कहें। उसके आधार पर उसके पढ़ने की क्षमता का आकलन करने के लिए आप क्या और कैसे करेंगे? एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
- किसी कहानी को नाटक रूप में कक्षा– 3 से 5 के बच्चों से करवाइए। इसके लिए बच्चों के साथ मिलकर संवाद बनाइए, फिर बच्चों को उस पर अभिनय करवाइए। अपने अनुभव का विवरण दीजिए।
- बड़े आकार के दस ऐसे चित्रों का चुनाव कीजिए जिनका उपयोग पहली कक्षा के विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर उपलब्ध करवाने हेतु किया जा सकता है। प्रत्येक चित्र के साथ उसके चुनाव के कारण देते हुए फाइल तैयार कीजिए।
- कक्षा–4 या 5 के कुछ विद्यार्थियों को हिन्दी का लगभग 200 शब्दों का एक अपठित गद्यांश देकर उनसे पढ़ने को कहें। उसके आधार पर उनके पढ़ने की क्षमता का आकलन करते हुए एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
- कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से बच्चों को कौन सी कहानी ज्यादा अच्छी लगी। इसके बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी?
- अपने आसपास के 3–4 वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों को लिखिए और विश्लेषण करके लिखिए कि भाषा के नियम की दृष्टि से वह बच्चा क्या–क्या जानता है।

F-9

PROFICIENCY IN ENGLISH

Introduction

With the advent of globalization, English has gained significance in every fileld .Hence proficiency in this language has become the need of the hour. The major challenge for the teachers of English his to help the learners overcome the sense of fear and hesitation to enjoy learning English. For this, proficiency and the confidence are needed. Since a large number of teachers need capacity building in English language for making them feel confident and transact their lessons effectively, this course will enable the student teachers to improve their proficiency in English. This will enable them to create a learning rich environment in the class room. The course will focus on all the four skills of English and also provide adequate exposure to vocabulary enrichment and grammar in context. The focus will not be on learning and memorizing aspects of grammar and pure linguistics. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning to link it with pedagogical strategies.

Objectives

The objectives of teaching this subject are:-

- To understand the need and importance of English at present time.
- To strengthen the student-teacher's proficiency in English.
- To enrich their vocabulary and brush up their knowledge of grammar of English in context.
- To enable student-teachers to link their proficiency with pedagogy.

PROFICIENCY IN ENGLISH

Full Marks: 50 (35+15) **F-9** **Study Time: 40 Hrs.**

Unit–1 : Need and importance of English Language

- English as a global language
- English around us
- Constitutional provision: English as an associate official language
- Proficiency vs. achievement in English

Proficiency, achievement and all other aspects of ‘Need and importances will be developed through activites and participation. It can also we developed through preparing a report after discussion and preparing word list around us. Dialogue/Conversation will be based on discussions, interviews and newsreports

Unit–2 : Developing Oral skills (Listening and Speaking)

- Importance of listening and speaking in acquiring proficiency in English
- Identification and production of distinctive sounds in English : Syllable, Stress, intonation and rhythm
- Recognizing words in various contexts
- Identifying meaning/gist, identifying emotions/feelings in an utterance
- Producing language in acceptable forms : Conveying information, Formulating an appropriate response
- Presentation skill.

All these features of listening and speaking will be developed through participating activities/tasks in the following genres: Poem recitation, Picture description, Dialogues/conversations (theme based interaction), discussions, interviews, Story telling, Speeches, announcements, news reports.

Unit–3 : Developing Reading and Writing skills

A. Reading:

- Study Skill
- Reading for local and global comprehension (including inferences and extrapolation)
- Extensive and intensive reading
- Skimming and scanning

These reading skills will be developed by making learners read the following text types:

Sign posts, slogans, wrappers, jokes, riddles, notices, messages, posters, newspapers, magazines, travel brochures, websites, poems, stories, diaries, letters, descriptions, emails, sms, dictionary.

B. Writing:

The focus of this section will be developing writing skills in the following:

- Mechanics of writing: strokes, curves, proper shape , size and spacing
- Writing messages, descriptions, reports, notices, applications, letter, invitations, posters, slogans
- Writing a paragraph having coherence, cohesion and unity

These writing skills will be developed by making learners write the following: Message, description, reports, applications, invitations, slogans. It will also develop the way of writing for the learners

Unit-4 : Vocabulary Enrichment and Grammar in Context

A. Vocabulary:

- Words around us (list of active and passive words to be identified, including phrasal verbs and idioms) using them in different contexts
- Content words and function words
- Antonyms, synonyms, homophones, homonyms
- Word formation (using prefixes and suffixes etc)

B. Grammar in Context:

- Need and importance of Grammar : Notion of correctness vs notion of appropriateness
- Traditional grammar vs Grammar in Context
- Grammatical items : Types of sentences, Time and tense, Parts of speech, subject verb agreement, transformation of sentences (including voices, direct and indirect speech etc), linkers, modals, prepositions and prepositional phrases

The focus will be on text book and the words which are generally used around us . The activities will be related to the text book in order to make the concept of different usage of words and grammar items. The concept of grammar will be given through dialogue/conversation and picture description.

Suggestive works

- Collect as many words of English as you can (but not less than 50 words) which are used by the common people in your locality?
- Have an informal talk with common people and guardians to know their views on the use and importance of English language and prepare a report on it.
- List out the resources for language learning at different levels
- Make a list of words which have different syllables stressed when used as different parts of speech
- Choose two passages – one for evaluating skimming and scanning skills and another for skill of making inferences – and frame questions accordingly.
- List out the problems that your students had in your class and write in detail the measure you took to overcome these problems
- Develop reading material/activities essentially needed for developing listening and speaking skills.
- Collect at least 100 words of English (or as many as possible) that a child knows before coming to school.
- Make a list of words in English where p, r, l, k, d sounds are not pronounced.
- Listen to radio news in English and list some of the important news of the day.
- Make a glossary of homophones.

F-10

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

संदर्भ

हमारा परिवेश हमें बहुत कुछ सिखलाता है और अपने जीवन में हम प्रकृति से सीखे सिद्धान्तों व नियमों का बखूबी उपयोग करते हैं। 'पर्यावरण अध्ययन'' परिवेश को जानने–समझने का उपागम (approach) है। पर्यावरण अध्ययन मूलतः प्रकृति, उसका प्रभाव तथा मानवीय अन्तःक्रिया के फलस्वरूप प्रभावित प्रकृति का अध्ययन है। छोटी उम्र के बच्चों की बात करें तो हम पाते हैं कि उनके और पर्यावरण में अन्तःक्रिया समग्र रूप तथा सम्पूर्ण इकाई के रूप में होती है। इसलिए यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रारम्भ में बच्चे अपने समीपस्थ पर्यावरण की वस्तुओं और घटनाओं पर चर्चा करें, अपनी सोच और समझ को व्यक्त करें। इसलिए इस स्तर पर पाठ्यवस्तु उनके अपने शरीर, परिवार, घर तथा आस–पड़ोस से संबंधित रखा जाना चाहिए। पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के दौरान हमें बच्चों के स्थानीय परिस्थिति व वातावरण के साथ–साथ वहाँ उपलब्ध स्थानीय संसाधन का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन शिक्षण एक चुनौती है, क्योंकि यहाँ प्रकृति को ही प्रयोगशाला मानकर, कई छोटे–छोटे वैज्ञानिक प्रयोग कर उनकी जिज्ञासा और स्वयं करके सीखने, जानने–समझने के कौशल का बढ़ावा किया जा सकता है। ऐसी स्थितियों में शिक्षक, बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित तकनीकों का उपयोग कर पर्यावरण शिक्षण को रोचक, अर्थपूर्ण एवं सार्थक कर सकते हैं। पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य बच्चों को प्रश्न गढ़ने व पूछने के मौके उपलब्ध कराना, उनकी जिज्ञासा को बढ़ानेवाले सवाल पूछना तथा उनकी मान्यताओं के औचित्य को समझना होना चाहिए।

आसपास की वे सारी जैव–अजैव वस्तुएँ, परिस्थितियाँ, घटनाएँ, बल और क्रियाएँ जो हमारे जीवन को प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर प्रभावित करती हैं, पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण अध्ययन एक समावेशी विषय के रूप में स्थापित है, जिसे सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान के आधार के स्वरूप में समझना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर इसे तीन संदर्भों में समझा जा सकता है, यथा :

- पर्यावरण के बारे में शिक्षा
- पर्यावरण के माध्यम से शिक्षा
- पर्यावरण के संवर्द्धन व संरक्षण के लिए शिक्षा

प्राथमिक स्तर पर 'समाज' और 'विज्ञान' के समेकित अध्ययन को 'पर्यावरण अध्ययन' कहा गया है। अतः इस स्तर पर 'विज्ञान' और 'समाज विज्ञान' के लिए अलग–अलग पाठ्यक्रम का प्रावधान नहीं किया जाता है। पर्यावरण अध्ययन के माध्यम से बच्चों में सामाजिक जीवन व वैज्ञानिक तथ्यों की बुनियादी समझ को विकसित करने का एक प्रयास है। प्राथमिक कक्षाओं में इसके अंतर्गत विभिन्न विषयों– विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित व भाषा आदि की अवधारणाओं को, पर्यावरण का उपयोग करते हुए, इनकी आधारभूमि तैयार की जाती है।

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में कुछ बुनियादी बातों पर स्पष्टता आवश्यक है। जैसे बच्चे के पर्यावरण को मात्र भौतिक पहलुओं तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। पर्यावरण में उससे सम्बन्धित अमूर्त पहलुओं को भी शामिल किया जाए। साथ ही पर्यावरण की समझ में बच्चे की सीखने की असीम क्षमता को भी सराहा जाना चाहिए। अतः पाठ्यपुस्तक से परे बच्चों के पर्यावरण की समझ को भी शिक्षण का अंग बनाया जाना चाहिए।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य व उसकी प्रकृति को समझते हुए बच्चों के बौद्धिक, बोधात्मक व संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में उसके महत्व को पहचानना।
- पर्यावरण अध्ययन में निहित अवधारणाओं व उनसे संबंधित तथ्यों का विश्लेषण करने का सामर्थ्य विकसित करना।
- अपने परिवेश के अनुभवों के आधार पर बच्चों में अवधारणाओं का विकास व परिष्करण के तरीके जानना व विकसित करना।
- कक्षा शिक्षण में संवाद व गतिविधि के माध्यम से पर्यावरणीय प्रक्रियाओं और परिवर्तनों की व्याख्या करने की योग्यता प्राप्त करना।
- प्रकृति, व्यक्ति एवं समाज के विभिन्न पहलुओं की संरचना और प्रक्रियाएं एवं उनके बीच के अंतर्सम्बंधों को जानने–समझने की जिज्ञासा व ललक उत्पन्न करना।
- व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्र एवं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ एवं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ में समझने की योग्यता विकसित करना।
- पर्यावरणीय परिघटनाओं में प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अलग–अलग पहलुओं को समझते हुए समेकित दृष्टिकोण विकसित करना।
- सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, सहिष्णुता एवं समता–समरसता का भाव विकसित करना।
- लैंगिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभेदों के प्रति संवेदनशील तथा समालोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।
- बाल मनोविज्ञान व बच्चे कैसे सीखते हैं की समझ को व्यापक, तर्कपूर्ण एवं क्रमबद्ध करने का प्रयास करना।
- खोजी व करके सीखने की प्रवृति उत्पन्न करना तथा अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत करना।
- कक्षा शिक्षण व अन्य गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना।
- दुर्घटनाओं/आपदाओं के समय उचित एवं तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हुए बचाव व निदानात्मक उपायों पर भी समझ बनाना।
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में विभिन्न शिक्षण–विधियों के उपयोग एवं उनके विकास करने की क्षमता बढ़ाना।
- स्थानीय संसाधनों का सृजनात्मक उपयोग करते हुए शिक्षण–सामग्रियों का निर्णय करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार नवाचार कर उद्देश्यपूर्ण बनाना।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में समझते हुए उसके तरीके विकसित करना।

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

पूर्णांक : 50 (35+15) **F-10** **अध्ययन अवधि : 40 घंटा**

इकाई–1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- प्रकृति एवं क्षेत्र
- उद्देश्य एवं महत्त्व
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 के संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन
- पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप में (एकीकृत उपागम)
- प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन का संयोजन व विस्तार : पर्यावरणीय प्रकरण (थीम) के प्रमुख आधार परिवार एवं मित्र, जल, भोजन, आवास, यात्रा, वस्तुओं का निर्माण एवं व्यवहार

इस इकाई के माध्यम से पर्यावरण अध्ययन की आवश्यकता व महत्त्व, पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति एवं क्षेत्र तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 के आलोक में पर्यावरण अध्ययन की वांछनीयता के प्रति प्रशिक्षुओं में विवेचनात्मक समझ व परख विकसित की जाएगी। प्रशिक्षु पर्यावरण अध्ययन के प्रमुख प्रकरणों (थीम) को समझ सकें, पर्यावरण से जुड़े मुद्दों एवं चुनौतियों से जूझ सकें एवं अपने विद्यार्थियों को भी इसके प्रति संवेदनशील बना सकें, इसकी मानसिक तैयारी के रूप में इस इकाई का उपयोग किया जाएगा। यह इकाई प्रशिक्षुओं में प्रकृति, समाज एवं पर्यावरण पर मानवीय व्यवहार का प्रभाव, उनके बीच का अंतर्सबंध तथा पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करेगी तथा समेकित रूप से पर्यावरण अध्ययन–अध्यापन के महत्त्व से अवगत करायेगी। इस इकाई के अध्ययन से प्रशिक्षुओं में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों से जुड़े मुद्दों को समालोचनात्मक दृष्टि से देख सकने की क्षमता विकसित होगी।

इकाई–2 : पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में हमारा एवं बच्चों का परिवेश

- बच्चों के परिवेश सम्बन्धी अनुभव, शिक्षण के आधार के रूप में।
- परिवेश की विविधता की समझ।
- अपने परिवेश से अन्य परिवेशों की तुलना
- परिवेश सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह एवं विश्लेषण

इकाई–1 में किये गये विमर्शों एवं सैद्धान्तिक अवधारणाओं को संदर्भ में स्थापित करने से ही एक व्यापक समझ बन सकती है। अतः इस इकाई के माध्यम से बच्चे के परिवेश को भी विविध प्रकार से समझने का प्रयास किया जायेगा। प्रशिक्षुओं में एकत्रित सूचनाओं एवं अनुभवों को पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में विश्लेषित करने का कौशल विकसित किया जायेगा। अपने परिवेश की विविधता के साथ–साथ अन्य दूरस्थ परिवेशों से उनकी तुलना कर पाने की क्षमता का विकास भी अपेक्षित है। उदाहरणार्थ– घर, पेड़–पौधे, भोजन इत्यादि में परिवेश के साधन उपलब्धता के आधार पर कई भिन्नताएँ व समानताएँ देखी जा सकती हैं। प्रशिक्षुओं में इसकी समझ बने तथा वे इसे अपने शिक्षण में प्रयोग कर पायें।

इकाई–3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र (शिक्षण–अधिगम विधियाँ)

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण उपागम में विविध शिक्षण विधियों का प्रयोग करके इसे रोचक व सार्थक बनाना, इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य है। प्रस्तुत इकाई प्रशिक्षुओं को पर्यावरण अध्ययन की विविध–विधियों से परिचित कराती है तथा अपने परिवेश एवं पर्यावरण को समझने का तौर–तरीका बताती है।

- खोज/अन्वेषण विधि
- प्रोजेक्ट विधि
- परिभ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि
- प्रयोग विधि
- गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम
- सामूहिक क्रियाकलाप
- प्रदर्शनी/चर्चा एवं संवाद आधारित विमर्श

इस इकाई के अध्ययन से प्रशिक्षु पर्यावरण अध्ययन से जुड़ी अवधारणाओं को विविध विधियों के माध्यम से समझेंगे। पर्यावरण अध्ययन में किन–किन कौशलों का विकास आवश्यक है, किस प्रकार सूचनाएँ संग्रहित की जाती हैं, कैसे सूचनाओं का उपयोग एवं उनका विश्लेषण किया जाता है, कैसे तथ्यों की व्याख्या की जाती है, किस प्रकार निष्कर्ष निकाले जाते हैं, इसकी समझ विकसित होगी। इस इकाई के अध्ययन–अध्यापन से प्रशिक्षु विभिन्न विधियों का पर्यावरण अध्ययन–शिक्षण में उपयोग करने में सक्षम होंगे। पर्यावरण शिक्षण में आवश्यकतानुसार वैकल्पिक विधियों का उपयोग या एकाधिक विधियों को अपनाने का कौशल भी उनमें विकसित होगा। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक से जुड़े मुद्दों पर थीम–संजाल का निर्माण कर सकने एवं किसी पाठ्यवस्तु/विषयवस्तु की अवधारणा–मापन की क्षमता प्रशिक्षुओं में उत्पन्न होगी साथ ही वे परिवेश से जुड़ी छोटी–छोटी घटनाओं/गतिविधियों के माध्यम से स्वयं एवं अपने विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण की समझ विकसित करेंगे।

पर्यावरण अध्ययन में शिक्षण के वैकल्पिक विधियों को प्रशिक्षुओं द्वारा क्रियान्वित किया जायेगा ताकि वे इन विधियों की विशेषताओं एवं सीमाओं को समझ सके। प्रशिक्षुओं को विद्यार्थी–केन्द्रित शिक्षण विधियों से परिचय एवं इनके अनुप्रयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा। शिक्षण सिर्फ कक्षा में ही होती है, इस मान्यता को तोड़ना भी इस इकाई का एक उद्देश्य है। उपर्युक्त शिक्षण–विधियाँ कक्षा–केन्द्रित शिक्षण से परे उठकर व्यापक समझ को सम्बोधित करती है।

इकाई–4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका तथा आकलन एवं मूल्यांकन

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक की भूमिका
- कक्षा के बाहर और भीतर गतिविधियों का आयोजन एवं संगठन
- कैसे जुटाएं सामग्रियां
- आकलन : – अपने अध्यापन कार्य का विश्लेषण एवं सुधार का आधार
  - – विद्यार्थियों के कार्यों का बहुआयामी आकलन
  - – सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रकिया
  - – सीखने के संकेतकों की समझ
  - – आकलन सम्बंधी सूचनाओं का इस्तेमाल : रिपोर्टिंग और फीडबैक

प्रस्तुत इकाई पर्यावरण अध्ययन के विषयवस्तु के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करती है। यहां यह समझना महत्वपूर्ण है कि विषयवस्तु मात्र देय नहीं होता है बल्कि शिक्षक उस निर्धारित विषयवस्तु को पुनर्संदर्भित एवं पुनर्संरचित (recontexualise and reconstruct) करते हैं। बच्चों के चारों ओर की दुनिया के प्रति जिज्ञासा को पोषण मिले तथा वे सूक्ष्म अवलोकन, वर्गीकरण व स्वयं करने वाली गतिविधियों इत्यादि से मूल ज्ञानात्मक कौशल हासिल कर सकें, इसके लिए शिक्षकों में क्षमता का विकास किया जाएगा। नवीन प्रयोगों को करने की सृजनात्मकता को भी शिक्षकों में प्रोत्साहित किया जाएगा। एक शिक्षक अपने शिक्षण का आत्म–मंथन कर सके, इसके विकास पर भी बल दिया जाएगा।

आकलन और मूल्यांकन शिक्षण का एक अभिन्न अंग है। अतः इस इकाई के द्वारा मूल्यांकन को विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास से जोड़कर देखा जाएगा। पर्यावरण अध्ययन में शिक्षक, मूल्यांकन में किन–किन तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं, इस पर बल दिया जाएगा। मूल्यांकन विद्यार्थियों के उपलब्धि पर केन्द्रित न रहे बल्कि वह शिक्षकों के लिए अपने शिक्षण को समृद्ध बनाने का एक उपकरण/संसाधन बने/ विद्यार्थियों के मूल्यांकन में निरन्तरता किस प्रकार स्थापित की जाए तथा उनके साक्ष्यों को किस प्रकार से संग्रहित एवं विश्लेषित किया जाए, इनकी चर्चा भी इस इकाई में की जाएगी। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का तात्पर्य कक्षा में या कक्षा से बाहर परिवेश में चलनेवाली शिक्षण–अधिगम (सीखने–सिखाने) प्रक्रिया का अटूट हिस्सा के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।

प्रस्तावित कार्य

- प्रशिक्षुओं द्वारा प्राथमिक स्तर के पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित विषय वस्तु का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
- स्थानीय परिवेश से सम्बन्धी किसी ज्वलंत मुद्दे पर सूचनाओं को इकट्ठा करना तथा इसी विषय में अपने विद्यार्थियों के अनुभवों व अवधारणाओं/मान्यताओं को ज्ञात करना। प्राप्त सूचनाओं एवं अनुभवों का पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में विश्लेषण करना।
- इकाई में दिये गये शिक्षण विधियों को प्रशिक्षु अपने शिक्षण में प्रयोग करें।
- साथ ही वे गतिविधियों की सूची बना सकते हैं तथा विभिन्न विषयवस्तुओं के शिक्षण के लिये उनके अनुरूप उपयुक्त शिक्षण–विधि की रूपरेखा का निर्माण भी कराया जा सकता है।
- उदाहरण : 'घर' की संकल्पना को पढ़ाने के लिये वे किन–किन शिक्षण विधियों का किस प्रकार से प्रयोग करेंगे, इसकी रूपरेखा बनाएँ।
- इस इकाई के लिए वर्तमान पाठ्यपुस्तक के पाठों से सहयोग लिया जा सकता है।
- स्थानीय संसाधनों को वे पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में कैसे प्रयोग कर सकते हैं, इस पर लघु प्रोजेक्ट देना।
- समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा के सबसे पीछे छूट जाने वाले छात्र/छात्राओं को कक्षा–प्रक्रिया में प्रशिक्षु शिक्षक द्वारा सम्मिलित किये जाने का विशेष प्रयास।
- प्रशिक्षुओं द्वारा विद्यार्थियों के गतिविधियों का अवलोकन करना किसी कार्य विशेष के संदर्भ में (जो पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित हो)। अवलोकन के आधार पर मूल्यांकन के मापदण्डों को निर्धारित करने का अभ्यास करना।
- हर्बेरियम का निर्माण करना।
- पौधे के जड़ तने एवं पत्ती के रूपातंरण का अध्ययन करना।
- अपने स्थानीय क्षेत्र में मिलने वाले भोजन के प्रकार यथा अन्न, सब्जी, फल एवं अन्य प्रकार के भोजन/पोषकों की सूची/चार्ट (जो संतुलित आहार प्रदान करें), का निर्माण करना।

F-11

कला समेकित शिक्षा

संदर्भ

मनुष्य में कला के प्रति आकर्षण एक सहज भाव है, जो विविध प्रकार से उसके जीवन में शामिल है। सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी कला का अपना विशेष महत्त्व है। समकालीन विमर्श में कला को विद्यालयी शिक्षा से भी जोड़ने पर बल दिया जा रहा है, क्योंकि शिक्षार्थियों के सृजनात्मक क्षमता के विकास में कला की अहम भूमिका है। कला न सिर्फ उनकी संवेदनाओं को झकझोरती है बल्कि अन्य विषयों के ज्ञान को प्राप्त करने तथा उन्हें समझने का बहुपरिप्रेक्षीय नज़रिया भी सुझाती है। साथ ही, कला के माध्यम से शिक्षार्थीगण अपने विचार एवं भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने के कई उपागमों से भी अवगत होते हैं। इस तरह विद्यालयी पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के संदर्भ में कला के दो स्वरूप दिखते हैं–पहला, बच्चों के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) विकास के अहम पहलू के तौर पर, और दूसरा, शिक्षणशास्त्रीय उपागम के तौर पर। अतः बच्चों के लिए विभिन्न कला अनुभव तथा कला समेकित शिक्षण प्रक्रिया, दोनों साथ–साथ लेकर चलना होगा। इसके लिए कला समेकित शिक्षा के विविध प्रकारों के संदर्भ में प्रशिक्षुओं की अपनी तैयारी होनी चाहिए, जिसका भरपूर अवसर इस विषयपत्र में है। यहां, कला समेकित शिक्षा की अवधारणा के साथ–साथ प्रशिक्षुओं को कला के दो प्रकार –दृश्य कला और प्रदर्शन कला से अवगत कराया जाएगा तथा इन्हें विद्यालय में किस तरह उपयोग लाना है, उसकी समझ बनायी जाएगी। दृश्य कला की बात करें तो इसकी विभिन्न सामग्रियाँ अपने निर्माण की प्रक्रिया से लेकर उत्पाद का शक्ल ग्रहण करने तक सीखने के असीम अवसर उपलब्ध कराती हैं। उसी तरह, आम जनजीवन में कला का जो स्थान है, उस संदर्भ में प्रदर्शन कला की अपनी एक विशिष्ट भूमिका है। इन दोनों ही कलाओं के विविध रूपों को लेकर विद्यालयी गतिविधियों, शिक्षण व आकलन प्रक्रियाओं को सृजनात्मक बनाने का कार्य किया जाएगा। विषयपत्र की प्रकृति प्रायोगिक है। अतः यह अपेक्षा है कि यहां प्रशिक्षु कला के विभिन्न अवधारणाओं व प्रकारों को प्रायोगिक रूप से सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- प्रशिक्षुओं को कला समेकित शिक्षा की व्यापक अवधारणा एवं स्वरूपों से अवगत कराना।
- सीखने–सिखाने में कला समेकित शिक्षा की प्रभावी भूमिका का विश्लेषण करना।
- कलात्मक सृजनशीलता को बच्चें के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) विकास के तौर पर समझना।
- दृश्य कला से सम्बंधित विभिन्न सामग्रियों का निर्माण, शिक्षण में प्रयोग की योजना एवं क्रियान्वयन की समझ विकसित करना।
- प्रदर्शन कला की अवधारणा तथा उसके विविध स्वरूपों से अवगत होना।
- प्रदर्शन कला के विविधि स्वरूपों को विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ना।
- विद्यालय में कला अनुभवों के अवसरों को विकसित कर पाने के तरीकों को समझना।
- कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन के विभिन्न उपागमों एवं तकनीकों को जानना एवं विद्यालय में उनका प्रभावी प्रयोग करना।

कला समेकित शिक्षा

पूर्णांक : 100 (40+60) | **F-11** | **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई–1 : कला समेकित शिक्षा की समझ

- कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा की समझ
    - कला क्या है
    - कला शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
    - कला समेकित शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
- समकालीन क्षेत्रीय कलाओं, कलाकारों एवं कारीगरों से परिचय
- 'कला शिक्षा' से 'कला समेकित शिक्षा' की ओर : अवधारणात्मक समझ
    - बाल कला की समझ
    - बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में कला समेकित शिक्षा की भूमिका
    - प्रारंभिक स्तर की पाठ्यचर्या से कला समेकित शिक्षा का जुडाव

कला सौदर्भ का बोध और अभिव्यक्ति है। यह मनुष्य के विचारों और भावों को प्रकट करने की भाषा है। जिन तथ्यों या विचारों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना कठिन होता है, इन्हे अभिव्यत्त करने के लिए कला एक सशक्त माध्यम है। इस तरह कला बच्चों के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) विकास का अहम पहलू है। साथ ही, कला शिक्षा सांस्कृति विरासत और विविधता को समक्षने तथा उसकी निरन्तरता को बनाए का उपयक्त साधन है। कला के विविधि रूपों एवं उनके माध्यम से अन्य विषयों का समाकलन सरल तरीके से कैसे संभव हो इस पर चिंतन एवं क्रियान्वयन हेतु कला समेकित शिक्षा की आवश्यता है। अतः इस इकाई के माध्यम से सम्पूर्ण विकास में कला समेकित शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या से कला समेकित शिक्षा का जुड़ाव, समकालीन क्षेत्रीय कलाओं, कलाकारों/कारीगरों से परिचय की आवश्यकता को भी स्पष्ट किया गया है।

इकाई–2 : दृश्य कला

- दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ एवं शैक्षिक उपयोगिता
- दृश्य कला सम्बंधी कला अनुभव
- दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सम्बंधित सामग्री से परिचय एवं विकास : यथा–चित्र बनाना, मुखौटा, मिरर इमेज, कागज एवं कबाड़ से सामग्री निर्माण

ललित कला के एक मूख्य भाग के रूप में दृश्य कला को माना जाता है। इस इकाई में दृश्य कला की अवधरणस को स्पष्ट करतें हुए इसके निर्माण की प्रक्रिया एवं इनमं प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों से परिचय कराया गया है। उनका इस्तेमाल (उपयोग) विद्यालयी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहज रूप से किया जा सकता है। इससे बच्चों की अभिरूची शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बढ़ेगी तथा उनका सीखना सरल एवं सहज हो सकेगा।

इकाई–3 : प्रदर्शन कला

- प्रदर्शन कला : अवधारणात्मक समझ एवं उपयोगिता
- प्रदर्शन कला सम्बंधी कला अनुभव
- प्रदर्शन कला के विविध प्रकार एवं उनकी तैयारी :
  - वाचन, सृजनात्मक लेखन एवं सम्प्रेषण कला
  - संगीत, गायन एवं नृत्य : लोक, शास्त्रीय एवं समकालीन
  - परछाई से रोचक स्वरूपों को गढ़ना
  - नाटक मंचन के विविध स्वरूप
- 'शिक्षा में रंगमंच' की अवधारणात्मक समझ तथा उपयोगिता

शिक्षण अधिगम प्रिक्रिया में प्रदर्शन कला का प्रभावी समावेश करने के लिए इसकी सतही ज्ञान आवश्यक है, यथा वाचन, सृजनात्मक, लेखन, संगीत, नृत्य, पुतली संचालन नाट्य आदि। इस इकाई में प्रदर्शन काल के विविध स्वरूपों पर चर्चा की गई है। शिक्षा में रंगमंच का अभिनव प्रयोग तथा इसके समकालिन परिवर्तित रूपों पर एक समझ बनाने की कोशिष की गई हैं

इकाई–4 : कला अनुभव का शिक्षण मे सृजनात्मक प्रयोग

- 'सीखने की योजना' और कला समेकित शिक्षा : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ
- विभिन्न कला सामग्रियों का शिक्षण में प्रयोग : विषयों की विषयवस्तु के संदर्भ में सीखने की योजना एवं क्रियान्वयन
- विद्यालय के भवन, जगह, समय और गतिविधि में कला अनुभव के समावेश के तरीकें
- सीखने–सिखाने में कला अनुभव के प्रभावी समावेश हेतु शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका

मानव जीवन में कला निरंतर चलने वाला प्रक्रिया है। तथा इस प्रक्रिया में वह नविनतम अनुभव प्रतिक्षण करता है। चाहे पर्व–त्योहारों में रंगोली बनाना हो या राष्ट्रीय पर्व में विद्यालय को सजाना हो कला सृजन का अनुभव उसे हमेशा स्पंदित करता है। इस इकाई में कला अनुभव एवं विद्यालय स्तर पर इसके लिए स्थान, समय, योजना बनाने पर विस्तार से चार्च की गई है तथा इसका शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समावेश की समझ बनाने की कोशिश की गई है। साथ ही दृश्य कला और प्रदर्शन काल के शिक्षण में सृजनात्यंक प्रयोग करने की दृष्टि दी गई है।

इकाई–5: कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन

- कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन : अवधारणात्मक समझ, बच्चों के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) मूल्यांकन में भूमिका, क्रियान्वयन के दौरान याद रखे जानेवाले प्रमुख बिन्दु
- आकलन एवं मूल्यांकन के संकेतक : अर्थ, दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला के संदर्भ में
- कला में मूल्यांकन के विभिन्न उपागमों एवं तकनीकों की समझ : अवलोकन (आबजर्वेशन) सूची, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो, चेक लिस्ट, रेटिंग स्केल, घटना वृत्तांत (एनॅकडॉटल रेकार्ड), प्रदर्शन (डिस्प्ले व प्रेजेंटेशन) आदि
- आकलन एवं मूल्यांकन को सम्प्रेषित एवं प्रस्तुत करने के विविध तरीकें

सामन्यतः कला उत्पादों की मूल्यांकित करने की परंपरा रही हैं। परन्तु हम भूल जाते है कि कला निर्माण एवं सृजन की एक प्रक्रिया भी है जो निरंतर सीखने–सिखाने का अवसर उपलब्ध कराती है। चूंकि, कलात्मक सृजनशीलता का सम्बंध बच्चों के सह–शैक्षिक विकास से है, अतः इसे बच्चों के आकलन–मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण आधार होना चाहिए, जिसकी चर्चा इस इकाई में की गयी है। साथ ही, कला समेकित शिक्षा में मूल्यांकन के अंतर्गत ऐसे उपागमों एवं तकनीकों की चर्चा की गयी है, जिससे बच्चों के आकलन–मूल्यांकन का काम आसान होता है।

प्रस्तावित कार्य

- प्रारम्भिक स्तर के पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों का विश्लेषण कला समेकित शिक्षा के दृष्टिकोण से करें।
- विभिन्न कलाओं को समाज किस प्रकार से सहेज कर रखता है तथा उन्हें आगे प्रसारित करता है? इसका विश्लेषण करें।
- अपने समुदाय से किसी कलाकार को अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर आमंत्रित करें तथा उनसे सम्बंधित कला के विभिन्न आयामों पर चर्चा करें।
- दृश्य कलाओं से सम्बंधित वैसी सामग्रियों का निर्माण करें जिनका सीखने–सिखाने में जीवन्त प्रयोग हो सके।
- अपने विद्यालय में रंगमंच के निर्माण हेतु एक योजना बनाएं तथा उसका क्रियान्वयन करें।
- आपके समुदाय में प्रदर्शन कला के किन–किन स्वरूपों की प्रमुखता है, उनका विश्लेषण करें।
- कला अनुभव को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय भवन का सृजनात्मक प्रयोग कैसे हो सकता है, इसका विश्लेषण करें।
- कला समेकित शिक्षा में आकलन व मूल्यांकन के तरीकों का प्रयोग कर उनकी समीक्षा करे।

F-12

शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

संदर्भ

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी हमारे सामाजिक अंतःक्रिया का एक आवश्यक अंग बन चुकी है। शिक्षा में तकनीकी का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है। संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न अन्वेषणों के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में क्रान्तिकारी बदलाव लाये जा रहे हैं। आज अनेक प्रकार के सूचना व संचार तकनीक समर्थित शिक्षा व अध्यापन विधियों का प्रयोग शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान को सम्वर्धित करने के लिये किया जा रहा है। इन तकनीकों के कारण शिक्षा में हो रहे नवाचार के साथ–साथ सूदूर क्षेत्रों तक शिक्षा का प्रसार भी हो रहा है। सूचना व संचार तकनीक के विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाओं के संग्रहण, संचयन, सुगम उपयोग तथा तेजी से आदान–प्रदान की सुविधा है। शिक्षा के क्षेत्र में नई संचार तकनीकों के उपयोग ने शिक्षक की भूमिका, शिक्षण में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) का सही समावेशन बच्चों में प्रभावकारी अधिगम को उत्साहित एवं उत्प्रेरित कर सकता है। साथ ही साथ, तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षक के अन्य कार्यों जैसे मूल्यांकन, संसाधन सेवा आदि को सरल एवं प्रभावकारी बनाया जा सकता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए भी सूचना व संचार तकनीक का विशेष महत्त्व है। एक षिक्षक इस तकनीक के कुशल प्रयोग द्वारा अपने कार्यों को व्यवस्थित तथा अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है। आई.सी.टी. तकनीकी का शिक्षण अधिगम कार्यों में उपयोग के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षकों में इसके प्रयोग से शिक्षण कौशल की क्षमता विकसित की जाये। इस पाठ्यक्रम के विषयवस्तु के माध्यम से प्रशिक्षु नवीन आई.सी.टी. संसाधनों को शैक्षिक प्रक्रियाओं का अभिन्न भाग मानते हुये उनसे अवगत हो पायेंगे। साथ ही, वे कम्प्यूटर को समझते हुये उसके द्वारा विभिन्न ऑफिस ऑटोमेशन क्रियाओं तथा इन्टरनेट आधारित क्रियाओं के प्रति प्रायोगिक समझ स्थापित करते हुये इनका शिक्षण–अधिगम में प्रयोग कर सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु के षिक्षण के उद्देष्य निम्नलिखित हैं :–

- आई.सी.टी. की अवधारणा तथा शिक्षा में इसकी उपयोगिता से अवगत कराना।
- आई.सी.टी. के विभिन्न उपागमों को शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग करने का कौशल विकसित करना।
- आई.सी.टी. के विभिन्न उपकरणों जैसे – टी०वी०, रेडियो, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, रिकार्डर इत्यादि के प्रयोग व रख–रखाव का कौशल विकसित करना।
- शिक्षण अधिगम को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिये इन तकनीकों के महत्त्व को समझना।
- इन्टरनेट, ब्राउज़र, ई–मेल तथा सर्च इंजन का शिक्षा में कैसे प्रयोग हो, ये जानना व प्रयोग करना।
- विद्यालय के विभिन्न विषयों के षिक्षण में आई.सी.टी. का समावेश कर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाना।

शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

पूर्णांक : 100 (40+60) **F-12** **अध्ययन अवधि : 80 घंटा**

इकाई–1 : शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी का परिचय

- सूचना तथा संचार तकनीकी की अवधारणा तथा समझ
- सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न अवयव
- शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की उपयोगिता एवं महत्व
- समावेशी शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी

एक शिक्षक को आज के सूचना क्रांति के युग में सूचना एवं संचार तकनीकी की अवधारणा एवं समझ से अवगत होना अनिवार्य है। डिजिटल लर्निंग की ओर उन्मूख समाज के लिए विद्यालय में भी आई.सी.टी. की उपयोगिता और बढ़ गई है। इससे शिक्षकों का काम आसान होगा। अतः प्रशिक्षुओं को इनकी समझ होनी चाहिए। आई.सी.टी. के उपयोग से आप कक्षा शिक्षण को रूचिकर एवं मनोरंजक बना सकते हैं। आई.सी.टी. को शिक्षा में जोड़ने से विद्यार्थियों की उपलब्धि पर भी एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, विशेष रूप से ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशल एवं प्रस्तुति कौशल इत्यादि पर। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में भी आई.सी.टी यन्त्रों का शिक्षण में विशेष प्रयोग बहुत ही लाभकर हो सकता है। इस सब की चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

इकाई–2 : सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध उपकरण

- शिक्षण–अधिगम में ऑडियो विडियो, मल्टीमीडिया साधनों की महत्ता तथा उपयोग
- कम्प्यूटर एवं मोबाइल (हैण्डहेल्ड उपकरण) का संक्षिप्त परिचय
- कम्प्यूटर के विभिन्न प्रकार एवं घटक
- कम्प्यूटर : स्मृति, भंडारण एवं क्लाउड स्टोरेज
- सॉफ्टवेयर के प्रकार
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में कम्प्यूटर एवं मोबाइल की भूमिका

आज सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में बखूबी हो रहा है। रेडियो से लेकर मोबाईल एप्पस एवं एंड्रायड तक का उपयोग बहुत तेजी से होता दिख रहा है। इन सारे कार्यों में हम कई प्रकार के ऑडियो–विडियो एवं मल्टीमीडिया साधनों का प्रयोग करते हैं। एक शिक्षक होने के नाते बदलती दुनिया में आई.सी.टी. के संसाधनों एवं उसके अनुप्रयोग को भी जानना बेहद जरूरी है। इस इकाई में हम शिक्षण अधिगम में उपयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के साधनों को जानेंगे एवं उसका उपयोग करना सीखेंगे। कम्प्यूटर का परिचय, उसके विभिन्न प्रकार एवं मोबाइल (हैण्डहेल्ड उपकरण) के बारे में जानेंगे। कम्प्यूटर एवं मोबाइल पर कई सॉफ्टवेयर ऐसे हैं जिनका इस्तेमाल कर वर्गकक्ष को रोचक एवं आनंदित बनाया जा सकता है एवं खेल–खेल में सीखाया भी जा सकता है। इस इकाई में शिक्षक सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध उपकरणों के साथ–साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के जुड़ाव के बारे में भी जानेंगे।

इकाई–3 सूचना एवं संचार तकनीकी के अन्तर्गत ऑफिस ऑटोमेशन का अनुप्रयोग

- वर्ड प्रोसेसर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- स्प्रेडशीट : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- कुछ अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर

पढने–पढ़ाने के अपने दैनिक कार्य में आप अक्सर यह महसूस करतें होंगे कि कुछ विषयों को बच्चों को सिखाने–समझाने के लिय ब्लैक–बोर्ड एवं चॉक के अतिरिक्त कुछ अन्य नवाचारी विधाओं को भी प्रयोग में लाया जाना जरूरी होता है। इस इकाई में हम कुछ ऐसे प्रयोगों के बारे में जिक्र करेंगे जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) की अहम भूमिका होगी। यहां, प्रशिक्षु ऑफिस ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर की मदद से कुछ डिजिटल सामग्री तैयार करने की कोशिश करेंगे, जैसे– लेटर–ड्राफ्टिंग, बायो डाटा तथा सारणी से सम्बंधित कार्य को वर्ड प्रोसेसर की सहायता से कर पाएंगे। आकड़ो पर भिन्न–भिन्न प्रकार के विश्लेषण करते हुए समेकित या आंशिक रिपोर्ट, स्प्रेड शीट की सहायता से दे पाएंगे। साथ ही, चित्र, विडियो, आवाज तथा विभिन्न प्रकार के डाटा को सम्मिलित करते हुए, स्लाइड के जरिए आकर्षक तरीके से प्रस्तुतीकरण कर पाएंगे। अंततः इस इकाई में प्रशिक्षु ऑफिस ऑटोमेशन का प्रयोग करते हुए विभिन्न विषयों के कठिन अवधारणाओं को भी सहज और रुचिकर बनाने के लिए कार्य करेंगे तथा उनका उपयोग कक्षा में बच्चों को सिखाने–समझाने में कर सकेंगे ।

इकाई–4 शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में इंटरनेट

- इंटरनेट : उपयोगिता, शैक्षिक महत्व एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में उपयोग
- विभिन्न प्रकार के ब्राउजर, सर्च इंजन एवं उनकी उपयोगिता
- ई–मेल, सोशल नेटवर्किंग एवं इंटरनेट उपयोग में सुरक्षा मूल्यों तथा सिद्धांत
- ई–लर्निग एवं ओपेन लर्निंग सिस्टम
- ओ.ई.आर (ओपेन एजुकेशन रिसोर्सेज) : समझ, स्रोत एवं शिक्षण अधिगम मे उनका उपयोग

एक शिक्षक होने के नाते आप अक्सर विभिन्न विषयों के अध्ययन के दौरान महसूस करते होंगे कि कुछ अधिक जानकारी आपको उस विषय के बारे में हासिल हो जाती तो अच्छा होता। आज इन्टरनेट ने हमारे सामने ऐसी एक सुविधा उपलब्ध करा दी है। इस अध्याय में हम इन्टरनेट के उपयोग को जानेंगे, सोशल नेटवर्किंग का प्रयोग करने का तरीका तथा इससे होने वाले लाभ, गुगल मैप से दुनिया की सैर तथा इन सब चीजो को गुगल ड्राइव के द्वारा ऑनलाइन स्टोरेज करना भी जानेंगे। हम इस इकाई में केवल इन्टरनेट के कार्यो तथा इसके लाभों को ही नहीं जानेगे बल्कि इन्टरनेट के उपयोग में हमें क्या क्या सावधानियां बरतनी चाहिए को भी जानने का प्रयास करेंगे।

इकाई–5 : प्राथमिक स्तर के विषयों के शिक्षण में आई.सी.टी. का उपयोग

- सीखने की योजना एवं विद्यालय के अन्य कार्य के साथ आई.सी.टी. का एकीकरण
- भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन में आई.सी.टी. संसाधन का प्रयोग
- मूल्यांकन में आई.सी.टी. का महत्व एवं उपयोग

शिक्षक इस पाठ से अपने आई.सी.टी. उपयोग की क्षमता हासिल कर पाएंगे जिससे वे अपने विद्यालय के विभिन्न कार्यों, लेखा–जोखा रखने, रिपोर्ट बनाने, सूचनाओं का संग्रहण करने, विद्यालयी गतिविधियों के दस्तावेजीकरण करने जैसी कई चीजों को कर पाने में कामयाब हो सकेंगे। इन कार्यों में आई.सी.टी. सहयोग प्राप्त होने पर विद्यालय के विभिन्न रिकॉर्ड व् दस्तावेजीकरण करना आसान हो जाता है और किसी भी समय वे उन दस्तावेजों को तुरंत उपलब्ध करा सकने की स्थिति में होते हैं। विद्यालयों में अक्सर आंकड़े मांगे जाते रहते हैं और ऐसी स्थिति में शिक्षक पूर्व के आंकड़ो को रजिस्टर व् कागजों में संभाल कर रखते है और उसे अपडेट करने के लिए उन्हें पुनः एक नया कागज बनाना पड़ता है। ये परेशानियाँ इस आई.सी.टी. के प्रयोग से वे दूर कर सकते हैं और विद्यालय के रिकॉर्ड और दस्तावेजों को बेहतर तरीके से संजोकर रखने में सफल हो सकते हैं। इसी तरह शिक्षण कार्य में आई.सी.टी. के उपयोग की क्षमता में इजाफ़ा भी इस यूनिट से अपेक्षित है। विभिन्न पाठों में आई.सी.टी. की संभावनाओं को तलाशने में यह इकाई शिक्षकों की मदद करेगा और आवश्यकतानुसार पाठों में आई.सी.टी. इंटीग्रेशन के विकल्पों पर नई सोच और नवाचार करने हेतु प्रेरित करेगा।

प्रस्तावित कार्य

- शिक्षण में प्रयुक्त आई.सी.टी. के उपकरणों जैसे – रेडियो, टी०वी०, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, इत्यादि का अध्ययन (परिचय, प्रयोग की विधि, विशेषता, शिक्षण में उपयोगिता) करें।
- आप अपने चारों ओर देखकर बताएं की कंप्यूटर एवं मोबाइल (हैंडहेल्ड उपकरण) का प्रयोग कहाँ होता हुआ आप को दिख रहा है? इसकी एक सूची तैयार करें. आप अपने मोबाइल के एप्लीकेशन्स की सूची बनाएँ तथा उसके उपयोग के बारे में बताएँ।
- आई.सी.टी. के किन्हीं पाँच उपागमों (इंटरनेट, पावरप्वाइंट, ऑडियो–विजुअल रिकॉर्डिन्ग, डॉक्युमेंट्री शो, ईमेल, फिल्म, रेडियो–ज्ञानवाणी, दूरदर्शन–ज्ञानदर्शन व अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम, आदि) के प्रयोग के कौशल को सीखें।
- अपने विद्यालय का एक परिचयात्मक प्रस्तुति तैयार करें जिसमें, विद्यालय के इतिहास, भौगोलिक स्थिति, शैक्षिक सुविधाएं, प्रबंधन तथा विकास के लिए आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला गया हो।
- इटरनेट से जुडना,ईमेल बनाना एवं ईमेल भेजने के तरीकों को जानना,एवं किसी भी सोशल नेटवर्किंग साईट पर अपना या अपने विद्यालय को जोड़े।
- अभी तक आपने जितने भी शैक्षिक साईट को देखा है एवं जिनका उपयोग आपने शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में किया है उसकी एक सूची तैयार करें।
- कक्षा–4 (पर्यावरण और हम) के पाठ "तरह–तरह के पक्षी" का या आप किसी अन्य पाठ का इस सॉफ्टवेर (पावरप्वाइन्ट) के माध्यम से प्रस्तुति करें ।
- किसी वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर 'शिक्षण अधिगम के लिए आई.सी.टी. कौशल कोर्स में अपने अनुभवों के आधार पर एक रिपार्ट तैयार करें।

SEP-1

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1
School Experience Programme-1

विद्यालय की पाठ्यचर्या में शिक्षकों के लिए हर रोज सीखने के बहुत सारे अवसर होते हैं। यदि कक्षायी शिक्षण से लेकर विद्यालय की तमाम गतिविधियों के सजग विश्लेषण का कौशल प्रशिक्षुओं में विकसित कर दिया जाए तो वे अपने कार्यों में कई नवाचार ला सकते हैं। विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के इस पहले भाग में प्रशिक्षुओं में कुछ ऐसे कौशलों को विकसित करने की अपेक्षा है जिससे वे अपने कार्य का स्वयं से विश्लेषण करके समस्याओं का समाधान कर सकें। इसके अंतर्गत प्रशिक्षुओं को न्यूनतम चार सप्ताह के लिए अपने विद्यालय में कुछ कार्यों को करना है, जिनकी रूपरेखा निम्नलिखित है :

SEP विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 100 अंक : इसमें पूर्णतः आंतरिक मूल्यांकन की योजना है। अर्थात प्रशिक्षुओं द्वारा किए जानेवाले अपेक्षित गतिविधियों का मूल्यांकन उसी प्रशिक्षण केन्द्र/संस्थान के साधनसेवी या प्रशिक्षकगण करेंगे। इसके अंतर्गत, साधनसेवियों को लगभग समान संख्या में प्रशिक्षु आवंटित कर दिए जाएंगे। इस तरह, हर साधनसेवी के पास मेंटरिंग के लिए लगभग 15–20 प्रशिक्षु आएंगे। हर साधनसेवी सह मेंटर का यह कार्य होगा कि वह निम्नलिखित गतिविधियों को करने के लिए अपने प्रशिक्षुओं को सुझाव दें और फिर उनका मूल्यांकन करें।

	गतिविधियाँ	अंक
1.	कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण	30
2.	एक्शन रिसर्च	30
3.	विद्यालय उन्नयन योजना	20
4.	विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण	20
	कुल	**100**

1. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन एवं विश्लेषण

कक्षा में हो रहे शिक्षण का अवलोकन एक जटिल कार्य है जिसमें शिक्षक और बच्चें, दोनों की गतिविधियां साथ–साथ चलती हैं। अतः अवलोकन का केन्द्र केवल शिक्षक द्वारा किया जा रहा शिक्षण कार्य ही नहीं बल्कि बच्चों द्वारा की जानेवाली गतिविधियां भी होंगी। इस कार्य के माध्यम से प्रत्येक प्रशिक्षु में कक्षायी शिक्षण का गहन अवलोकन करने की क्षमता का विकास करना है ताकि वे कक्षायी शिक्षण के विभिन्न आयामों की पहचान कर सकें तथा उनका विश्लेषण डी.एल.एड. कार्यक्रम के विभिन्न विषयपत्रों जैसे–'समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ', 'बचपन और बाल विकास', 'भाषा की समझ और आरम्भिक भाषा विकास', 'विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास' आदि से प्राप्त समझ के आधार पर कर सकें।

कक्षा के प्रत्यक्ष तत्वों का अवलोकन करना भी उतना सरल नहीं है जैसा प्रतीत होता है। इसके लिए भी, कुछ अपेक्षित कौशलों की अनिवार्य आवश्यकता होती है। इस कार्य के अंतर्गत कक्षायी शिक्षण का अवलोकन मुख्यतः दो तरीकों से किया जाएगा। शुरूआती अवलोकन के लिए प्रत्येक प्रशिक्षु द्वारा अवलोकन सूची का विकास किया जाएगा, जिसमें अवलोकन के विभिन्न पक्षों को दर्ज किया जाएगा। अवलोकन करने से पूर्व, इस सूची को प्रत्येक प्रशिक्षु अपने मेंटर से समीक्षा करवाएंगें और प्राप्त सुझावों के आधार पर अवलोकन सूची को सम्वर्धित करके विद्यालय में अवलोकन हेतु ले जाएंगे। चार सप्ताह में से दो सप्ताह का अवलोकन, प्रशिक्षु द्वारा विकसित अवलोकन सूची के आधार पर किया जाएगा। यह स्पष्ट किया जा रहा है कि प्रत्येक प्रशिक्षु को अपना अवलोकन सूची स्वयं विकसित करना है। अतः, सभी के अवलोकन सूची में कुछ विभिन्नताएं हो सकती हैं।

दूसरे प्रकार के अवलोकन के लिए, प्रशिक्षु को सीधा–सीधा कक्षा में जाना है और यह लिखते जाना है कि कक्षा में वे क्या–क्या अवलोकित कर रहे हैं। इस प्रकार के अवलोकन के लिए कोई प्रारूप नहीं होगा। लेकिन, यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षु में अवलोकन के कुछ सामान्य बिन्दुओं की समझ पहलेवाले अवलोकन सूची के आधार पर अवलोकन करने से विकसित हो गई होगी, जिसका इस्तेमाल अब वे खुले तौर पर अवलोकन करने के दौरान करेंगे। बिना, किसी प्रारूप का अवलोकन तीसरे और चौथे सप्ताह के दौरान किया जाना चाहिए।

कालावधि :

- प्रथम अकादमिक वर्ष के पांचवे, छठे, आठवी और नवे महीने में एक–एक सप्ताह
- प्रति सप्ताह पाँच (05) दिन (सोमवार–शुक्रवार)
- शनिवार व रविवारः अवलोकन का योजना निर्माण, तैयारी व परामर्श सत्र के लिये प्रशिक्षण केन्द्र पर विचार–विमर्श

अवलोकन की अपेक्षाएंः

- प्रति सप्ताह, प्रति दिन अधिकतम तीन कक्षाओं में शिक्षण का अवलोकन
- कक्षा–1 से 5 तक के प्रत्येक कक्षा से न्यूनतम पांच–पांच अवलोकन
- प्राथमिक स्तर के प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय से न्यूनतम एक अवलोकन
- अवलोकन सूची के माध्यम से न्यूनतम पंद्रह और बिना अवलोकन सूची के न्यूनतम दस अवलोकन
- कुल मिलकर न्यूनतम 25 कक्षाओं का अवलोकन
- न्यूनतम दो अवलोकन के विश्लेषण की समीक्षा मेंटर द्वारा

यह बेहतर होगा यदि प्रत्येक प्रशिक्षु अपने कक्षायी अवलोकन के लिए एक अलग कॉपी बनाए जिसमें प्रत्येक अवलोकन के बाद उसका विश्लेषण किया जाए। अतः केवल अवलोकन करना महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उसका उपयोगी विश्लेषण करना भी जरूरी है। अवलोकन और विश्लेषण का कार्य साथ–साथ चलना चाहिए। अर्थात, जैसे ही प्रशिक्षु किसी कक्षा का अवलोकन करके उसके प्रमुख बिन्दुओं को अपने कॉपी में दर्ज करता या करती है। उसके बाद, उन बिन्दुओं का विश्लेषण भी किया जाना अनिवार्य है। अतः यह कतई नहीं होना चाहिए कि अवलोकन का विश्लेषण पच्चीस अवलोकन करने के बाद हो। यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षु प्रत्येक सप्ताह अवलोकन करके तथा उनका विश्लेषण करके अपने प्रशिक्षक सह मेंटर से उसकी चर्चा करेंगे।

2. एक्शन रिसर्च

हर शिक्षक को विद्यालय में शिक्षण के दौरान कई समस्याओं व चुनौतियों का अनुभव होता है। साथ ही उनके मन में शिक्षा से सम्बंधित कई जिज्ञासायें भी जागृत होती हैं। एक कुशल शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शिक्षण समस्याओं, चुनौतियों व जिज्ञासाओं का समाधान वैज्ञानिक विधि (Scientific method) के माध्यम से करें। अतः प्रशिक्षुओं को शिक्षण के साथ–साथ शोध–कार्य करना भी महत्त्वपूर्ण है, ताकि उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सके। इसी उद्देश्य के अंतर्गत, विद्यालय अनुभव कार्यक्रम में एक्शन रिसर्च को भी रखा गया है ताकि प्रशिक्षुओं में विभिन्न विषयों के अंतर्गत एक्शन रिसर्च करने की क्षमता विकसित हो सके।

एक्शन रिसर्च का विषय : एक्शन रिसर्च को कक्षा में किसी विषय (गणित, हिन्दी, अंग्रेजी, पर्यावरण अध्ययन में से किसी एक) की अवधारणा को सीखने–सिखाने से संबंधित समस्याओं के संदर्भ में लिया गया है। एक्शन रिसर्च का विषय आपके कक्षा शिक्षण व कक्षायी गतिविधियों के अवलोकन के विश्लेषण से स्वतः ही निकल जाएगा। आप एक्शन रिसर्च के विषय के लिए बच्चों से विभिन्न विषयों की अवधारणाओं पर बातचीत, उनकी कॉपियों का विश्लेषण आदि कर सकते हैं। यदि बच्चों को किसी विषय के किसी खास अवधारणा को समझने में समस्या आ रही हो तो वह एक्शन रिसर्च का एक विषय होगा। उदाहरण के तौर पर, कई बच्चे ठीक तरह से जोड़ या घटाव नहीं कर पा रहे हैं तो उसके पीछे उनकी समझ में क्या कमी है इसकी पड़ताल करके और उसके आधार पर उन्हें पुनः समझाना व उनकी समस्या को दूर करना एक एक्शन रिसर्च होगा। यहां, किसी भी एक विषय से एक्शन रिसर्च का केवल एक विषय चुनना है, जिसे करके रिपोर्ट बनाना होगा और प्रशिक्षण केन्द्र पर जमा करना होगा। एक्शन रिसर्च को करने के दौरान वे कक्षा शिक्षण भी कर सकते हैं। यह एक एक्शन रिसर्च का अभ्यास प्रशिक्षुओं को इसका कौशल सीखाने के लिए है। इसके बाद द्वितीय वर्ष के विभिन्न विषयों मे आवश्यकतानुसार प्रशिक्षुओं को एक्शन रिसर्च निरन्तर करते रहना होगा।

कालावधि : प्रशिक्षुओं से अपेक्षा है कि वे विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 के शुरू होने के पहले महीने के अंत तक अपने एक्शन रिसर्च के विषय के बारे में प्रशिक्षण केन्द्र पर सूचित करें तथा अगले महीने से उसपर कार्य करना शुरू करें तथा उसे पूरा करके विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 के अंत में प्रशिक्षण केन्द्र पर अपने साधनसेवी सह मेंटर को जमा करें। मेंटर की यह जिम्मेवारी होगी कि वह आवश्यकतानुसार उस साधनसेवी को भी सुझाव देने या मुल्यांकन करने में शामिल करे जिस विषय का एक्शन रिसर्च प्रशिक्षु ने किया हो।

3. विद्यालय उन्नयन योजना

प्रशिक्षुओं का विद्यालय विशेष के संदर्भ में कई अनुभव रहे होंगे। उन अनुभवों में उनके विद्यालय से जुड़े तमाम आंकड़े भी शामिल होंगे। यदि उन आंकड़ों को व्यवस्थित करके विश्लेषण किया जाए तो विद्यालय के विकास में मदद मिल सकती है। अतः इस कार्य कें अंतर्गत, प्रशिक्षु अपने विद्यालय के संदर्भ में आँकड़ों का विश्लेषण करके विद्यालय के लिए एक उन्नयन योजना का निर्माण करेंगें। फिर, अपने द्वारा बनायी गयी योजनानुसार वे उस विद्यालय में कार्य करेंगे।

कालावधि : इसकी प्रक्रिया के लिये प्रशिक्षु विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 के दौरान का समय लेंगें तथा अपने विद्यालय के वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर उसके आधार पर अपने विद्यालय के लिये उन्नयन योजना का निर्माण करेंगे, फिर उस योजना में दिए गए कार्यों को पूरा करने का प्रयास करेंगे। ऐसी व्यवस्था बने कि दूसरे सत्र के पहले महीने में प्रशिक्षुगण अपने विद्यालय की स्थिति का विश्लेषण कर उसके विकास के लिए एक उन्नयन योजना बना लें। फिर आगामी चार–पांच महीने उस योजना के आधार पर कार्य करें और विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 की समाप्ति पर एक समग्र रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

4. विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण

विद्यालय में उत्साही और भयमुक्त माहौल के निर्माण हेतु, शिक्षकगणों और बच्चों के मध्य निरन्तर संवाद होना जरूरी है। अक्सर, शिक्षकगणों और बच्चों के बीच की बातचीत केवल कक्षाकक्ष के सवाल–जवाबों तक ही सीमट कर रह जाती है, जिसके कारण शिक्षकों का बच्चों के साथ वैसा सम्पर्क नहीं बन पाता है जिससे वे अभिप्रेरित हो सकें और अपने चुनौतियों को शिक्षकों से साझा कर सकें।

इस कार्य के अंतर्गत, प्रशिक्षु को अपने विद्यालय के किसी भी कक्षा के बच्चों के एक समूह के साथ सामान्य बाताचीत करनी है, जो किसी विषय के शिक्षण से सम्बंधित न हो। ऐसे संवाद का विषय बच्चों के समूह के मूताबिक और उनके पसन्द का हो। स्कूल के बाहर के किसी प्रसंग, किसी भी तात्कालीन घटना, कल घर पर क्या किया, गांव–शहर में होनेवाले किसी आयोजन, त्योहार, आदि से सम्बंधित किसी भी प्रसंग पर खुली बातचीत की जाए। ध्यान रहे कि यह बातचीत सवाल–जवाब का स्वरूप ना ले ले, जिसमें शिक्षक सवालकर्ता हो जाए और बच्चे जवाब देते रहें। जिस प्रकार बच्चे कोई बात कर रहे हो, ऐसा होना चाहिए कि शिक्षक या शिक्षिका भी उसमें समान रूप से भागेदारी निभाए।

इस तरह, प्रत्येक प्रशिक्षु अपने विद्यालय के बच्चों से न्यूनतम दो चर्चाएं करेंगे और उस चर्चा में बच्चों ने क्या–क्या साझा किया और उसके आधार पर बच्चों के विषय में प्रशिक्षु ने क्या जाना–समझा, इसपर एक रिपोर्ट बनाकर द्वितीय सत्र के अंत में प्रशिक्षण केन्द्र पर अपने निर्धारित साधनसेवी को जमा कराएंगे। विश्लेषण के दौरान, प्रशिक्षु अपनी उस समझ का इस्तेमाल जरूर करें जो उन्होंने डी.एल.एड. कार्यक्रम के आधार विषयपत्रों जैसे–'समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ', 'बचपन और बाल विकास', 'भाषा की समझ और आरम्भिक भाषा विकास', 'विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास' आदि के माध्यम से पाया है।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 के अंतर्गत किए गए प्रदत्त कार्य केवल डी.एल.एड. कार्यक्रम के दौरान औपचारिक तौर पर करने के लिए नहीं हैं। बल्कि मूल उद्देश्य यह है कि ये सभी कार्य प्रशिक्षुओं के विद्यालयी कामकाज के स्वाभाविक हिस्से बन जाएं। अतः अपेक्षा है कि हर प्रशिक्षु अपने विद्यालय में शिक्षण पर्यन्त इनका निरन्तर प्रयोग करते रहेंगे, जिसके पीछे कोई औपचारिक निर्देश नहीं बल्कि अपने शिक्षण के प्रति संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता की अभिप्रेरणा होगी।